लोक-रहस्य

स्व० बा० बंकिमचन्द्र चटर्जी

—: के :—

बंगला "लोक-रहस्य" का

हिन्दी अनुवाद

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेंसी,

२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

ब्रांच—ज्ञानवापी, काशी।

चतुर्थबार] होली सं० १९८९ [मूल्य ॥=)

प्रकाशकः—

बैजनाथ केडिया

प्रोप्राइटर—

हिन्दी पुस्तक एजेंसी

२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता ।

प्रथम बार १५०० ज्येष्ठ संवत् १९७६
दूसरी बार २००० वैसाख सं० १९७८ वि०
तीसरी बार २००० बसंतपञ्चमी सं० १९८० वि०
चौथी बार १५०० होली सं० १९८१ वि०

मुद्रकः—

किशोरी लाल केडिया

'वणिक् प्रेस'

१, सरकार लेन, कलकत्ता ।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

वक्तव्य।

बङ्गभाषामें व्यङ्ग और हास्यरसकी पुस्तकोंमें लोक-रहस्यका स्थान बहुत ऊंचा है। मार्मिकता इस पुस्तकी आन है, खुली बातका इतना असर नहीं होता, जितना भेदभरी बातोंका। इस पुस्तकमें कोई बात बिल्कुल खोलकर नहीं कही गयी है, किन्तु गुप्त रीतिसे ऐसी चोट की गयी है कि पढ़कर मर्मज्ञ पाठकोंके हृदयमें गुदगुदी होने लगती है। इस विषयमें बङ्किम बाबू अपने जमानेमें अपना सानी नहीं रखते थे। प्रकट रूपसे कोई बात कहना आसान है, लेकिन मजाकमें मार्केकी बात कहना और मनमानी रीतिसे घुमा फिराकर कहना सहज साध्य कार्य नहीं है।

हर्षकी बात है कि हिन्दीकी गोद ऐसे सज्जनोंके बिल्कुल सूनी नहीं है। स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट इस कलामें पण्डित थे, स्व० बाबू बालमुकुन्द गुप्त इन बातोंके गुरु थे और वर्त्तमान लेखकोंमें श्री.पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी हिन्दी संसारमें सरस और मार्मिक रचनाके लिये प्रसिद्ध हैं। पण्डित बद्रीनाथ भट्ट और पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी भी समय-समयपर हिन्दीको ऐसी रचना-ओंसे अलंकृत करते रहते हैं। गजपुरीजीने पिछले दिनों प्रतापमें पटवारियोंपर एक ऐसा ही हास्यरसपूर्ण प्रबन्ध लिखा था, जिसे पढ़कर बङ्किमबाबूके अङ्गरेजस्तोत्रका याद आती थी। यदि ये सज्जन बराबर हिन्दीमें इस तरहके लेख लिखते रहें, तो हिन्दीमें भी लोक-रहस्य सरीखी पुस्तकें प्रस्तुत हो सकती हैं।

हम पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदीके बड़े कृतज्ञ हैं, उन्होंने इस अनुवादमें बहुत अधिक सहायता दी है। आशा है आप इसे पढ़ परम पुलकित होंगे।

लोक-रहस्य

अंगरेज स्तोत्र

(महाभारतसे)

हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १

तुम अनेक गुणोंसे विभूषित, सुन्दर कान्तिविशिष्ट और विपुल सम्पदसम्पन्न हो, अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २

तुम हर्त्ता हो शत्रुओंके, तुम कर्त्ता हो आईन कानूनके, तुम विधाता हो नौकरी-चाकरीके, अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। ३

तुम समरमें दिव्यास्त्रधारी, शिकारमें बल्लमधारी, विचारालयमें आध इञ्च मोटा बेतधारी और भोजनके समय कांटा चम्मचधारी हो, इसलिये हे अंगरेज ! मैं तुम्हें दण्डवत् करता हूं। ४

तुम एक रूपसे राजपुरीमें रहकर राज्य करते हो, दूसरे रूपसे हाट बाजारमें व्यापार करते हो, तीसरे रूपसे आसाममें चायकी खेती करते हो; अतएव हे त्रिमूर्ति ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ५

तुम्हारा सत्वगुण तुम्हारे रचे ग्रन्थोंमें प्रकाशित है, रजोगुण तुम्हारे किये युद्धोंमें प्रकट है, तुम्हारा तमोगुण तुम्हारे लिखे भारतीय समाचारपत्रोंमें प्रकाशित है। अतएव हे त्रिगुणात्मक ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ६

तुम विद्यमान हो,इसीलिये तुम सत् हो, तुम्हारे शत्रु रणक्षेत्र-में चित है, तुम उम्मेद्वारोंके आनन्द हो ; अतएव हे सच्चिदानन्द ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । ७

तुम ब्रह्मा हो, क्योंकि प्रजापति हो ; तुम विष्णु हो, क्योंकि लक्ष्मी तुम्हींपर कृपा करती हैं और तुम महादेव हो, क्योंकि तुम्हारी घरवाली गौरी है। अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । ८

तुम इन्द्र हो, तोप तुम्हारा वज्र है,तुम चन्द्र हो, इन्कम-टैक्स तुम्हारा कलंक है; तुम वायु हो, रेलवे तुम्हारी गति है ; तुम वरुण हो, समुद्र तुम्हारा राज्य है। अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । ९

तुम्हीं दिवाकर हो, तुम्हारे आलोकसे हमारा अज्ञानान्धकार दूर होता है; तुम्हीं अग्नि हो, क्योंकि सब कुछ स्वाहा किये जाते हो; तुम्हीं यम हो, विशेषकर अपने मातहतोंके । अतएव मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । १०

तुम वेद हो,मैं ऋक् यजु आदिको नहीं मानता हूं । तुम स्मृति हो, मन्वादि भूल गया हूं । तुम दर्शन हो, न्याय मीमांसादि तो तुम्हारे ही हाथ है, अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । ११

हे श्वेतकान्त ! तुम्हारे अमलधवलद्विरद-रद शुभ्र महाश्मश्रुशोभित मुखमण्डलको देखकर इच्छा होती है कि तुम्हारा स्तव करूं, अतएव हे अंगरेज ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । १२

तुम्हारी हरितकपिशपिङ्गललोहितकृष्णशुभ्रादि नाना वर्ण-

शोभित, अतियत्नरंजित, श्मश्रुमेदमार्जित कुन्तलावलि देखकर अभिलाषा होती है कि तुम्हारा गुण गाऊं। अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १३

कलिकालमें तुम गौराङ्गके अवतार हो, इसमें सन्देह नहीं। हैट (टोप) तुम्हारा मुकुट, पेंट तुम्हारी काछनी और चाबुक तुम्हारी बांसुरी है। अतएव हे गोपीवल्लभ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १४

हे वरद! मुझे वरदान दो। मैं सिरपर समला रखकर तुम्हारे पीछे-पीछे फिरूंगा, मुझे नौकरी दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १५

हे शुभशङ्कर! मेरा भला करो। मैं तुम्हारी खुशामद करूंगा, ठकुरसुहाती करूंगा, जो कहोगे वही करूंगा। मुझे बड़ा आदमी बना दो, मैं तुम्हारी वन्दना करता हूं। १६

हे मानद! मुझे खिताब दो, खिलअत दो, पदवी दो—उपाधि दो—मुझे अपना प्रसाद दो। मैं तुम्हारी वन्दना करता हूं। १७

हे भक्तवत्सल! मैं तुम्हारा उच्छिष्ट खाना चाहता हूं, तुमसे हाथ मिलाकर लोगोंमें महासम्मानित होनेकी मेरी इच्छा है, तुम्हारे हाथकी लिखी दो चार चिट्ठियां अपने संदूकचेमें रखकर औरोंको नीचा दिखाना चाहता हूं। अतएव हे अंगरेज! तुम मुझपर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १८

हे अन्तर्यामी! मैं जो कुछ करता हूं सो तुम्हारे रिझानेके लिये। तुम दाता कहोगे, इसलिये दान करता हूं। तुम परोपकारी कहोगे, इसलिये परोपकार करता हूं। तुम विद्वान कहोगे, इसलिये

पढ़ता हूं। अतएव हे अंगरेज ! तुम मुझपर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १९

मैं तुम्हारे इच्छानुसार अस्पताल बनवाऊंगा, तुम्हारे प्रीत्यर्थ विद्यालय बनवाऊंगा, तुम्हारे आज्ञानुसार चन्दा दूंगा। तुम मुझपर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २०

हे सौम्य ! जो तुम्हारी इच्छा है, वही मैं करूंगा। मैं कोट-पेंट पहनूंगा, ऐनक लगाऊंगा, कांटे चम्मचसे मेजपर खाऊंगा। तुम मुझपर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २१

हे मिष्ठभाषी ! मैं मातृभाषा त्यागकर तुम्हारी भाषा बोलूंगा, बाप-दादोंका धर्म्म छोड़कर तुम्हारा धर्म्म ग्रहण करूंगा। लाला-बाबू न कहलाकर मिस्टर बनूंगा। तुम मुझपर प्रसन्न हो, प्रणाम करता हूं। २२

हे सुन्दर भोजन करनेवाले ! मैं रोटी छोड़कर पावरोटी खाता हूं, निषिद्ध मांससे पेट भरता हूं। मुर्गीका कलेवा करता हूं। अतएव हे अंगरेज ! मुझे चरणोंमें स्थान दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २३

मैं विधवाओंका ब्याह कराऊंगा, जातिभेद उठा दूंगा, क्योंकि तुम मेरी बड़ाई करोगे। अतएव हे अंगरेज ! तुम मुझपर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २४

हे सर्व्वद ! मुझे धन दो, मान दो, यश दो, मेरी सब इच्छाएं पूरी करो। मुझे बड़ी नौकरी दो, राजा बनाओ, रायबहादुर बनाओ, कौंसिलका मेम्बर बनाओ। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २५

यदि यह न दो, तो अपनी गोठ और ज्योनारोंमें मुझे न्योत बुलाओ, बड़ी-बड़ी कमेटियोंका मेम्बर बनाओ, सिनेटका मेम्बर बनाओ, असेसर बनाओ, अनाड़ी मजिस्टर बनाओ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २६

मेरी स्पीच सुनो, मेरा प्रबन्ध पढ़ो, तारीफ करो और वाह वा कहो, फिर मैं सारे हिन्दू-समाजकी निन्दाकी भी परवा न करूंगा। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २७

हे भगवन्! मैं अकिंचन हूं, मैं तुम्हारे द्वारपर खड़ा हूं, भूल न जाना, मैं तुम्हें डाली भेजूंगा। तुम मुझे याद रखना, मैं तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं। २८

बाबू
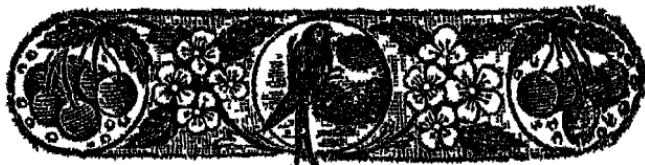
जनमेजय बोले, हे महर्षे ! आपने कहा है कि कलियुगमें बाबू नामक एक प्रकारके मनुष्य पृथिवीपर आविर्भूत होंगे। यह कैसे होंगे और पृथिवीपर जन्मग्रहण कर क्या करेंगे, यह सुननेके लिये मैं उत्सुक हो रहा हूं। आप कृपा कर यह विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

वैशम्पायनने कहा, हे राजन् ! आहारनिद्राकुशली विचित्र-बुद्धिवाले बाबुओंकी कथा कहता हूं, आप श्रवण करें। मैं चश्माधारी, उदार-चरित्र, बहुभाषी, मिष्ठान्नप्रिय बाबुओंका चरित्र वर्णन करता हूं, आप श्रवण करें। हे राजन् ! जो चित्र-विचित्र कपड़े पहने हो, हाथमें बेंत लिये हो, बाल सँवारे हो, और बूट चढ़ाये हो—वही बाबू है। जो बातोंमें हारे नहीं, पराये भाषामें पारदर्शी हो, मातृभाषाका विरोधी हो, वही बाबू है। महाराज ! बहुतसे ऐसे महाबुद्धिमान बाबू उत्पन्न होंगे, जो मातृ-भाषामें बातचीत तक न कर सकेंगे। जिनकी दसों इन्द्रियां स्वाधीन होनेके कारण अपरिशुद्ध और जिनकी रसना परजातिके थूकसे पवित्र है, वही बाबू हैं। जिनके पैर सूखी लकड़ीकी तरह और हाड़-माससे रहित होनेपर भी भागनेमें समर्थ हैं, हाथ दुबले और कमजोर होनेपर भी कलम पकड़ने और तनख्वाह लेनेमें चतुर हैं, चमड़ा मुलायम होनेपर भी सात समुद्र पारकी बनी

वस्तु विशेषकी चोट सहनेमें समर्थ हैं, जिनकी इन्द्रियमात्रकी इस प्रकार प्रशंसा की जा सकती हो, वही बाबू हैं। जो उद्देश्यके बिना धन जमा करें, जमा करनेके लिये पैदा करें, पैदा करनेके लिए पढ़ें और पढ़नेके लिये प्रश्न चोरी करें, वही बाबू हैं।

महाराज! बाबू शब्दके अनेक अर्थ होंगे। कलिकालमें भारतवर्षका राजा होकर जो अंगरेज नामसे प्रसिद्ध होगा, वह 'बाबू' का अर्थ सौदा खरीदनेवाला और लिखनेवाला मुन्शी समझेगा, निर्धन लोग 'बाबू' को अपनेसे धनी समझेंगे। दास 'बाबू' का अर्थ स्वामी करेंगे। इनके सिवा कितने ही मनुष्य केवल बाबूगिरी करनेके लिये ही जन्म ग्रहण करेंगे। मैं केवल उन्हींका गुणगान करता हूं। जो इसका उल्टा अर्थ करेगा, उसे इस महाभारत-श्रवणका कुछ फल न मिलेगा। वह गो-जन्म ग्रहण कर बाबुओंका भक्ष्य बनेगा।

हे नराधिप! बाबू लोग दूसरे अगस्त्यकी तरह समुद्ररूपी मदिराको कांचके गिलासरूपी चुल्लूसे सोख जायँगे। अग्नि इनकी आज्ञामें रहेगी। तम्बाकू और चुरट नामके दो खाण्डवबनोंके सहारे अग्नि रात-दिन इनके मुंहमें लगी रहेगी। जैसे इनके मुंहमें आग जलेगी वैसे पेटमें भी जलेगी और रातके तीसरे पहरतक इनकी गाड़ियोंकी दोनों लालटेनोंमें रहेगी। इनके आलोचित संगीत और काव्योंमें भी अग्निका वास होगा। उस समय इसका नाम मदनाग्नि और हृदयाग्नि होगा। वारविलासिनियोंके भयसे बाबुओंके मुंह सदा आगसे झुलसा करेंगे। यह लोग बाबु

ही भक्षण करेंगे और सभ्यताके विचारसे इस कठिन कार्यका नाम वायुसेवन या 'हवाखाना' रखेंगे। चन्द्रमा इनके घरके भीतर और बाहर नित्य विराजमान रहेगा, कभी-कभी मुंहपर बुरका भी डाल लेगा। कोई रातके पहले भागमें कृष्णपक्षका और पिछले भागमें शुक्लपक्षका चन्द्रमा देखेगा और कोई इसके विपरीत भी करेगा। सूर्य तो कभी इनके दर्शन भी न कर सकेगा। यमराज इन्हें भूल जायगा। केवल अश्विनीकुमारोंकी यह लोग पूजा करेंगे। अश्विनीकुमारोंके मन्दिरका नाम अस्तबल या तबेला होगा।

हे नरश्रेष्ठ! जो काव्यका कलेवा कर जायँगे, संगीतका श्राद्ध कर डालेंगे, जिनकी पण्डिताई बचपनकी पढ़ी हुई पुस्तकोंमें ही बन्द रहेगी और जो अपनेको परम ज्ञानी समझेंगे, वही बाबू होंगे, जो समझकी सहायता लिये बिना ही काव्य पढ़ने और समालोचना करनेमें लगे रहेंगे, जो वेश्याओंकी चिल्लाहटको ही संगीत समझेंगे, जो अपनेको निर्भ्रान्त समझेंगे, वही बाबू होंगे। जो रूपमें कामदेवके कनिष्ठ भ्राता, गुणमें निर्गुण, कर्ममें जड़भरत और बात बनानेमें सरस्वती होंगे, वही बाबू होंगे। जो उत्सव मनानेके लिये शिवरात्रि मनावेंगे, घरवालीके कहनेसे दिवाली करेंगे, माशूकाकी खातिरसे होली करेंगे और मांसके लोभसे दशहरा करेंगे, वही बाबू होंगे। जो विचित्र रथपर चलेंगे, मामूली घरमें सोयेंगे, द्राक्षारसका पान करेंगे और भूने शकरकन्द खायँगे, वही बाबू होंगे। जो महादेव बाबाकी तरह मादकप्रिय, ब्रह्माके

समान प्रजा उत्पादन करनेके इच्छुक और विष्णुके समान लीला करनेमें चतुर होंगे,वही बाबू कहलावेंगे । हे कुरुकुलभूषण, विष्णु-के साथ इन बाबुओंकी बड़ी समानता होगी । विष्णुकी तरह इनके पास लक्ष्मी और सरस्वती दोनों रहेंगी, विष्णुके समान यह भी अनन्तशय्याशायी होंगे । विष्णुके समान इनके भी दस अवतार होंगे जैसे—मुन्शी, मास्टर, दयानन्दी, मुतसद्दी, डाक्टर, वकील, हाकिम, जमींदार, समाचारपत्र-संपादक और निष्कर्मा । विष्णुके समान सब अवतारोंमें [illegible] पराक्रमके साथ यह लोग असुरोंका बध करेंगे। मुन्शी-अवतारमें दफतरीका, मास्टर-अवतारमें छात्रोंका, स्टेशनमास्टर-अवतारमें बिना टिकटके मुसाफिरोंका, दयानन्दी-अवतारमें भोजनभट्ट गुरु-पुरोहितोंका, मुतसद्दी-अवतारमें अंगरेज व्यापारियोंका, डाक्टर-अवतारमें रोगियोंका, वकील अवतारमें मुवक्किलोंका, हाकिम-अवतारमें मुकद्दमा लड़नेवालोंका, जमींदारावतारमें रैयतोंका, सम्पा-दकावतारमें भलेमानसोंका और निष्कर्मावतारमें मक्खियोंका बध होगा।

महाराज ! और सुनिये । जिनका वचन मनमें एक गुना, कहनेमें दस गुना, लिखनेमें सौ गुना, झगड़ेमें हजार गुना हो, वही बाबू होंगे । जिनका बल हाथमें एक गुना, मुंहमें दसगुना, पीठमें सौगुना और कामके समय लोप हो जाय, वही बाबू होंगे । जिन-की बुद्धि लड़कपनके समय पुस्तकोंमें, जवानी आनेपर बोतलमें, बुढ़ापेके समय घरवालीके आंचलमें रहे, वही बाबू होंगे । जिनकी

इष्टदेवता अंगरेज, गुरु आर्य्यसमाजी, वेद, अङ्गरेजी अखबार और तीर्थ "अलफ्रेड थियेटर" होगा, वही बाबू होंगे। जो पादड़ियोंके सामने क्रिस्तान, दयानन्दजीके आगे आर्य्यसमाजी, पिताके आगे सनातनी और भिक्षुक ब्राह्मणोंके सामने नास्तिक बनेंगे, वही बाबू कहलावेंगे। जो अपने घरमें जल पीते, दोस्तोंके घर जाकर शराब पीते, रण्डियोंके घरमें जूतियां खाते और अंग-रेजोंके यहां धक्के खाते हैं, वही बाबू होंगे। जो स्नानके समय तेलसे, खानेके समय अपनी उँगलियोंसे और बातचीतमें मातृ-भाषासे घृणा करें, वही बाबू होंगे। जिनकी सारी कोशिश सिर्फ लिबासके बनानेमें, मुस्तैदी सिर्फ नौकरीकी उम्मीदवारीमें, भक्ति केवल पत्नी या उपपत्नीमें और घृणा सद्ग्रन्थोंपर हो, वही निस्सन्देह बाबू होंगे।

हे नरनाथ! मैंने जिनकी बात कही है, वह मन ही मन यह समझेंगे कि पान खानेसे, तकियोंके सहारे बैठनेसे, खिचड़ी भाषा बोलनेसे और सुलफेपर सुलफा पीनेसे भारतका उद्धार हो जायगा।

जनमेजय बोले, हे मुनिपुङ्गव! बाबुओंकी जय हो, अब दूसरा प्रसंग उठाइये।
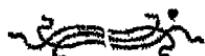
गर्दभजी ! मेरी दी हुई यह नयी घास भोजन कीजिये ।

गोवत्सादिके अगम्य स्थानोंसे यह नवजलसिञ्चित और सुगन्धित तृणोंके अग्रभाग बड़े यत्नसे ले आया हूं, आप अपने सुन्दर मुखमण्डलमें, इन्हें ले मुक्ताविनिन्दित दांतोंसे कतरनेकी कृपा कीजिये ।

हे महाभागे ! आपकी पूजा करनेकी इच्छा हुई है, क्योंकि आप ही सर्वत्र विराजमान हैं । अतएव हे विश्वव्यापी ! मेरी पूजा ग्रहण कीजिये ।

मैं पूज्य व्यक्तिके अनुसन्धानमें देश-विदेश घूम आया, पर सब जगह आपको ही पाया । सब आपकी ही पूजा करते हैं । इसलिये हे लम्बकर्ण ! मेरी भी पूजा ग्रहण कीजिये ।

हे गर्दभ महाराज ! कौन कहता है कि आपके पद छोटे हैं । यह-वहां चारों ओर तो आपके ही बड़े पद दिखाई देते हैं । आप ऊंचे आसनपर बैठकर घासके बड़े-बड़े पूला खाते हैं और खुशामदी आपको घेरकर आपके कानोंकी बड़ाई करते हैं ।

आप ही विचारासनपर बैठकर अपने दोनों लम्बे कान इधर उधर घुमाते हैं । इनकी अथाह कन्दराओंको देखकर वकील नामधारी कवि नाना प्रकारका काव्यरस इनमें डालते हैं । उस समय कानोंके सुखसे मुग्ध हो आप ऊंघने लगते हैं ।

हे वृहन्मुण्ड ! उस समय आप काव्यरससे मुग्ध होकर

दया दिखाते हैं। दयाके वश होकर आप मोहनकी जमा-पूंजी सोहन और सोहनकी धनसम्पत्ति रोहनको दे डालते हैं। आपकी दयाका ठिकाना नहीं है।

हे रजकगृह-भूषण! आप कभी तो दुम दबा कुर्सीपर बैठते हैं और सरस्वतीमण्डपमें बालकोंको गर्द्दभ-लोकप्राप्तिका उपाय बताते हैं। बालकके गर्द्दभ-लोकमें प्रवेश करनेपर "प्रवेशिकामें उत्तीर्ण हुआ"कहकर चिल्लाते है। हम चिल्लाहट सुन डर जाते हैं।

हे विशालोदर! आप ही संस्कृत-पाठशालाओंमें कुशासनपर बैठे माथेमें चन्दन लगा हाथमें पुस्तक लिये शोभायमान हैं, आपकी की हुई शास्त्रोंकी टीका सुनकर हम धन्य-धन्य कहते हैं। अतएव हे महापशु! मेरा दिया हुआ यह कोमल तृणांकुर भक्षण कीजिये।

आपपर ही लक्ष्मीकी कृपा है—आपके न रहनेसे और किसी पर उसकी कृपा नहीं होती। वह आपका कभी त्याग नहीं करती है, पर आप अपने बुद्धिबलसे सदा उसका त्याग करते है। इसीसे लक्ष्मीको चञ्चल होनेका कलङ्क है। अतएव हे सुपुच्छ! घास भक्षण कीजिये।

आप ही गानेवाले हैं। षड्ज, ऋषभ, गान्धार आदि सातों सुर आपके गलेमें हैं बहुत दिनों आपकी नकलकर बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूछें बढ़ाकर बहुत तरहकी खाँसियोंका अभ्यास कर कहीं किसी-को आपकासा सुर प्राप्त होता है। हे भैरवकंठ! घास खाइये।

आप बहुत दिनोंसे पृथ्वीपर विचरण करते हैं। रामायणमें आप ही राजा दशरथ थे, नहीं तो रामचन्द्र बन कैसे जाते?

महाभारतमें पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर आप ही थे, अन्यथा पाण्डव जूआ खेलकर अपनी स्त्रीको क्यों हारते ? कलियुगमें आप ही पृथ्वीराज हुए, नहीं तो मुसलमान भारतमें क्यों आते ?

आप युग-युगमें अनेक रूपोंसे अनेक देशोंको प्रकाशित करते चले आते हैं। इस समय तपस्याके बलसे ब्रह्माके वरसे आप समालोचक होकर प्रकट हुए हैं। हे लोमशावतार ! मेरे लाये हुए कोमल नवीन तृणके अंकुरोंको खाकर मुझे प्रसन्न कीजिये।

हे महापृष्ठ ! कभी आप राज्यका भार ढोते हैं, कभी पुस्तकोंका और कभी धोबियोंके गट्ठरोंका। हे लोमश ! कौनसा बोझ भारी है, मुझे बता दीजिये !

आप कभी घास खाते हैं, कभी लड्डू खाते हैं, कभी ग्रंथकारोंका सिर खाते हैं। हे लोमश ! इनमें कौन मीठा है, बता दीजिये।

हे सुन्दर ! आपका रूप देखकर मैं मोहित हो गया हूं। जब आप पेड़के नीचे खड़े हो वर्षाके जलसे स्नान करते हैं, दोनों कान खड़ेकर मुखचन्द नीचाकर लेते, कभी आंखें बन्द करते, कभी खोलते हैं और आपकी पीठ तथा गर्दनसे वसुधारा चलती है, तब आप बड़े सुन्दर दिखायी देते हैं। हे लोकमनमोहन ! लीजिये, थोड़ी सी घास आरोगिये।

विधाताने आपको तेज नहीं दिया, इसीसे आप शान्त हैं, वेग नहीं दिया, इसीसे सुधीर हैं, बुद्धि नहीं दी, इसीसे आप विद्वान् हैं, और बोझ लादे बिना खाना नहीं मिलता, इसीसे आप परोपकारी हैं। मैं आपका यश गाता हूं, आप घास खाकर मुझे सुखी कीजिये।

बसन्त और विरह

रेवती—सखी! ऋतुराज बसन्त पृथ्वीपर उदित हुए हैं। आ, हम दोनों बसन्तका वर्णन करें, क्योंकि हम दोनों ही वियोगिन हैं। पहलेकी वियोगिनियाँ सदासे बसन्तका वर्णन करती आयी हैं। आ, हम भी करें।

सेवती—वीर! तूने ठीक कहा। हम कन्याविद्यालयमें पढ़-लिखकर भी घरके चक्की चूल्हेमें ही मरती हैं। आ, आज कविताकी आलोचना करें।

रेवती—सखी! तो मैं आरम्भ करती हूं। सखी! ऋतुराज बसन्तका समागम हुआ है। देख, पृथ्वीने कैसा अनिर्वचनीय भाव धारण किया है। देख, चूतलता कैसी नव मुकुलित—

सेवती—और सहजनेकी फलियाँ लटकित—

रेवती—शीतल सुगन्ध मन्द-मन्द वायु बहती—

सेवती—उड़कर धूर देहपर जमती—

रेवती—चल हट। यह क्या बकती है। सुन, भ्रमर फूलोंपर गूञ्ज रहे हैं—

सेवती—मक्खियां मीठेपर भिनभिना रही हैं—

रेवती—वृक्षोंपर कोयल पंचम स्वरमें कूक रही है—

सेवती—गधा अष्टम स्वरमें रेंक रहा है—

रेवती—जा, तेरे साथ बसन्तवर्णन न बनेगा। मैं मालतीको पुकारती हूं। अरी ओ मालती! इधर आ, बसन्त वर्णन करें।

(मालती आयी)

मालती—सखी, मैं तो तुम लोगोंकी तरह बहुत पढ़ी-लिखी नहीं। कुछ गोद-गाद लेती हूं। सब बातें मैं नहीं समझूंगी, मुझे बीच-बीचमें समझाना पड़ेगा।

रेवती—अच्छा ! देख तो वसन्त कैसा अपूर्व समय है ! चूत-लता कैसी नव मुकुलित—

मालती—सखी, आमके पेड़ तो मैंने देखे हैं ; भला आमकी लता कैसी होती है ?

रेवती – मैंने आमकी लता सुनी है, पर कभी आंखोंसे देखी नहीं। देखी हो या न देखी हो इससे मतलब नहीं, पर पुस्तकोंमें चूतलता ही पढ़ी है, चूतवृक्ष नहीं, इसलिये चूतवृक्ष न कह चूत-लता ही कहना होगा।

मालती—तब कहो।

रेवती—चूतलतिका नव मुकुलित होकर—

मालती—सखी, अभी तो तैंने चूतलता कहा था, फिर लतिका कैसे हो गयी ?

रेवती—इसमें कुछ और मधुरता आ गयी। चूतलतिका नव मुकुलित हो चारों ओर सुगन्ध विकीर्ण कर रही है—

मालती—सखी, वसन्तमें तो आमकी मंजरी भर जाती है और अमिया लगती है।

रेवती—इससे क्या ? देख, वर्णन कैसा मधुर हुआ है।

रेवती—मधुके लोभसे उन्मत्त हो मधुकर उनपर गूंजते हैं, यह देखकर हमारे प्राण निकले जाते हैं।

मालती— अहा, तूने बहुत ठीक कहा है। सखी, मधुकर किसे कहते हैं।

रेवती—अरी, तू यह भी नहीं जानती है। मधुकर नाम भ्रमरका है।

मालती—भ्रमर क्या सखी ?

रेवती—भ्रमर कहते हैं भौंरेको।

मालती—तो भौंरे आमकी मंजरी देखकर पागल क्यों हो जाते हैं ? उनका पागलपन कैसा होता है ? वह क्या आंय-बांय सांय बकते हैं ?

रेवती—कौन कहता है कि वह पागल होते हैं ?

मालती—अभी तो तैंने ही कहा है कि "उन्मत्त हो गूंजते हैं।"

रेवती—झखमारा जो तेरे आगे बसन्तका वर्णन किया !

मालती—तो बीर लड़ती क्यों है ? तू ज्यादा पढ़ी है, मैं कम पढ़ी हूं। मुझे समझा दे, बस झंझा मिटा। सब तो तुझसी रसिया नहीं हैं।

रेवती—(साहंकार) अच्छा तो सुन, भ्रमर मधुके लोभसे गूंजते हैं। उनकी गुंजारसे हमारे प्राण जाते हैं।

मालती—भौंरेकी गुंजार होती है कि भनभनाहट।

रेवती—कवि तो गुंजार ही कहते हैं।

मालती—तो गुंजार ही सही, पर उससे हमारे प्राण क्यों जाने लगे ? भौंरेके काटनेसे तो प्राण जाते सुना भी है, पर अब क्या भौंरेकी भनभनाहटसे भी प्राण देने पड़ेंगे ?

रेवती—भौंरेकी गुंजारसे बराबर विरहिनी मरती आयी है। तू कहांसे रंगाके आयी है जो नहीं मरेगी।

मालती—अच्छा बहन! शास्त्रोंमें अगर लिखा है तो मरूंगी। पर पूछना यह है कि केवल भौंरेकी भनभनाहटसे ही मौत आवेगी या मधुमक्खियों-गुबरीलोंकी भनभनसे भी?

रेवती—कवि तो भ्रमरकी गुंजारसे ही मरनेको कहते हैं।

सेवती—कवि बड़ा अन्याय करते हैं। गुबरीलोंने क्या अपराध किया है?

रेवती—तुझे मरना हो तो मर, पर अभी तो सुन ले।

सेवती—कह, क्या कहती है?

रेवती—कोयल वृक्षोंपर बैठकर पञ्चमस्वरसे गान करती है।

मालती—पञ्चम स्वर क्या है बहन?

रेवती—कोयलकी कूककी तरह होता है।

मालती—कोयलकी कूक कैसी होती है?

रेवती—पञ्चम स्वरकी तरह।

मालती—समझ गयी, आगे कह।

रेवती—कोयल वृक्षोंपर बैठ पञ्चम स्वरसे गान करती है, उससे विरहिनियोंकी देहमें आग लग जाती है।

सेवती—और मुर्गेके पञ्चम स्वरसे देहमें क्या होता है?

रेवती—अरी चल। मुर्गेका और पञ्चम स्वर!

सेवती—मेरी देह तो उसीसे जल जाती है। मुर्गेके बोलते ही मालूम होता है कि—

२

रेवती—इसके पीछे मलय समीर। शीतल सुगन्ध मन्द मलय मारुतसे वियोगिनियोंके रोएं खड़े हो जाते हैं।

मालती—जाड़ेसे ?

रेवती—नहीं, विरहसे। मलय मारुत औरोंके लिये शीतल है, पर हमारे लिये अग्निके समान है।

सेवती—बहन, यह तो सबके लिये है। इस चैतकी दुपहरकी हवा किसे आगकी तरह नहीं मालूम होती है ?

रेवती—अरी, मैं उस हवाकी बात नहीं कहती हूं।

मालती—शायद तू उत्तरकी हवाकी बात कह रही थी। उत्तरकी हवा जैसी ठंढी होती है, मलयाचलकी वैसी नहीं होती।

रेवती—वसंतानिलके लगतेही शरीर रोमांचित हो जाता है।

सेवती—नंगे बदन रहनेसे उत्तरकी हवासे भी रोएं खड़े हो जाते हैं।

रेवती—चल हट! कहीं बसन्त ऋतुमें भी उत्तरकी हवा चलती है, जो मैं उसकी बात बसन्तवर्णनमें लाऊंगी।

सेवती—अभी तो उत्तरकी हवा चल रही है। आजकल आंधी उत्तरसे ही आती है। मेरी समझमें बसन्तवर्णनमें उत्तर-की हवाकी चर्चा जरूर होनी चाहिये।" चलो, 'हम सरस्वतीमें लिख भेजें कि अब कवि बसन्तवर्णनमें मलयवायुका नाम न लेकर उत्तरकी आंधीका वर्णन करें।

रेवती—ऐसा होगा तो वियोगी बिचारे क्या करेंगे ? वह फिर क्या कहकर रोएंगे ?

मालती—तो बहन, रहने दे अभी अपना बसन्त वर्णन। ओह! मरी—मरी—(गिरती और आंखें बन्द करती है)

रेवती—क्यों बहन,क्या हुआ? एकाएक ऐसा हाल क्यों हुआ?

मालती—(आंखें बन्दकर) अरी सुनती नहीं? थूहरके पेड़पर कोयल कूक रही है।

रेवती—सखी, धीरज धर धीरज। तेरे प्राणनाथ शीघ्र ही आवेंगे। बहन, मैं भी यही दुःख भोग रही हूं। प्राणनाथके दर्शन बिना जीवित रहना कठिन हो रहा है। (आंखें मीचकर) टोले-मुहल्लेके कूएं अगर सूख न जाते तो मैं कबकी डूब मरी होती। हे हृदयवल्लभ, जीवतेश्वर! हे रमनीजनमनोमोहन! हे निशाशेपोन्मेषोन्मुख कमलकोरकोपमोत्तेजित हृदयसूर्य्य! हे अतलजलदलतलन्यस्तरत्न राजिवन्महामूल्य पुरुषरत्न! हे कामिनी कंठविलम्बित रत्नहाराधिक! प्राणाधिक! अब प्राण नहीं बचेंगे! मैं अबला, सरला, चंचला, विकला, दीना, हीना, क्षीणा, पीना, नवीना, श्रीहीना हूं, अब प्राण नहीं बचेंगे। और कबतक तुम्हारी राह देखूं! सरोवरमें सरोजिनी जैसे भानुको चाहती है, कुमुदिनी कुमुद-बान्धवको जैसे चाहती है, चातक स्वातीकी बून्दको जैसे चाहता है, मैं भी तुम्हें वैसे ही चाहती हूं।

मालती—(रोकर) खोयी हुई गायकी आसमें चरवाहा जैसे खड़ा रहता है, हलवाईको दूकानसे नौकरके लौटनेकी आस-में लड़का जैसे खड़ा रहता है, घसियारेकी आसमें घोड़ा जैसे खड़ा रहता है, हे प्यारे! वैसे ही मैं तुम्हारी आसमें खड़ी रहती

हूं। दही बिलोनेके समय दाईके पीछे-पीछे जैसे बिल्ली भागती है, वैसे ही आपके पीछे मेरा मन भागता है। जूठन-कूठन फेंकनेवालेके पीछे-पीछे जैसे भूखा कुत्ता दौड़ता है, वैसे ही तुम्हारे पीछे मेरा बेकहा मन दौड़ता है। बड़े-बड़े बैल जैसे कोल्हूमें घूमा करते हैं, वैसे ही आसा-भरोसा नामके मेरे बैल तुम्हारे प्रेमरूप कोल्हूमें फिर रहे हैं। लोहेकी कढ़ाईमें गर्म तेल बैंगनको जिस तरह भूनता है, उस तरह विरहकी कढ़ाईमें बसन्तरूपी तेल मेरे हृदयरूप बैंगनको सदा भूनता है। इस बसन्तऋतुमें जैसे गर्मीसे सहजनेकी फलियां फटती हैं, तुम्हारे विरहमें वैसे ही मेरी हृदय-फली फटती है। एक हलमें दो बैल जोतकर किसान जैसे खेतको जोत डालते हैं, वैसे ही प्रेमके हलमें विरह और सौतकी भक्तिरूपी दो बैल जोतकर मेरे स्वामी किसान मेरे कलेजेरूपी खेतको जोत रहे हैं। और कहांतक कहूं? विरहकी जलनसे मेरी दालमें नोन नहीं, पानमें चूना नहीं, कढ़ीमें मिर्च नहीं, दूधमें चीनी नहीं। बहन, जिस दिन विरहकी आग भड़क उठती है, उस दिन मैं तीन बारसे ज्यादा नहीं खा सकती, मेरा दूधका कटोरा योंही रह जाता है। (आंसू पोछकर) बहन! अब अपना बसन्तवर्णन पूरा करो। दुःखकी बातोंका अब काम नहीं है।

रेवती—मेरा बसन्तवर्णन पूरा हो चुका है। भ्रमर, कोकिल मलय-समीर और विरह, इन चारोंकी बात तो कह चुकी, अब बाकी ही क्या है?

सेवती—चुल्लूभर पानी।

सोनेका पासा

कैलास-शिखरपर फूले हुए देवदारु-वृक्षके नीचे बाघाम्बर बिछाये शिवजी पार्वतीजीके साथ चौपड़ खेल रहे थे। दांवपर सोनेका एक पासा था। भोला बाबामें यही बड़ा दोष है कि वह कभी बाजी नहीं जीतते। अगर जीत ही सकते तो समुद्र-मन्थनके समय विष उनके हिस्सेमें क्यों आता? पार्वती माता-की तो सदा ही जीत है। इसीसे पृथ्वीपर उनकी तीन दिन पूजा होती है। खेलना चाहे अच्छा न जानती हों, पर रोनेमें वह बड़ी होशियार हैं; क्योंकि वही आद्या शक्ति हैं। अगर महादेव-बाबाका दांव आ गया तो रोकर कुहराम मचा देती हैं। पर पांच दो सात पड़ते हैं तो पौबारह कहती और भोलानाथको उस तिरछी चितवनसे देखती हैं, जिससे सृष्टिकी स्थिति प्रलय होती है। इसका फल यह होता है कि बमभोला अपना दांव देखकर भी नहीं देखते। सारांश यह कि महादेवजीकी हार हुई और यही सदाकी रीति भी है।

भङ्गड़नाथने हारकर सोनेका पासा पार्वतीके हवाले किया। उन्होंने उसे पृथ्वीपर फेंक दिया। वह जङ्गलमें आकर गिरा। भवानीपति भौंहे चढ़ाकर बोले—"मेरे पासेको तुमने क्यों फेंक दिया?" गौरीने कहा—"नाथ, आपके पासेमें अवश्य ही कोई अपूर्व शक्ति होगी, जिससे जगका भला होगा। मनुष्योंके हितके लिये मैंने उसे नीचे फेंका है।" शिवजीने कहा—"प्रिये! मैं, ब्रह्मा और विष्णु जिन नियमोंको बनाकर सृजन, पालन और संहार

करते हैं, उनके तोड़नेसे कदापि मंगल न होगा। जो कुछ शुभाशुभ होगा, वह नियमावलीके अनुसार ही होगा। सोनेके पासेकी आवश्यकता नहीं है। यदि इसमें कुछ शुभ गुण भी हो तो नियम भंग हो जानेसे लोगोंका अनिष्ट ही होगा। ख़ैर, तुम्हारे अनुरोधसे उसे एक विशेष गुणसे युक्त किये देता हूं। बैठी-बैठी उसकी करामात देखो।"

कालीकान्त बाबु बड़े आदमी ह। उम्र ३५ वर्ष की है, देखनेमें सुन्दर हैं और अभी उस दिन उनका दूसरा ब्याह हुआ है। आपकी स्त्रीका नाम कामसुन्दरी, अवस्था १८ सालकी है और वह अभी अपने मायके है। कालीकान्त बाबू स्त्रीसे मिलने ससुराल जा रहे हैं। आपके ससुर भी बड़े धनी हैं और गंगा-किनारे एक गांवमें रहते हैं। कालीकान्त घाटपर नाव छोड़ पैदल चलने लगे। संगमें रामा नौकर था। वह सिरपर पोर्टमेण्टो लिये था। जाते-जाते कालीकान्त बाबूको सोनेका एक पासा सड़कपर पड़ा दिखायी दिया। आश्चर्यमें आकर उन्होंने उसे उठा लिया। उलट-पुलटकर देखा तो ठीक सोनेका पाया। प्रसन्न होकर नौकरसे बोले—यह सोनेका है। किसीका खो गया है। अगर कोई खोज करे तो दे देना, नहीं तो घर ले चलूंगा। ले रख ले।"

रामाने पोर्टमेण्टो रख पासा अंगोछेमें बांध लिया, पर फिर पोर्टमैन्टो सिरपर नहीं उठाया। कालीकान्त बाबूने स्वयं उसे माथेपर रख लिया। रामा आगे चला और बाबू पीछे-पीछे। रामा बोला—"अरे ओ रामा!"

बाबूने कहा—"जी।" रामा बोला—"तू बड़ा बेअदब है ससुराल पहुंचकर फिर बेअदबी मत कर बैठना। वह लोग बड़े आदमी हैं।" बाबूने कहा-"जी नहीं,भला ऐसा कभी हो सकता है! आप ठहरे मालिक, आपके सामने क्या मैं बेअदबी कर सकता हूं?

कैलासपर गौरीने पूछा—"नाथ, मेरी समझमें कुछ न आया। आपके सोनेके पासेका यह क्या गुण है?"

महादेव बोले—"पासेका गुण चित्तविनिमय अर्थात् मन बदलजाना है। मैं यदि नन्दीके हाथमें यह पासा दे दूं तो वह अपनेको महादेव और मुझे नन्दी समझने लगेगा। मैं अपनेको नन्दी और नन्दीको शिव समझूंगा। रामा अपनेको कालीकान्त और कालीकान्तको रामा समझ रहा है। कालीकान्त भी अपनेको रामा नौकर और रामाको कालीकान्त समझ रहा है।"

कालीकान्त बाबू जिस समय ससुराल पहुंचे,उस समय उनके ससुर घरके भीतर थे। यहां दरवाजेपर बड़ा हो-हल्ला मचा। रामदीन पांडे दरवान कहता है, "खानसामाजी! वहां मत बैठो, यहां मेरे पास आकर बैठो।" इतना सुनते ही रामाकी आंखें लाल हो गयीं। वह बिगड़कर बोला—"अबे जा, तू अपना काम कर।"

दरवानने कालीकान्तके सिरसे पोर्टमैण्टो उतार लिया। कालीकान्त बोले—"दरवानजी, बाबूसे इस तरह मत बोलो, नहीं तो वह चले जायंगे।"

दरवान कालीकान्तको तो पहचानता था, पर रामाको नहीं। कालीकान्तकी बात सुनकर दरवानने सोचा कि जब जमाई बाबू

ही इसे बाबू कहते हैं तो यह जरूर कोई बड़ा आदमी है, भेष बदलकर आया है। यह सोचकर रामासे उसने कहा—"बाबू, कसूर माफ कीजिये।" रामा बोला—"खैर, तमाकू ला।"

ऊधो बड़ा पुराना नौकर है। वह हुक्का भरकर ले आया। रामा तकियेके सहारे बैठकर गुड़गुड़ाने लगा। कालीकान्त बेचारे नौकरोंकी कोठरीमें जा चिलम पीने लगे। ऊधो अचरज मानकर बोला,—"आप यहां क्या कर रहे हैं!" कालीकान्त बोले, "उनके सामने मैं चिलम नहीं पी सकता।" ऊधो भीतर जाकर मालिकसे बोला—"जमाई बाबूके साथ रूप बदलकर कोई बड़े आदमी आये हैं। जमाई बाबू उनके सामने तमाकूतक नहीं पीते।"

नीलरतन बाबू शीघ्र बाहर आये। कालीकान्त दूर हीसे साष्टांग प्रणामकर अलग हट गये। रामा आकर नीलरतन बाबूसे गले मिला। नीलरतनने मनमें कहा, साथका आदमी साफ-सुथरा तो है, पर आज दामादका ऐसा हाल क्यों है?

नीलरतन बाबू रामाकी आवभगत करनेको बैठ गये, पर उसकी बातचीत उनकी समझमें कुछ न आयी। इधर भीतरसे कालीकान्तको कलेवेके लिये दाई बुलाने आयी। कालीकान्त बोले—"अरे राम! क्या बाबूके सामने मैं कलेवा कर सकता हूं? पहले उन्हें कराओ, पीछे मैं कर लूंगा। माजी, मैं तो आप ही लोगोंका खाता हूं।"

"माजी" कहते सुनकर दाईने मनमें कहा, "दामादने मुझे सास समझकर 'माजी' कहा है। कहेंगे क्यों नहीं, मैं क्या नीच

जातिकी मालूम होती हूं ? वह देश-विदेश घूम चुके हैं, उन्हें आदमीकी परख है। खाली इसी घरवालोंको आदमीकी पहचान नहीं है।" दाई कालीकान्तसे बड़ी खुश हुई और भीतर जाकर बोली—"जमाई बाबूने बहुत ठीक सोचा है। संगके आदमीके खाये बिना भला वह कैसे खा सकते हैं। पहले उनके साथीको खिलाओ, तब वह खायंगे।"

घरकी मालकिनने सोचा कि साथी तो ऊपरी आदमी है। उसे भीतर नहीं बुला सकती और दामादको भीतर खिलाना, चाहिये। मालकिनने ऐसा ही प्रबन्ध किया। रामा बाहर अपने खानेका बन्दोबस्त देखकर बिगड़ा और बोला—"यह कैसा शिष्टाचार है ?" इधर दाई कालीकान्तको बुलाकर भीतर ले गयी तो यह आंगनमें ही खड़ा हो गया और बोला—"मुझे घरके भीतर क्यों बुलाया ? मुझे यहीं चना-चबेना दे दो, मैं खाकर पानी पी लूंगा।" यह सुनकर सालियोंने कहा, "जीजाजी तो अबके बड़ा मजाक सीखकर आये हैं।"

कालीकान्तने गिड़गिड़ाकर कहा—"मुझसे आप क्यों दिल्लगी करती हैं ? मैं क्या आपके योग्य हूं ?" एक बुढ़िया साली बोल उठी—"मेरे योग्य क्यों होने लगे। जिसके योग्य हो उसीके पास चलो।" इतना कह कालीकान्तको खींचकर सब भीतर ले गयीं।

वहां कालीकान्तको भार्या कामसुन्दरी खड़ी थी। काली-कान्तने उसे मालकिन समझ हाथ जोड़कर प्रणाम किया। कामसुन्दरी हंसकर बोली—"यह कैसी दिल्लगी ! अबकी बहू

नखरा सीख आये हो?" कालीकान्तने गिड़गिड़ाकर कहा—"मेरे साथ ऐसी बात क्यों? मैं तो गुलाम हूं, आप मालकिन हैं।"

कामसुन्दरीने कहा—"तुम गुलाम मैं मालकिन, यह नयी बात नहीं है। जबतक जवानी है तबतक तो ऐसा ही रहेगा। अभी कलेवा करो।" कालीकान्तने सोचा—"अरे राम, इसका लक्षण तो बुरा है! हमारे बाबू तो बेढब औरतके फन्देमें फँस गये, मेरा यहांसे चल देना ही ठीक है।"

यह सोचकर फिर कालीकान्त भागना ही चाहते थे कि कामसुन्दरीने आकर उनका दामन पकड़ लिया और कहा—"अरे मेरे प्यारे, मेरे सरबस; कहां भागे जाते हो!" यह कह उन्हें पीछेकी तरफ खैंचकर ले जाने लगी।

कालीकान्त हाथ जोड़ और हाहा खाकर कहने लगे—"दुहाई बहूजी की। मुझे छोड़ दो, मेरा सुभाव तुम नहीं जानती हो। मैं वैसा आदमी नहीं हूं।" कामसुन्दरीने हँसकर कहा—"तुम जैसे आदमी हो, मैं जानती हूं। खैर! अभी कलेवा तो करो।"

कालीकान्त—"अगर किसीने मेरी बाबत तुमसे कुछ कह दिया हो तो उसने तुमको धोखा दिया है। हाथ जोड़ता हूं छोड़ दो, तुम मेरी मालकिन हो।"

कामसुन्दरी जरा दिल्लगीपसन्द औरत थी। उसने इसे भी दिल्लगी समझकर कहा—"प्यारे, तुम कितनी हँसी सीखकर आये हो, यह मैं पीछे समझ लूंगी।" यह कह वह कालीकान्त-को दोनों हाथोंसे पकड़ पीढ़ेपर बिठाने लगी।

हाथ पकड़ते ही कालीकान्तने समझा कि अब चौपट हुआ। बस, उसने चिल्लाना शुरू किया "अरे दौड़ो, मार डाला, मार डाला, बचाओ बचाओ।" चिल्लाना सुनकर घरके सब लोग घबराकर दौड़ आये। मा-बहनोंको देखकर कामसुन्दरीने कालीकान्तको छोड़ दिया। वह मौका पाते ही सिरपर पैर रखकर भागे। मालकिनने पूछा—"क्यों री, वह भागे क्यों? क्या तैंने मारा था?"

दुःखी होकर कामसुन्दरी बोली—"मारूंगी क्यों? मेरा नसीब ही फूटा है। किसीने जादू कर दिया है—हाय, मेरा सत्यानाश हो गया।" आदि कहकर वह रोने-धोने लगी।

सबने कहा—"तैंने जरूर मारा है, नहीं तो वह इतने दुःखी क्यों होते?" सबने ही कामसुन्दरीको डाइन-चुड़ैल कहकर धिक्कारा और फटकारा। लाचार वह रोती-कलपती द्वार बन्द-कर घरमें जा बैठी।

इधर कालीकान्तने बाहर आकर देखा कि खूब मार-पीट हो रही है। नीलरतन बाबू और उनके नौकर चाकर रामाको बेतरह पीट रहे हैं। लात, जूता, लाठी, थप्पड़ोंसे उसकी गोधनलीला हो रही है।

रामा कहता जाता है—"छोड़ दो, दमाद्पर ऐसी मार कहीं नहीं सुनी। मेरा क्या बिगड़ेगा, तुम्हारी ही बेटी रांड होगी।" पास खड़ी हुई सुन्दरी दाई हँस रही है। वह बराबर कालीकान्तके घर आती-जाती थी, इससे रामाको पहचानती

थी। उसीने भण्डा फोड़ा था। कालीकान्त यह लीला देख आंगनमें टहलते हुए कहने लगे—"यह क्या गजब! बाबूको सभोंने मार डाला।" यह सुन नीलरतन बाबू और भी बिगड़े और रामासे बोले—"बदमाश! तैंने ही कुछ खिलाकर दामादको पागल कर दिया है। साले, तुझे जीता न छोड़ूंगा।" इतना कहते ही रामापर मूसलाधार जूतियां पड़ने लगीं। इस खेंचा-तानीमें रामाकी चादरसे सोनेका पासा गिर पड़ा। सुन्दरीने उसे उठाकर नीलरतनके हाथमें दे दिया और कहा—"अरे! यह चोर है, कहींसे पासा चुरा लाया? नीलरतनने "देखूं क्या है" कहकर हाथमें ले लिया। बस फिर क्या था, उन्होंने रामाको छोड़ धोती खोल घूंघट काढ़ लिया, सुन्दरीने घूंघट खोल लांग मार ली और फिर रामाको ठोकने लगी।

ऊधोने सुन्दरीसे कहा—"अरी, तू औरत हो इस बीचमें क्यों आ कूदी?"

सुन्दरी बोली—"तू औरत किसे कहता है?"

ऊधो बोला—"तुझे और किसको?"

"मुझसे ठट्ठा करता है" यह कह सुन्दरीने ऊधोपर जूतियां फटकारीं। ऊधो औरतपर हाथ छोड़ना उचित न जान आग-बबूला हो नीलरतनसे बोला—"देखिये मालिक, इस औरतकी बदमाशी, मुझे जूतियां मारती है। इसपर नीलरतन जरा मुस्कुराया और घूंघट काढ़कर बोले—"मारा तो क्या हुआ? मालिक है,

जो चाहें कर सकते हैं। यह सुन, ऊधोका गुस्सा और भी बढ़ गया। बोला—"यह कैसी मालकिन! जैसा मैं नौकर वैसी वह! मैं आपका नौकर हूं—उसका नहीं। जाइये, ऐसी नौकरी नहीं करता।" नीलरतनने फिर जरा हँसकर कहा—"चल दूर हो, बुढ़ापेमें ठट्ठा करने चला है। मेरा नौकर तू क्यों होने चला?"

ऊधोकी अक्ल गुम हो गयी। उसने सोचा कि आज यह क्या मामला है, सबके सब पागल हो रहे हैं। वह रामाको छोड़ अलग जा खड़ा हुआ।

इतनेमें गाय चरानेवाला गोवर्द्धन घोष वहीं आ पहुंचा। यह सुन्दरीका खसम था। वह सुन्दरीकी हालत देख अचम्भेमें आ गया। सुन्दरी उसे देख उससे मस न हुई, पर नीलरतन घूंघट काढ़ एक ओर खड़े हो गये और धीरे-धीरे बोले—"उसके भीतर मत जाइये।" गोवर्द्धन सुन्दरीका रंग ढंग देखकर बहुत नाराज हो गया था। उसने इनकी बात नहीं सुनी। "हराम-जादी लुच्ची, तुझे जरा लाज-शरम नहीं है।" यह कह गोवर्द्धन आगे बढ़ना ही चाहता था कि सुन्दरी बोली—"गोवर्द्धन, तू भी पागल हो गया क्या? जा, गायको सानी दे।" इतना सुनते ही गोवर्द्धन सुन्दरीका झोंटा पकड़ पीटने लगा। यह देख नील-रतन बाबू बोले—"अरे डाढ़ीजार, मालिककी जान क्यों लेता है!" इधर सुन्दरी भी बिगड़कर गोवर्द्धनपर हाथ साफ करने लगी। उस समय बड़ी हलचल मच गयी। गुल-गपाड़ा सुनकर अड़ोस-पड़ोसके राम, श्याम, गोविन्द आ इकट्ठे हुए। रामने

सोनेका पासा पड़ा देखकर उठा लिया और श्यामको देखकर कहा—देखो, यह क्या है ?

कैलासपर पार्वतीजीने कहा—"नाथ, अब आप अपने पासेको रोकिये। देखिये, गोविन्द बूढ़े रामके घरमें घुसकर उसकी बूढ़ी स्त्रीको अपनी स्त्री कह रहा है। इसपर रामकी दासी उसे झाड़ू मार रही है। इधर बूढ़ा राम अपनेको गोविन्द समझ उसकी जवान स्त्रीसे छेड़-छाड़कर गले लगा रहा है। अगर यह पासा पृथ्वीपर रहेगा तो घर-घरमें उपद्रव खड़ा हो जायगा। इसलिये इसे अब रोकिये।

महादेवजी बोले—हे शैलसुते! इसमें मेरे पासेका क्या दोष है? यह लीला पृथ्वीपर क्या नई हुई है? तुम क्या रोज नहीं देखती हो कि बूढ़े जवान बनते और जवान बूढ़े बनते हैं, मालिक नौकरकी तरह काम करते और नौकर मालिककी शानमें शान मिलाते हैं? तुमने क्या नहीं देखा है कि मर्द औरत और औरत मर्दका स्थान लेती जाती हैं। यह सब तो वहां नित्य होता है, परन्तु कोई देखता नहीं। मैंने एक बार सबको दिखला दिया, अब पासेको रोकता हूं। मेरी इच्छासे अब सब होशमें आ जायंगे और किसीको यह घटना याद न रहेगी। पर मेरे वरसे "पंचदर्शन"* यह कथा लोक हितार्थ संसारमें प्रचारित करेगा।

---

* बंगला मासिकपत्र जिसमें पहले छपा था।

बड़पुच्छा बाघाचारज

सुन्दरवनमें एक बार बाघोंकी महासभा हुई। घोर वनके भीतर लम्बी-चौड़ी जगहमें बहुतसे ख़ूंखार बाघ दांतोंकी दमकसे जङ्गलको जगमगाते हुए दुमके सहारे बैठ गये। सबने एक राय होकर बड़पेटा नामके अति बूढ़े बाघको सभापति बनाया। बड़-पेटा महाराजने लांगूलासन ग्रहण करके सभाका कार्य आरम्भ किया। उन्होंने सभासदोंको सम्बोधनकर कहा:—

"आज हमारे लिये कैसा शुभ दिन है। आज हम जितने वनवासी मांसाभिलाषी व्याघ्रकुलतिलक हैं, सब परस्पर कल्याण करनेके लिये इस वनमें एकत्र हुए हैं। अहा! निन्दक और दुष्ट-स्वभावके और-और जानवर कहते-फिरते हैं कि बाघ बड़े असा-माजिक होते हैं, जङ्गलमें अकेले रहना पसन्द करते हैं और इनमें एकता नहीं है, पर आज सब सुसभ्य बाघमण्डली यह बातें झूठी साबित करनेके लिये यहां उपस्थित है। इस समय सभ्यताकी दिन-दिन जैसी वृद्धि हो रही है, इससे पूरी आशा व्याघ्र शीघ्र ही सभ्योंके सिरताज हो जायंगे। अभी विधातासे यही चाहता हूं कि आप लोग प्रति दिन इसी प्रकार आति-हिते-षिता प्रकाश करते हुए परम सुखसे नाना प्रकारके पशुओंको मारते रहें।"

(सभामें दुमोंकी फटाफट)

"भाइयो, हम जिस कामके लिये यहां इकट्ठे हुए हैं, अब वह

संक्षेपसे बताता हूं। आप सब लोग जानते ही हैं कि सुन्दरवनके व्याघ्र-समाजमें विद्याकी चर्चा धीरे-धीरे लुप्त होती जाती है। हमलोगोंकी विकट अभिलाषा है कि हम सब विद्वान् हों, क्योंकि आजकल सब ही विद्वान् हो रहे हैं। विद्याकी चर्चाके लिये ही यह व्याघ्रसमाज स्थापित हुआ है। अब मेरा कहना यही है कि आप लोग इसका अनुमोदन करें।"

सभापतिकी वक्तृता समाप्त होनेपर सभासदोंने तर्जन-गर्जन-कर इस प्रस्तावका अनुमोदन किया। पीछे यथारीति कई प्रस्ताव उपस्थित किये गये और अनुमोदित होकर स्वीकृत हुए। प्रस्तावोंपर बड़ी-बड़ी वक्तृताएं हुईं। यह व्याकरण-शुद्ध और अलंकार-विशिष्ट जरूर थीं, पर शब्दोंकी छटा बड़ी भयंकर थी। वक्तृताओंकी चोटसे सारा सुन्दरवन कांप उठा।

इसके बाद सभाके और-और काम हुए। सभापतिने फर्माया, "आप लोग जानते हैं कि इस सुन्दरवनमें बड़पुंच्छा नामके एक बड़ विद्वान् बाघ रहते हैं। उन्होंने आज रातको हमारे अनुरोधसे मनुष्य-चरित्रके संबंधमें एक प्रबंध पाठ करना स्वीकार किया है।"

मनुष्यका नाम सुनते ही कुछ नवीन सभासदोंको बेतरह भूख लग आयी थी, पर पब्लिकडिनरकी (गोठकी) सूचना न पा बेचारे मन मारकर रह गये। बड़पुंच्छा आचार्यज सभापति महाशयकी आज्ञा पा दहाड़ते हुए उठ खड़े हुए। आपने ऐसे स्वरमें प्रबन्ध-पाठ करना प्रारम्भ किया कि जिसे सुन पथिकोंके प्राण सूख जायं।

आपका प्रबन्ध यों आरम्भ होता है—"सभापति महाशय, बाघनियो और भले बाघो ! मनुष्य एक तरहका दोपाया जानवर है। उनके पर नहीं होते इसलिये वह पक्षी नहीं कहे जा सकते, बल्कि चौपायोंसे वह मिलते-जुलते हैं। चौपायोंके जो-जो अङ्ग और हड्डियां हैं, मनुष्योंके भी वैसे ही हैं। इसलिये मनुष्योंको एक तरहका चौपाया कहा जा सकता है। अन्तर इतना ही है कि चौपायोंकी बनावट जैसी है, मनुष्योंकी वैसी नहीं है। केवल इसी अन्तरके कारण मनुष्योंको दोपाया समझ उनसे घृणा करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है।

चौपायोंमें बन्दरोंसे मनुष्य बहुत मिलते-जुलते हैं। विद्वानों-का कहना है कि समय पाकर पशुओंके अङ्गोंमें उत्कर्षता आ जाती है। एक तरहके अङ्गके पशु धीरे-धीरे दूसरे सुन्दर पशुओंके रूपको प्राप्त करते हैं। हमें आशा है कि मनुष्य पशुके भी समय पाकर दुम निकलेगी और फिर वह धीरे-धीरे बंदर हो जायगा।

यह तो आप सब लोग जानते ही हैं कि मनुष्य पशु अत्यन्त स्वादिष्ट और भक्षणके योग्य पदार्थ है। (यह सुनकर सभ्योंने अपना मुंह चाटा) मनुष्य सहज ही मरते हैं। हरिणकी तरह वह छलांगें नहीं मार सकते, न भैंसेकी तरह बलवान ही हैं और न उनके पास सींगोंका हथियार ही है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि परमात्माने यह संसार बाघोंके सुखके लिये ही बनाया है। इसीसे व्याघ्रोंके उपादेय भोज्य पशुको भागने या आत्मरक्षा करनेकी सामर्थ्य तक न दी। वास्तवमें मनुष्यको इतना

कमजोर देखकर आश्चर्य होता है। न जाने भगवानने इन्हें क्यों बनाया। न इनके दांत हैं और न सींग। इनकी चाल भी बड़ी धीमी है। स्वभाव बड़ा कोमल है। बाघोंके पेट भरनेके सिवा इनके जीवनका और कुछ उद्देश्य नहीं मालूम होता है।

इन कारणोंसे, विशेषकर मनुष्योंके मांसकी कोमलताके कारण हमलोग उनको बहुत पसन्द करते हैं। देखते ही उन्हें खा जाते हैं। आश्चर्यका विषय तो यह है कि मनुष्य भी बड़े व्याघ्रभक्त होते हैं। यदि आपको इसका विश्वास न हो तो मैं एक आपबीती घटना सुनाता हूं।

आप जानते हैं कि मैं बहुत दिनोंतक देशाटनकर बहुदर्शी हो गया हूं। मैं जिस देशमें था वह इस व्याघ्रभूमि सुन्दरवनके उत्तरमें है। वहां गाय, बैल, मनुष्य आदि छोटे-छोटे हिंसा न करनेवाले जीव रहते हैं। वहां दो रंगके मनुष्य हैं--काले रंग और गोरे रंगके। वहीं मैं एक बार संसारी कर्मके लिये चला गया।

यह सुनकर बड़दन्ता नामक एक ढीठ बाघ बोल उठा कि सांसारिक कर्म किसे कहते हैं ?

बड़पुंछाने कहा—सांसारिक कर्म आहारान्वेषण ;यानी खानेकी तलाशका नाम है। अब सभ्य लोग खानेकी तलाशको सांसारिक कर्म कहते हैं। सभी खानेकी खोजको सांसारिक कर्म कहते हैं, यह बात नहीं है। बड़े लोगोंके आहारान्वेषण यानी खानेका तलाशका नाम सांसारिक कर्म है, छोटे लोगोंके खानेकी तलाशका नाम ठगी, भिखमंगी है। धूर्त्तोंके खानेकी तलाशका

नाम चोरी और जबरदस्तके खानेकी तलाशका नाम डकैती है। मनुष्य विशेषके सम्बन्धमें डकैती शब्दका व्यवहार न हो वीरता-का होता है। जिस डाकूको दण्ड देनेवाला है, उसीके कामका नाम डकैती है। जिस डाकूको दण्ड देनेवाला नहीं है, उसके कामका नाम वीरता है। आप लोग जब सभ्य-समाजमें रहें, तब इस नाम वैचित्र्यको याद रखें, नहीं तो लोग असभ्य कहेंगे। वास्तवमें मेरी समझसे इतने वैचित्र्यकी आवश्यकता नहीं। एक पेटपूजा कह देनेसे ही वीरतादि सबही बातें समझी जाती हैं।

खैर, जो कह रहा था वह सुनिये। मनुष्य बड़े व्याघ्रभक्त हैं। मैं सांसारिक कर्म्मके लिये एक बार मनुष्योंकी बस्तीमें जा पहुंचा। आप लोगोंने सुना होगा कि इस सुन्दरवनमें कई साल हुए पोर्टकैनिंगकम्पनी खड़ी हुई थी।

बड़दन्ता फिर पूछ बैठा कि पोर्टकैनिंगकम्पनी कैसा जानवर है?

बड़पुंच्छा बोला—यह मुझे ठीक मालूम नहीं। इस जानवरकी सूरत-शकल, हाथ-पैर कैसे थे, हत्या करनेकी प्रकृति कैसी थी, यह मालूम नहीं। सुना है, मनुष्योंने ही इस जानवरको खड़ा किया था। मनुष्योंके हृदयका रक्त ही यह पीता था। रक्त पी-पीकर इतना मोटा हुआ कि मर ही गया। मनुष्य कभी किसी बातका परिणाम नहीं सोचते। अपने मरनेका उपाय आप ही ढूंढ़ निकालते हैं, इसका प्रमाण अस्त्रादि हैं। मनुष्योंका संहार करना ही इन अस्त्रोंका उद्देश्य है। सुना है कि कभी-कभी एक-एक हजार मनुष्य मैदानमें इकट्ठे हो इन अस्त्रोंसे एक दूसरेको मार

डालते हैं। मालूम होता है कि मनुष्योंने एक दूसरेकी हत्या करनेके लिये ही पोर्टकैनिंगकम्पनी नामक राक्षसीको खड़ा किया था। खैर, आप लोग मनुष्य-वृतान्त ध्यान लगा-लगा सुनिये। बीचमें छेड़छाड़ करनेसे वक्तृताका मजा बिगड़ जाता है। सभ्य जातियोंका यह नियम नहीं है। अब हमलोग सभ्य हो गये हैं। सब काम सभ्योंके नियमानुसार होने चाहिये।

मैं एक बार इसी पोर्टकैनिंगकम्पनीके वासस्थान मातलामें सांसारिक कर्मके हेतु चला गया। वहां बांसके मण्डपमें कोमल मांसवाला बकरीका एक बच्चा कूदता हुआ नजर आया। मैं उसका स्वाद लेनेके लिये मंडपमें घुस गया। वह मंडप जादूका था। पीछे मालूम हुआ कि मनुष्य उसे फंदा कहते हैं। मेरे घुसते ही द्वार आप-ही-आप बंद हो गया। पीछे कई मनुष्य वहां आ पहुंचे। वह मेरे दर्शनसे बहुत आनन्दित हुए। कोई हंसता था, कोई चिल्लाता था और कोई ठठोली करता था। वह लोग मेरी बड़ी बड़ाई कर रहे हैं, यह मैंने समझ लिया था। कोई तो मेरी सूरतकी तारीफ करता, कोई दांतोंपर कुर्बान था, कोई नखोंपर मोहित था और कोई दुमके ही गीत गाता था। जोड़ूके भाईको जो कहते हैं, खुश हो-होकर वही मुझे कहने लगे! इसके बाद भक्तिपूर्वक उन लोगोंने मण्डपसहित मुझे उठाकर गाड़ीपर रख दिया। इसमें दो सफेद बैल जुते हुए थे, उन्हें देखकर मेरे मुंहसे लाल टपक पड़ी। मण्डपसे बाहर निकलनेका कोई उपाय न था। लाचार बंधे हुए बकरेसे ही सन्तोष किया। मैं आनन्दसे गाड़ीपर बैठा

बकरेका मांस खाता एक मनुष्यके घरमें घुसा, मेरे सत्कारके लिये उसने स्वयं द्वारपर आकर मेरा स्वागत किया। लोहेके एक घरमें मेरे रहनेका प्रबन्ध हुआ, जीते या तुरंतके मरे बकरे, भेड़, बैल वगैरहके उपादेय मांस और रक्तसे मेरा सत्कार होने लगा। दूर-दूरके मनुष्य मुझे देखनेको आने लगे। मैं भी समझता था कि यह मुझे देखकर कृतार्थ हो रहे हैं।

मैंने बहुत दिनोंतक उस लोहेके घरमें वास किया। वह सुख छोड़कर आनेकी इच्छा न थी, पर स्वदेशानुरागके कारण न रह सका। अहा! जब जन्मभूमिकी याद आती तो दहाड़ता और कहता था कि हे माता सुन्दरवन-भूमि, मैं क्या कभी तुझे भूल सकता हूं? जब तेरी याद आती तो मैं बकरेका मांस, भेड़का मांस छोड़ देता (यानी हड्डी और चमड़ा ही छोड़ता) और पूंछ पटक-पटककर मनकी चिन्ता सबको बताता था। जन्मभूमि, जबतक तुझे मैंने नहीं देखा तबतक मैंने भूख लगे बिना खाया नहीं, नींद बिना सोया नहीं। अपने कष्टकी बात और क्या बताऊं, पेटमें जितना समाता उतना ही खाता, ऊपरसे दो-चार सेर मांस और खा लेता था और कुछ नहीं खाता।

जन्मभूमिके प्रेमसे विह्वल हो बड़पुंच्छा जी बहुत देरतक चुप रहे। मालूम हुआ, उनकी आंखें डबडबा आयी हैं, दो चार बूंदें गिरनेका निशान भी जमीनपर दिखायी दिया था, पर कुछ युवक व्याघ्र यह बात माननेके लिये तैयार न थे। वे कहते थे कि यह बड़पुंच्छाके आंसुओंकी बूंदें नहीं हैं, राल हैं जो मनुष्योंके यहांके खानेकी याद आ जानेसे गिरी थीं।

व्याख्याताने धैर्य्य धारणकर फिर बोलना आरम्भ किया। मैंने कैसे वह स्थान छोड़ा, यह बतानेकी जरूरत नहीं। मेरी इच्छा जानकर या भूलसे चाहे जैसे हो, मेरे नौकरने एक रोज घरमें झाड़ू लगानेके बाद द्वार खुला छोड़ दिया, बस मैं बाहर निकल आया और मालीरामको उठाकर चलता हुआ।

यह सब बातें विस्तारपूर्वक कहनेका कारण यही है कि मैं बहुत रोजतक मनुष्योंमें रह चुका हूं और उनका चरित्र अच्छी तरह जानता हूं। इससे आप लोग मेरी बातोंपर अच्छी तरह विश्वास करेंगे, इसमें सन्देह नहीं। मैंने जो कुछ देखा है वही कहूंगा, और यात्रियोंकी तरह बेजड़ बातें बोलनेकी मेरी आदत नहीं। मनुष्योंके सम्बन्धमें बहुतेरे उपन्यास हमलोग बहुत रोजसे सुनते चले आ रहे हैं। मुझे इन बातोंका विश्वास नहीं है। हमलोग बहुत दिनोंसे सुनते चले आ रहे हैं कि मनुष्य क्षुद्रजीवी हो कर भी पर्वताकार विचित्र गृह बनाते हैं। इन घरोंमें वह रहते हैं सही, पर उन्हें ऐसा घर बनाते आंखोंसे कभी नहीं देखा, इसलिये वह लोग स्वयं ऐसे घर बनाते हैं इसका प्रमाण नहीं मिला। मालूम होता है वह लोग जिन घरोंमें रहते हैं वह वास्तवमें पर्वत हैं—प्रकृतिके बनाये हैं। उनमें बहुतसी खोह कन्दराएं देख बुद्धिजीवी मनुष्यपशु रहने लगे हैं।*

---

* पाठक बहुदुंभ्काकी न्यायशास्त्रमें व्युत्पत्ति देखकर विस्मित न हों। इसी प्रकारके तर्कसे (Maxmuler) मोक्षमूलरने सिद्ध किया है कि प्राचीन भारत वासी लिखना नहीं जानते थे। इसी तरहके तर्कसे (James Mill (

मनुष्यजन्तु मांस और फल-मूल दोनों खाते हैं। बड़े-बड़े पेड़ नहीं खा सकते, पर छोटे-छोटे पेड़ जड़ सहित भकोस जाते हैं। मनुष्य छोटे-छोटे पेड़ इतना पसन्द करते हैं कि उनकी खेती कर हिफाजतसे रखते हैं। हिफाजतसे रखी हुई ऐसी जगहको खेत या बगीचा कहते हैं। एकके बागमें दूसरा नहीं चर सकता।

मनुष्य फल-मूल लता-पत्तेको जरूर खाते हैं, पर घास चरते हैं या नहीं, पता नहीं। कभी किसी मनुष्यको घास चरते नहीं देखा, पर इसमें मुझे कुछ शक है। गोरे और काले धनी मनुष्य अपने-अपने बगीचोंमें बड़ी मिहनतसे घास लगाते हैं। मेरी समझसे वह लोग घास खाते हैं। नहीं तो घासके लिये इतनी मिहनत क्यों? मैंने एक काले मनुष्यसे यह सुना था। वह कहता था—"देशका सत्यानाश हो गया—"जितने बड़े-बड़े धनी और साहब हैं, बैठे-बैठे घास खाते हैं।" इसलिये बड़े लोग घास खाते हैं, यह एक तरहसे ठीक ही है।

मनुष्य क्रुद्ध होते हैं तब कहते हैं—"क्या मैं घास चरता हूं?" मैं जानता हूं मनुष्योंका स्वभाव ऐसा ही है। वह जो काम करते हैं, उसे बड़ी मिहनतसे छिपाते हैं। इसलिये जब वह लोग घास खानेकी बातपर नाराज होते हैं, तब यह अवश्य सिद्धान्त करना होगा कि वह घास खाते हैं।

जेम्स मिलने सिद्ध किया है कि प्राचीन कालके भारतवासी असभ्य थे और संस्कृत असभ्य-भाषा है। सचमुच व्याघ्र विद्वान् और मनुष्य विद्वान्में अधिक भेद नहीं है।

मनुष्यपशु पूजा करते हैं। मेरी जैसी पूजा की थी, वह बता चुका हूं। घोड़ोंकी भी वह इसी तरह पूजा करते हैं। घोड़ोंको रहनेके लिये जगह देते हैं, खानेका बन्दोबस्त करते हैं और नह-लाते-धुलाते हैं। मालूम होता है कि घोड़े मनुष्यसे श्रेष्ठ पशु हैं, इसीसे मनुष्य उनकी पूजा करते हैं,

मनुष्यभेड़, बकरियां, गाय, बैल भी पालते हैं। गाय-बैलोंके साथ उनका अजीब सलूक देखा गया है। वह गायोंका दूध पीते हैं। इसीसे पुराने समयके व्याघ्र विद्वानोंने यह सिद्धान्त निकाला है कि मनुष्य किसी समय गायोंके बछड़े थे। मैं यह तो नहीं कहता, पर इतना जरूर कहता हूं कि दूध पीनेके सबब ही मनुष्य और बैलोंकी बुद्धिमें समानता है।

खैर, मनुष्य भोजनके सुभीतेके लिये गाय-बैल, भेड़ बकरियां पालते हैं। बेशक, यह अच्छी चाल है। मैंने यह प्रस्ताव करनेका विचार किया है कि हमलोग भी मनुष्यशाला बनवाकर मनुष्यों-को पालें।

भेड़-बकरियोंके सिवा हाथी, ऊँट, गधे, कुत्ते, बिल्लियां, यहां-तक कि चिड़ियां भी इनके यहां भोजन पाती हैं। इसलिये मनुष्य सब पशुओंका सेवक भी कहा जा सकता है।

मनुष्योंमें बन्दर भी बहुत दिखायी दिये, पर बंदर दो प्रकारके हैं। एक दुमदार और दूसरे बेदुम। दुमदार बन्दर अक्सर छतोंपर या पेड़ोंपर रहते हैं, नीचे भी बहुतेरे बन्दर रहते हैं, पर अधिकांश ऊँचे पदपर ही रहते हैं। कुल-मर्य्यादा या जाति-गौरव ही इसका कारण प्रतीत होता है।

मनुष्य-चरित्र बड़ा विचित्र है। इनके विवाहकी रीति बड़ी ही मजेदार है। इनकी राजनीति तो और भी गजबकी है, धीरे-धीरे मैं सब बताता हूं।"

यहांतक प्रबन्ध पढ़ा जानेपर सभापति महाशयकी दृष्टि, दूर खड़े एक मृग-छौनेपर जा पड़ी। फिर क्या था, आप कुर्सीसे कूदकर चम्पत हो गये। बड़पेटा बाघ इसी दूरदर्शिताके कारण सभापति बनाये गये थे। सभापतिको अकस्मात् विद्यालोचनासे भागते देख प्रबन्ध-पाठक मनमें कुछ खिन्न हुआ। एक विज्ञ सभासद्ने उसके मनका भाव देखकर कहा—"आप नाराज न हों। सभापति महाशय सांसारिक कर्मके लिये भागे हैं। हरिणोंका झुण्ड आया है, मुझे महँक लगी है।

इतना सुनते ही सभासद् लोग सांसारिक कर्म्मके लिये जिधर पाये, उधर पूंछ उठाकर दौड़ गये। प्रबन्ध पढ़नेवालेने भी इन विद्यार्थियोंका अनुगमन किया। इस प्रकार उस दिन व्याघ्रोंकी सभा बीचमें ही भंग हो गयी।

एक दिन फिर उन लोगोंने सलाह कर खानेके बाद सभा कर डाली। उस दिन सभाका काम निर्विघ्न हुआ। प्रबन्धका शेषांश पढ़ा गया था। इसकी रिपोर्ट आनेपर प्रकाशित की जायगी।

दूसरा प्रबन्ध

सभापति महाशय, बाघनियो और भले बाघो !

पहले व्याख्यानमें मैंने मनुष्योंके विवाह तथा और-और

विषयोंके बारेमें कुछ कहनेकी प्रतिज्ञा की थी। भलेमानसोंका प्रधान धर्म्म प्रतिज्ञा पालन नहीं है। इसलिये मैं एक साथ ही अपने ही विषयपर कहना आरम्भ करता हूं।

ब्याह किसे कहते हैं, यह आप लोग जानते ही हैं। अव-काशके अनुसार सब ही बीच-बीचमें ब्याह करते रहते हैं, पर मनुष्योंके ब्याहमें कुछ विचित्रता है। व्याघ्रादि सब पशुओंका ब्याह जरूरत पड़नेपर होता है, मनुष्य पशुओंमें ऐसी चाल नहीं है। उनमें अधिक लोग एक ही समय जन्मभरके लिये ब्याह कर लेते हैं।

मनुष्योंके ब्याह नित्य और नैमित्तिक दो प्रकारके होते हैं। इनमें नित्य अर्थात् पुरोहितविवाह ही मान्य है। पुरोहितको बीचमें डालकर जो विवाह होता है, उसका ही नाम पौरोहित विवाह है।

बड़दन्ता—"पुरोहित किसे कहते हैं?"

बड़पुंछा—कोषमें लिखा है कि पुरोहित लड्डू खानेवाला और धूर्त्तता करनेवाला मनुष्य विशेष है, पर यह व्याख्या ठीक नहीं, क्योंकि सब ही पुरोहित लड्डू खानेवाले नहीं हैं। बहुतेरे शराब और कबाब उड़ाते हैं और कुछ तो सब कुछ भकोसते हैं। इसके सिवा लड्डू खानेसे ही कोई पुरोहित नहीं होता है। बनारस नामके नगरमें सांड़ मिठाई खाते हैं, पर वह पुरोहित नहीं, क्योंकि वह धूर्त्त नहीं होते। धूर्त्त यदि लड्डू खाय तो वह पुरोहित होता है।

पौरोहितविवाहमें वर-कन्याके बीचमें एक पुरोहित बैठता है और कुछ बकता है। इस बकवादका नाम मन्त्र है। इसका अर्थ क्या है, यह मैं अच्छी तरह नहीं जानता। पर विद्वान् होनेके कारण मैंने उसका अभिप्राय क्या है, यह एक तरहसे अनुमान कर लिया है। शायद पुरोहित कहता है—

"हे वर-कन्या! मैं आज्ञा देता हूं, तुम दोनों ब्याह कर लो। तुम्हारे ब्याह करनेसे मुझे रोज लड्डू मिला करेंगे, इसलिये ब्याह कर लो। इस कन्याके गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन और प्रसूतिकागारमें लड्डू मिलेंगे, इसलिये ब्याह करो। बालककी छठी अन्नप्रासन, कर्णछेदन, चूड़ाकरन या उपनयनके समय बहुत लड्डू मिलेंगे, इसलिये ब्याह करो। तुम्हारे गृहस्थ होनेसे बराबर तीज-त्योहार, पूजा-पाठ और श्राद्ध हुआ करेंगे तो मुझे भी लड्डू मिलेंगे, इस हेतु ब्याह करो। ब्याह करो और कभी इस सम्बन्धको मत तोड़ो, अगर तोड़ोगे तो मेरे लड्डूओंकी हानि होगी। हानि होनेसे मैं मारे थप्पड़ोंके मुंह लाल कर दूंगा। हमारे पुरखोंकी यही आज्ञा है।"

इसीसे मालूम होता है कि पौरोहित विवाह कभी नहीं टूटता है।

हमलोगोंमें विवाहकी जैसी प्रथा प्रचलित है, उसे नैमित्तिक प्रथा कह सकते हैं। मनुष्योंमें यह विवाह भी साधारणतः प्रचलित है। बहुतेरे नर-नारी नित्य-नैमित्तिक दोनों ब्याह करते हैं। नित्य और नैमित्तिक विवाहोंमें केवल यही अन्तर है कि नित्य

ब्याहको कोई छिपाता नहीं, पर नैमित्तिकको प्राणपणसे लोग छिपाते हैं। अगर कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्यके नैमित्तिक ब्याहका हाल जान पाता है तो वह उसे कभी-कभी ठोंकता भी है। मेरी समझसे पुरोहितजी ही इस अनर्थके मूल हैं। नैमित्तिक ब्याहमें उन्हें लड्डू नहीं मिलते, इसीसे इस ब्याहको वह लोग रोकते हैं। उनकी शिक्षाके अनुसार नैमित्तिक ब्याह करनेवालेको सभी पकड़कर पीटते हैं। लेकिन मजा यह है कि छिप-छिपकर सभी नैमित्तिक ब्याह कर लेते हैं, पर दूसरोंको करते देखकर ठोंकते हैं।

इससे मैंने यही समझा है कि नैमित्तिक ब्याह करनेके लिये अधिक मनुष्य सहमत हैं, पर पुरोहित आदिके डरसे बोल नहीं सकते। मैंने मनुष्योंमें रहकर जान लिया है कि बहुतसे बड़े आदमी नैमित्तिक ब्याहका बहुत आदर करते हैं। जो हम-लोगोंकी तरह सुसभ्य हैं अर्थात् जिनकी पशुओंकी सी प्रवृत्ति हैं, वही इसमें हमारी नकल करते हैं। मुझे विश्वास है कि समय पाकर मनुष्य हमारी तरह सुसभ्य होंगे और नैमित्तिक ब्याह मनुष्य-समाजमें चल जायगा। बहुतसे मनुष्य विद्वान् इस विषयके रुचिकर ग्रन्थ लिख रहे हैं। वह स्वजाति-हितैषी हैं, इसमें सन्देह नहीं। मेरी समझमें उनका सम्मान बढ़ानेके लिये उन्हें व्याघ्र-समाजका अनाड़ी मेम्बर बनाना अच्छा है। आशा है वह सभामें उपस्थित हों तो आप उनका कलेवा न कर जायेंगे; क्योंकि वह हमलोगोंकी तरह नीतिज्ञ और संसार-हितैषी हैं।

मनुष्योंमें एक विशेष प्रकारका नैमित्तिक ब्याह प्रचलित है, इसका नाम मौद्रिक यानी रुपयेका ब्याह है। इसमें मनुष्य रुपये-से मानुषीका हाथ पकड़ता है, बस, ब्याह हो जाता है।

बड़दन्ता—रुपया क्या?

बड़पुंच्छा—रुपया मनुष्योंका एक पूज्य देवता है। यदि आप लोगोंको अधिक चाव हो तो उसकी कथा सुनाऊं।

मनुष्य जितने देवता पूजते हैं, उनमें इसीपर उनकी अधिक भक्ति है। वह साकार है—सोने, चांदी और ताम्बेकी इसकी मूर्त्ति बनती है। लोहे, टीन और लकड़ीका मन्दिर होता है। रेशम, ऊन, कपास और चमड़ेका सिंहासन बनता है। मनुष्य रात-दिन इसका ध्यान करते और इसके दर्शनके लिये व्याकुल हो इधर-उधर दौड़े फिरते हैं। मनुष्योंको जिस घरमें रुपयेका पता लगता है, वहां वह बराबर आवा-जाई करते हैं और मार खानेपर भी वहांसे नहीं टलते। इस देवताका जो पुरोहित है यानी जिसके घरमें रुपया रहता है, वही मनुष्योंमें बड़ा माना जाता है। लोग रुपयेवालेको हाथ जोड़े सदा स्तुति करते हैं। रुपयेवाला नजर उठाकर जिसको ओर देखता है। वह अपनेको कृतार्थ समझता है।

रुपयेकी बड़ी जागती जोत है, ऐसा कोई काम ही नहीं, जो इसकी कृपासे न होता हो। संसारमें ऐसी कोई वस्तु ही नहीं जो इसके प्रसादसे न मिल सकती हो। ऐसा कोई दुष्कर्म ही नहीं जो इसके द्वारा न हो सकता है। ऐसा कौन दोष है जो

इसकी दयासे न छिप जाता हो ? रुपयेसे ही मनुष्य-समाजमें गुणका आदर होता है। जिसके पास रुपया नहीं, भला वह कैसे गुणी हो सकता है ? जिसके पास है, वह भला दोषी हो सकता है ? कभी नहीं। जिसके ऊपर रुपयेकी कृपा है, वही धर्म्म-ध्वजी है। रुपयेका अभाव ही अधर्म्म है। रुपया होना ही विद्वत्ता है; विद्वान् होकर भी जिसके पास रुपया नहीं, वह मनुष्य शास्त्रके अनुसार मूर्ख है। 'बड़े बाघ' कहनेसे बड़पेटा, बड़दन्ता आदि बड़े-बड़े डीलडौलवाले बाघ समझे जाते हैं, पर मनुष्योंमें यह बात नहीं है। वहाँ जिसके घरमें रुपये होते हैं, वही "बड़ा आदमी" समझा जाता है। जिसके घरमें रुपये नहीं, वह डील-डौलवाला होनेपर भी "छोटा आदमी" ही कहलाता है।

रुपयेकी इतनी बड़ाई सुनकर मैंने विचारा था कि मनुष्योंके यहांसे रुपयाजीको लाकर व्याघ्रपुरीमें स्थापित करूंगा, पर पीछे यह विचार त्यागना पड़ा, क्योंकि सुननेमें आया है कि रुपया ही मनुष्योंके अनिष्टका मूल है। व्याघ्रादि प्रधान पशु कभी स्वजातिकी हत्या नहीं करते, पर मनुष्य सदा करते हैं। रुपयेकी पूजा ही इसका कारण है, रुपयेके लालचमें पड़कर वे एक दूसरेका अनिष्ट करनेमें लगे रहते हैं। पहले व्याख्यानमें कह चुका हूं कि हजारों मनुष्य मैदानमें इकट्ठे हो एक दूसरेकी हत्या करते हैं। इसका कारण रुपया ही है। रुपयेसे मतवाले बनकर मनुष्य सदा एक दूसरेको मारते-काटते, बांधते-सताते, घायल करते और बेइज्जत करते हैं। ऐसा कोई अनिष्ट ही नहीं, जो रुपयेसे

न होता हो। यह सब हाल सुनकर मैंने रुपयेको दूर हीसे प्रणाम किया और उसकी पूजाका ध्यान छोड़ दिया।

पर मनुष्य यह नहीं समझते। मैं कह चुका हूं कि मनुष्य अपरिणामदर्शी होते हैं। सदा एक दूसरेकी बुराई किया करते हैं। वह लोग बराबर चांदी और तामेकी चकती इकट्ठी करनेके लिये चक्कर काटा करते हैं।

मनुष्योंका ब्याह-तत्व जैसा आश्चर्यसे भरा हुआ है, वैसे ही और काम भी हैं, पर इस समय लम्बा व्याख्यान देनेसे आप लोगोंके सांसारिक कर्मका समय फिर आ पहुंचेगा, इसलिये आज यहीं बस करता हूं। यदि छुट्टी मिली तो और बातें फिर कभी सुनाऊंगा।

व्याख्यान समाप्त कर बड़पुंच्छा बाघाचारज महाराज पूंछोंकी विकट फटफटमें बैठ गये। बड़नखा नामका एक सुशिक्षित युवा व्याघ्र उठकर कहने लगा—

व्याघ्र सज्जनो! मैं सुन्दर वक्तृता झाड़नेके कारण वक्ताजी-को धन्यवाद देनेका प्रस्ताव करता हूं। पर साथ ही यह भी कहना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि यह वक्तृता बड़ी रद्दी हुई है। वक्ता बड़ा मूर्ख है और उसकी बातें असत्य हैं।

बड़पेटा बोला—आप शान्त हों। सभ्य जातियां इतनी साफ गालियां नहीं देती हैं। गुप्त रूपसे आप चाहे इनसे भी बढ़कर गालियां दे सकते हैं।

बड़नखाने कहा—जो आज्ञा। वक्ता बड़ा सत्यवादी है।

उसने जो कुछ कहा, उसमें अधिकांश बातें अस्वाभाविक होनेपर भी एकाध बात सच्ची हैं। आप बड़े विद्वान् हैं। बहुत लोग समझते होंगे कि इसमें कुछ सार नहीं है, पर हमलोगोंने जो कुछ सुना, उसके लिये कृतज्ञ होना चाहिये। फिर भी मैं वक्ताको सब बातोंसे सहमत नहीं हो सकता। विशेषकर मनुष्योंके ब्याहके बारेमें वक्ता महाशय कुछ नहीं जानते हैं। पहले तो वह यही नहीं जानते कि मनुष्य ब्याह किसे कहते हैं। बाघोंमें वंशरक्षाके लिये जब कोई बाघ किसी बाघनीको सहचरी (साथमें चरनेवाली) बनाता है तो हमलोग उसे ही ब्याह कहते हैं। पर मनुष्योंका ब्याह ऐसा नहीं है। मनुष्य स्वभावसे ही दुर्बल और प्रभु-भक्त होते हैं, इसलिये प्रत्येक मनुष्यको एक-एक प्रभु चाहिये। सभी मनुष्य एक-एक स्त्रीको प्रभु नियत करते हैं। इसीका नाम उनके यहां ब्याह है। जब वह किसीको साक्षी बना प्रभु नियत करते हैं तो वह पौरोहितविवाह कहाता है। साक्षीका नाम पुरोहित है। बड़-पुंच्छाजीने विवाहमें मन्त्रोंकी जो व्याख्या की है, वह ठीक नहीं। वह मन्त्र यों है—

पुरोहित—कहिये, मुझे किस बातकी गवाही देनी होगी?

वर—आप साक्षी हों कि मैं इस स्त्रीको जन्मभरके लिये प्रभु नियुक्त करता हूं।

पुरो०—और?

वर—और मैं इसके श्रीचरणोंका दास हुआ। इसके आहार जुटानेका बोझ मेरे ऊपर और खानेका इसके ऊपर है।

पुरो०—(कन्यासे) तू क्या कहती है ?

कन्या—मैं खुशीसे इस दासको ग्रहण करती हूं। जबतक चाहूंगी इसे सेवा करने दूंगो, नहीं तो लात मार निकाल बाहर करूंगी।

पुरो०—शुभमस्तु।

और भी बहुतसी भूल हैं। रुपयेको इन्होंने मनुष्योंका देवता बताया है, पर वास्तवमें वह देवता नहीं हैं। रुपया एक तरहका विष-चक्र है। मनुष्य विषको बहुत पसन्द करते हैं। इसीसे रुपयेके लिये वह लोग मरते हैं। मनुष्योंको रुपयेका इतना भक्त जानकर मैंने पहले समझा था कि रुपया न जाने कैसी अच्छी चीज है। इसका एक रोज स्वाद लेना चाहिये। एक दिन विद्याधरी नदीके किनारे एक आदमीको मारकर खाने लगा तो उसके कपड़े-में कई रुपये मिले। मैंने तुरत उन्हें पेटमें धर लिया। दूसरे दिन पेटमें बड़ा दर्द उठा। इससे रुपया विष है, इसमें सन्देह ही क्या ?"

बड़नखाकी वक्तृता समाप्त होनेपर और बाघोंने भी व्याख्यान झाड़े थे। पीछे सभापति बड़पेटाने यों व्याख्यान देना आरम्भ किया—"अब रात अधिक हुई, सांसारिक कर्मका समय हो गया। हरिणोंका झुण्ड कब आयेगा, इसका क्या ठिकाना ? इसलिये लम्बी वक्तृता देकर समय बिताना उचित नहीं। आजका व्याख्यान बड़ा अच्छा हुआ। हम बाघाचारजजीका बड़ा गुण मानते हैं। मैं बस एक ही बात कहना चाहता हूं कि इन दो रोजके व्याख्यानोंसे आप लोगोंको जरूर मालूम हुआ होगा

कि मनुष्य बड़े असभ्य पशु हैं। हमलोग सभ्य हैं, इसलिये मनुष्योंको अपनी तरह सभ्य बनाना हमारा कर्त्तव्य है। मालूम होता है भगवानने मनुष्योंको सभ्य बनानेके लिये ही हमें इस सुन्दरवनमें भेजा है। मनुष्योंके सभ्य होनेसे उनका मांस और भी स्वादिष्ट हो जायगा और वह लोग जल्दी पकड़े भी जा सकेंगे। क्योंकि सभ्य होकर वह जान जायेंगे कि बाघोंको अपने शरीरका भोजन कराना ही मनुष्योंका कर्त्तव्य है। बस यही सभ्यता उन्हें सिखानी चाहिये, इसलिये अब इधर ध्यान देना आवश्यक है। बाघोंको उचित है कि पहले मनुष्योंको सभ्य बनावें, पीछे उनका भोजन करें।

दुमोंकी चटाचटमें सभापतिने व्याख्यान समाप्तकर आसन ग्रहण किया। सभापतिको धन्यवाद दिये जानेपर सभा भंग हुई। जिसे जिधर भाया, सांसारिक कर्मके लिये चला गया।

जहां महासभाका अधिवेशन हुआ था, वहां चारों ओर बड़े-बड़े वृक्ष थे। कुछ बन्दर पत्तोंमें छिपकर उनपर बैठ गये और शेरोंकी वक्तृता सुनने लगे। शेरोंके चले जानेपर एक बन्दरने सिर निकालकर पूछा—क्यों भाई, डालोंपर बैठते तो हो?

दूसरेने कहा—जी हां, बैठा हूं।

पहला—चलो, हमलोग बाघोंके व्याख्यानकी आलोचना करें।

दूसरा—क्यों?

पहला—यह बाघ हमारे जन्मके बैरी हैं, चलो, निन्दाकर बैरका बदला निकालें।

दूसरा—जरूर जरूर, यह तो हमारी जातिके योग्य ही काम है।

पहला—अच्छा तो देख लो, आसपास कोई बाघ तो नहीं है।

दूसरा—नहीं है, तो भी आप जरा छिपकर ही बोलें।

पहला—तुमने यह ठीक ही कहा, नहीं तो न जाने कब किसी बाघके फेरमें पड़कर जान देनी पड़े!

दूसरा—हां, कहिये व्याख्यानमें भूल क्या है?

पहला—पहले तो व्याकरण अशुद्ध है, हमलोग व्याकरणके कैसे बड़े पण्डित होते हैं। इनका व्याकरण हमारे बन्दरोंके व्याकरण सा नहीं है।

दूसरा—इसके बाद?

पहला—इनकी भाषा बड़ी निकम्मी है।

दूसरा—हां, वह बन्दरोंकी सी बोली नहीं बोल सकते हैं।

पहला—बड़पेटाने जो यह कहा कि बाघोंका कर्त्तव्य है कि मनुष्योंको पहले सभ्य बनावें, पीछे उनका भक्षण करें, सो यह गलत है। कहना यह चाहिये था कि पहले भोजन करो, पीछे सभ्य बनाओ।

दूसरा—इसमें क्या सन्देह है—इसीसे तो हम बन्दर कहे जाते हैं।

पहला—कैसे व्याख्यान देना चाहिये और क्या बोलना चाहिये, यह वह नहीं जानते हैं। व्याख्यान देनेके समय कभी किलकारियां मारना, कभी कूदना-फांदना, कभी मुंह बनाना

और कभी जरा शकरकन्द खाना चाहिये। उनको हमसे व्याख्यान देना सीखना चाहिये।

दूसरा—हमसे सीखते तो वह बन्दर बन जाते, बाघ न होते।

(इतनेमें और भी दो चार बन्दर साहसकर बोल उठे।)

एकने कहा—"मेरी समझसे बड़पुंछाके व्याख्यानमें सबसे बड़ा दोष यह है कि उसने अपनी अकलसे गढ़कर नयी-नयी बातें कही हैं। यह बातें किसी ग्रन्थमें नहीं मिलती हैं। जो पुराने लेखकोंके चर्वितचर्वणमें नहीं, वह दूषणके योग्य हैं। हमलोग सदासे चर्वितचर्वण करते हुए बन्दरोंमें भी श्रीवृद्धि करते चले आ रहे हैं। बड़पुंछाने ऐसा न कहकर बड़ा पाप किया है।"

इसपर एक सुन्दर बन्दर बोल उठा—"मैं इस व्याख्यानमें हजारों दोष दिखा सकता हूं। मैंने हजारों जगह समझा ही नहीं। जो हमारी समझके बाहर है, वह दोषके सिवा और क्या हो सकता है?"

तीसरेने कहा—"मैं कोई विशेष दोष नहीं दिखा सकता। पर मैं बावन तरहसे मुंह चिढ़ा सकता हूं और खुली-खुली गालियां देकर अपनी भलमनसी और ठठोलपन दिखला सकता हूं।"

बन्दरोंको बाघोंकी इस तरह निन्दा करते देख एक लम्बोदर बन्दरने कहा—"हमारे कोसा-काटीसे बड़पुंछा घर जाकर जरूर मर जायगा? चलो, हम लोग शकरकन्द खायँ।

विशेष संवाददाताका पत्र

युवराज प्रिन्स आफ वेल्सके साथ जो संवाददाता आये थे, उनमेंसे एकने किसी विलायती पत्रमें एक चिट्ठी छपवायी थी। उस पत्रका नाम जाननेके लिये कोई जिद न करे, क्योंकि उसका नाम हमें याद नहीं है। उस चिट्ठीका सारांश इस प्रकार है:—

युवराजके साथ आकर मैंने बङ्गालको जैसा पाया, वह अवकाशानुसार वर्णनकर आप लोगोंको प्रसन्न करनेकी इच्छा है। मैंने इस देशके विषयमें बहुत अनुसन्धान किया है। इसलिये मुझसे जैसी ठीक खबर मिलेगी, वैसी दूसरेसे नहीं मिल सकती। इस देशका नाम बङ्गाला है। यह नाम क्यों पड़ा, यह वहां वाले नहीं बता सकते। वहांवाले उस देशकी अवस्था अच्छी तरह जानते ही नहीं, फिर भला वह कैसे बता सकते हैं? उनका कहना है कि इसके एक प्रान्तका नाम पहले बङ्ग था। उस प्रान्तके वासी अब भी "बङ्गाल" कहलाते हैं। इसीसे इसका नाम "बङ्गाला" हुआ है, पर इसका नाम बङ्गाला नहीं "बेङ्गाल" है। यह आप लोग जानते ही हैं। इसलिये उनका कहना गलत है, मालूम होता है बेनजामिन गैल (Benjamin Gall) संक्षेपमें बेनगाल नामक किसी अङ्गरेजने इस देशको आविष्कृत और अधिकृतकर अपना नाम प्रसिद्ध किया है।

राजधानीका नाम "कालकाटा" (Calcutta) है। काल और काटा, इन दो बङ्गला शब्दोंसे इसकी उत्पत्ति है। उस नगरमें काल काटने यानी समय बितानेमें कोई कष्ट नहीं है, इसीसे इसका नाम 'कालकाटा' पड़ा।

वहांके निवासी कुछ तो घोर काले और कुछ गोरे हैं। जो काले हैं, उनके पुरखे शायद अफ्रिकासे आकर यहां बसे हैं, क्योंकि उनके बाल घूंघरवाले हैं। नरतत्वविदोंका सिद्धान्त है कि जिनके बाल घूंघरवाले हों, वे बस हब्शी ही हैं और जो जरा गोरे हैं, वे मालूम होता है, उक्त बेनगल साहबके वंशज हैं।

अधिकांश बंगालियोंको मैनचेस्टरके बने कपड़े पहनते देखा, इससे यह साफ सिद्धान्त निकलता है कि मनचेस्टरसे कपड़े आनेके पहले बङ्गाली नंगे रहते थे। अब मनचेस्टरकी कृपासे लज्जा-निवारण कर सकते हैं। इन्होंने हाल हीमें कपड़ा पहनना सीखा है। इससे कैसे कपड़े पहनने चाहिये, अभी ठीक नहीं कर सके हैं। कोई हम लोगोंकी तरह पेन्ट पहनता है, कोई मुसलमानोंकी तरह पाजामा चढ़ाता है और कोई किसकी नकल करनी चाहिये यह स्थिर न कर सकनेके कारण कमरसे कपड़ा लपेट लेते हैं।

बङ्गालमें अंगरेजी राज्यको बस एक ही सौ वर्ष हुए हैं। इसी बीचमें असभ्य नंगी जातियोंको कपड़े पहनना सिखा दिया है। इससे इंगलैंडकी कैसी महिमा है और उससे भारतके धन और ऐश्वर्यकी कितनी वृद्धि हुई है, यह वर्णन नहीं किया जा

सकता। यह अंगरेज ही समझते हैं। बंगालियोंमें इतनी बुद्धि कहां जो समझें।

अफसोस है, मैं इतने थोड़े दिनोंमें बंगालियोंकी भाषा अच्छी तरह न सीख सका। हां, कुछ थोड़ीसी सीख ली है। गुलिस्तां और बोस्तां नामकी जो दो बंगला पुस्तकें हैं, उनका अनुवाद पढ़ा है। इन दोनोंका सारांश यही है कि युधिष्ठिर नामके राजाने रावण नामक राजाको मार उसकी रानी मंदोदरीको हर लिया। मन्दोदरी कुछ दिन वृन्दावनमें रहकर कृष्णके साथ रास करने लगी। अन्तमें उसने दक्षयज्ञमें प्राण त्याग किया, क्योंकि उसके पिताने कृष्णको निमन्त्रण नहीं दिया था।

मैंने कुछ-कुछ बंगला सीखी है। बंगाली हाईकोर्टको हाईकोर्ट गवर्मेन्टको गवर्मेन्ट, डिक्रीको डिक्री, डिसमिसको डिसमिस, रेलको रेल, डोरको डोर और डबलको डबल कहते हैं। ऐसे ही और भी शब्द हैं। इससे साफ प्रगट होता है कि बंगला भाषा अंगरेजीकी शाखामात्र है।

इसमें एक सन्देह है। अगर बंगला अंगरेजीकी शाखा है तो अंगरेजोंके आनेके पहले बंगालियोंको कोई भाषा थी या नहीं? हमारे फाइस्टके नामपर उनके प्रधान देवता कृष्णका नाम रखा गया है और यूरोपके अनेक विद्वानोंके मतानुसार इनकी प्रधान पुस्तक भगवद्गीता बाइबलका उल्था है। इसलिये बाइबलके पहले इनको कोई भाषा नहीं थी, यह एक तरहसे निश्चित ही है। इसके बाद कब इनकी भाषा बनी, यह नहीं कहा जा सकता।

पण्डित मोक्षमूलर यदि ध्यान दें तो कुछ पता चल सकता है। जिसने पता लगाया है कि अशोकके पहले आर्यगण लिखना नहीं जानते थे, वही भयंकर विद्वान् इसका भी पता लगानेमें समर्थ होगा।

और एक बात है। विलियम जोन्ससे लेकर मोक्षमूलरतक कहते हैं कि बंगालमें संस्कृत नामकी एक भाषा और है, पर वहां जाकर मैंने किसीको संस्कृत बोलते या लिखते नहीं देखा। इसलिये वहां संस्कृत भाषा है, इसका मुझे विश्वास नहीं है। शायद यह विलियम जोन्सकी कारस्तानी है। उन्होंने नामवरीके लिये संस्कृत भाषाकी सृष्टि की है।*

खैर, अब बंगालियोंकी सामाजिक अवस्थाकी बात सुनिये। आप लोगोंने सुना होगा कि हिन्दू चार जातियोंमें बंटे हुए हैं। पर यह बात नहीं है। उनमें बहुतसी जातियां हैं। उनके नाम यों हैं—

१—ब्राह्मण, २—कायस्थ, ३—शूद्र, ४—कुलीन, ५—वंशज, ६—वैष्णव, ७—शाक्त, ८—राय, ९—घोषाल, १०—ठैगोर, ११—मुल्ला, १२—फराजी, १३—रामायण, १४—महाभारत, १५—आसाम गोआलपाड़ा, १६—परियाकुत्ते।

बंगालियोंका चरित्र बड़ा खराब है। वे बड़े ही झूठे हैं, बिना सबब भी झूठ बोलते हैं। सुनते हैं बंगालियोंमें सबसे बड़े विद्वान्

---

* यह हँसीकी बात नहीं है। वालण्टुआर्ट साहबकी सचमुच यही राय थी।

बाबू राजेन्द्रलाल मित्र हैं। मैंने कई बंगालियोंसे पूछा था कि वह कौन जाति हैं? सबने कहा—कायस्थ, पर वह सब मुझे धोखा न दे सके, क्योंकि मैंने विद्वद्वर मोक्षमूलरकी पुस्तकोंमें पढ़ा था कि राजेन्द्रलाल मित्र ब्राह्मण हैं। इसके सिवा Mitra शब्द Mitres का अपभ्रंश मालूम होता है, इससे मित्र महाशय पुरोहित जातिके ही जान पड़ते हैं।

बंगालियोंका एक विशेष गुण यही है कि वह बड़े ही राजभक्त हैं। जिस तरह लाखों आदमी युवराजको देखने आये थे, उससे यही मालूम हुआ कि ऐसी राजभक्त जाति संसारमें दूसरी नहीं जन्मी है। ईश्वर हमारा कल्याण करे, जिससे उनका भी कुछ कल्याण हो ही रहेगा।

सुना है, बंगाली अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखते हैं। यह ठीक है, पर सब जगह नहीं*। जहां कुछ लाभकी आशा नहीं है, वहां स्त्रियां परदेमें रखी जाती हैं, पर लाभका तार होते ही वह बाहर निकाली जाती हैं। हमलोग Fowling piece (शिकारी बन्दूक) से जो काम लेते हैं, बंगाली अपनी परदेनशीन औरतोंसे वही काम लेते हैं। जरूरत न होनेसे बक्समें बन्द रखते हैं। शिकार देखते ही बाहर निकाल उनमें बारूद भरते हैं। बन्दूककी गोलियोंसे पक्षियोंके पर गिरते हैं। बंगालिनोंके नयनबाणसे किसके पर गिरनेकी संभावना है, नहीं कह सकता। बंगालिनोंके गहनेके जैसे गुण मैंने देखे हैं, इससे मैंने भी Fowling piece को

* कुछ बंगालिनोंने परदेसे निकल युवराजकी अभ्यर्थना की थी।

सोनेका गहना पहनाना विचारा है। देखें, चिड़िया लौटकर बन्दूकपर गिरती है या नहीं।

नयनबाण ही क्यों? सुना है बङ्गालिनें पुष्पबाण चलानेमें भी बड़ी चतुर होती हैं। हिन्दू-साहित्यके पुष्पबाण और बङ्गालिनोंके छोड़े पुष्पबाणमें कुछ सम्बन्ध है या नहीं, मैं नहीं जानता। यदि हो तो उन्हें कुटाकांक्षिणी कहना पड़ेगा। जो हो, इस फूलबाणका प्रचार न हो यही अच्छा है। नहीं तो अंगरेजोंका यहां ठहरना कठिन हो जायगा। मैं सदा डरता रहता हूं कि कहीं बङ्गालिनोंके छोड़े पुष्पबाण फटे तम्बूको छेदकर मेरे कलेजेको न पार कर जायं। अगर ऐसा हुआ तो फिर मैं किसी कामका न रहूंगा। मैं बेचारा गरीब बनियेका बेटा दो पैसे पैदा करने यहां आया हूं, बेमौत मारा जाऊंगा। मेरी क्या दशा होगी! हाय, मेरे मुंहमें कौन पानी डालेगा!

मैं यह नहीं कहता कि सब बङ्गालिनें हो शिकारी बन्दूक हैं या सभी फूलबाण छोड़नेमें चतुर हैं। हां, कुछ अवश्य हैं, यह मैंने सुना है। यह भी सुना है कि वह पतिकी प्रेरणासे ही ऐसा करती हैं और पति अपने शास्त्रके अनुसार ही यह काम कराते हैं। हिन्दुओंके चार वेद हैं। उनमें चाणक्य श्लोक नामक वेदमें लिखा है—

"आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि"

अर्थात् हे पद्मपलाशलोचन श्रीकृष्ण! मैं अपनी उन्नतिके लिये इन बनफूलोंकी माला तुम्हें देता हूं, इसे गलेमें पहन लो। यह कहना भूल ही गया कि मैं इन वेदोंमें बड़ा व्युत्पन्न हो गया हूं।

ग्राम्यकथा

—००:०:००—

(१)

पाठशालाके पण्डितजी

रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही हैं। मैं छाता लगाये देहाती सड़कसे जा रहा हूं। बूँदें जरा जोरसे पड़ने लगीं, मैं एक चौपालके छप्परमें जा छिपा। देखा, भीतर कुछ लड़के हाथमें पुस्तक लिये पढ़ रहे हैं। पण्डितजी पढ़ा रहे हैं, कान लगाकर पढ़ाना जरा सुना। देखा, व्याकरणपर पण्डितजीका बड़ा अनुराग है। इसका प्रमाण लीजिये। पण्डितजीने एक छात्रसे पूछा—भू धातुके परे 'क्त' प्रत्यय लगानेसे क्या होता है?

छात्रका नाम भोंदू था। उसने सोच-समझकर कहा—भू धातुके परे 'क्त' प्रत्यय लगानेसे भुक्त होता है।

पण्डितजीने बिगड़कर कहा—मूर्ख गदहा कहींका।

भोंदू भी गरम होकर बोला—क्या भुक्त शब्द नहीं है?

पण्डितजी—है क्यों नहीं, पर भुक्त कैसे बनता है, यह क्या तू नहीं जानता है?

भोंदू—क्यों नहीं जानता हूं? अच्छी तरह खानेसे ही भुक्त होता है।

पण्डित—उल्लू कहीं का, क्या मैं यही पूछता हूं?

भोंदूसे नाराज होकर पण्डितजीने बगलमें बैठे हुए दूसरे लड़केसे पूछा—"रामा तू तो बता, भुक्त शब्द कैसे बनता है?"

रामा—जी, भुज् धातुके परे क्त लगानेसे।

पण्डितजी भोंदूसे बोले—सुन लिया, तू कुछ नहीं होने-जानेका।

भोंदूने नाराज होकर कहा—न होऊंगा न सही, आप तो पक्षपात करते हैं।

पं०—गधे, मैं क्या पक्षपात करता हूं? (चपत मारकर) अब तो बता, भू धातुके परे क्त लगानेसे क्या होता।

भोंदू—(आंखें डबडबाकर) मैं नहीं जानता हूं।

पं०—नहीं जानता है, भूत कैसे होता है यह नहीं जानता है?

भोंदू—यह तो जानता हूं, मरनेसे भूत होता है।

पं०—उल्लू कहींका, भू धातुके परे क्त लगानेसे भूत होता है।

भोंदूने अब समझा। उसने मन-ही-मन सोचा कि मरनेसे जो होता है, भू धातुमें क्त लगानेसे भी वही होता है। उसने विनीत भावसे पूछा—"पण्डितजी, भू धातुके परे क्त लगानेसे क्या श्राद्ध भी करना पड़ता है?"

पण्डितजी और जब्त न कर सके, जरसे एक तमाचा उसके गलेपर जड़ दिया। भोंदू किताबें फेंक रोता-धोता घर चला गया। उस समय बूंदें कम हो गयी थीं, मैं भी तमाशा देखनेके लिये उसके साथ चला। भोंदूका घर पाठशालासे दूर न था, घर पहुंचकर भोंदूने रोनेका सुर दूना कर दिया और पछाड़ खाकर

गिर पड़ा। भोंदूकी मां यह देख उसके पास आयी और समझाने लगी। पूछा—"क्यों क्या हुआ बेटा?"

बेटेने मुंह बनाकर कहा—हरामजादी, पूछती है क्या हुआ बेटा। ऐसी पाठशालामें मुझे क्यों भेजा था?

मां—हुआ क्या बच्चा, बता तो सही?

बेटा—अब रांड पूछती है, क्या हुआ बच्चा! जल्दी तू भू धातुके परे क्त हो। जल्दी हो मैं तेरा श्राद्ध करूं।

मां—क्या बेटा! क्या बात है?

बेटा—जल्दी तू भू धातुके परे क्त हो।

मां—क्या मरनेको कहता है?

बेटा—और नहीं तो क्या? मैं यही बता न सका, इसपर गुरुजीने मुझे मारा है।

मां—दाढ़ीजार गुरुको अकल नहीं है, मेरे इस नन्हेसे बच्चेको और कितनी विद्या होगी? जो बात कोई नहीं जानता है, वह न बता सकनेपर बच्चेको मारता है? आज उसे मैं देखूंगी।

यह कह कमर कसकर भोंदूकी मां पण्डितजीके दर्शनको चली। मैं भी पीछे-पीछे चला। भोंदूकी मांको बहुत दूर जानेका कष्ट न उठाना पड़ा। पाठशाला बन्द होनेपर पण्डितजी घर जा रहे थे, रास्तेमें ही मुठभेड़ हो गयी। भोंदूकी मां बोली—"हां पण्डितजी, जो बात कोई नहीं जानता है, वह बतानेके लिये तुमने मेरे लड़केको इस तरह पीट दिया।"

पण्डित—अरे, ऐसी कठिन बात मैंने नहीं पूछी थी। केवल यही पूछा था कि भूत कैसे होता है ?

भोंदूकी मां—गंगा न मिलनेसे ही भूत होता है, भला यह सब बातें लड़के कहांसे बता सकेंगे। यह सब मुझसे पूछो।

पण्डित—अरे वह भूत नहीं।

भोंदूकी मां—वह भूत नहीं, तब कौन भूत ?

पण्डित वह भूत तुम नहीं जानती हो, भूत एक शब्द है।

भोंदूकी मां—भूतका शब्द मैंने कितनी ही बार सुना है। भला, लड़कोंको कोई ऐसी बातोंसे डराता है!

मैंने देखा कि पण्डितका झगड़ा मिटनेवाला नहीं है। मजा देखनेके लिये मैंने आगे बढ़ कर कहा—"महाराज, स्त्रियोंके साथ क्या शास्त्रार्थ करते हैं, आइये मेरे साथ कीजिये।" पण्डितजी मुझे ब्राह्मण जानकर आदर सहित बोले—"अच्छा आप प्रश्न करें।"

मैं बोला—"आप भूत-भूत कह रहे हैं, कहिये के भूत हैं ?"

पण्डितजी प्रसन्न होकर बोले—"भोंदूकी मां देखती है, पंडित पंडितोंकी तरह ही बोलते हैं।" फिर मेरी ओर मुंह बना कर बोले—"भूत पांच हैं।"

इतना सुन भोंदूकी मां कड़ककर बोली—"क्यों रे पण्डित, इसी विद्याके भरोसे मेरे लालको मारता है? भूत पांच हैं या बारह ?"

पण्डित—पागल कहींकी, पूछ तो किसी पण्डितसे भूत पांच हैं या बारह ?

भोंदूकी मां—बारह भूत नहीं हैं तो मेरा सरबस कौन खा गया ? मैं क्या ऐसी ही दुःखी थी ?

वह रोने लगी ! मैं उसका पक्ष लेकर बोला—"वह जो कहती है, वह हो सकता है", क्योंकि मनुजी कहते हैं:—

"कृपणानां धनञ्चैव पोष्यकुष्माण्डपालिनां ।
भूतानां पितृश्राद्धेषु भवेन्नष्टं न संशयः ॥"

अर्थात् जो कृपणोंकी तरह धन और पोष्यपुत्रस्वरूप कुम्हड़ रखते हैं, उनका धन भूतोंके बापके श्राद्धमें नष्ट होता है।

पण्डितजी जरा सीधे आदमी थे, वह मेरी व्यंगबाजी न समझ सके। उन्होंने देखा कि यहां कुछ न बोलनेसे भोंदूकी मांके आगे हारना पड़ेगा। चट उन्होंने कहा कि इसमें क्या सन्देह है। वेदोंमें भी तो लिखा है -

"अस्ति गोदावरीतीरे विशालः शाल्मलीतरुः ।"

इतना सुनकर भोंदूकी मां बड़ी खुश हुई। वह पण्डितजीकी बड़ी बड़ाईकर बोली—पण्डितजी तुम्हारे पेटमें इतनी विद्या है तो फिर मेरे बेटेको क्यों मारते हो ?

पण्डित—अरी पगली इसीलिये तो मारता हूं, जिससे वह भी मेरी तरह पण्डित हो जाय। बिना मारे क्या विद्या आती है ?

भोंदूकी मां—पण्डितजी, मारनेसे ही विद्या आती है तो भोंदूके बापको क्यों न आयी ? मैंने तो उन्हें झाड़ू तकसे पीटनेमें कसर न की, पर कुछ न हुआ।

पण्डित—अरी तेरे हाथसे थोड़े ही कुछ होगा, होगा तो मेरे हाथसे।

भोंदूकी मां—मेरे हाथोंने क्या बिगाड़ा है ? क्या उनमें ओर नहीं ?

देखो भला—यह कहकर भोंदूकी मांने कुछ कमचियां उठा लीं। पण्डितजी अधिक लाभकी सम्भावना देख नौ दो ग्यारह हुए। उसी दिनसे पण्डितजीने भोंदूको फिर नहीं मारा और न भू धातुका झगड़ा उठाया। भोंदू कहा करता है कि मांने एक ही झाड़ूमें पण्डितजीका भूत भगा दिया।

ग्राम्यकथा

(२)

धर्मशिक्षा

"Theory" सिद्धान्त

"पढ़ो बेटा, मातृवत् परदारेषु।"

बेटा—बाबूजी, इसका क्या अर्थ हुआ ?

बाप—इसका अर्थ यही है कि जितनी परायी स्त्रियां हैं, सबको अपनी माता समझना चाहिये।

बेटा—तो सब स्त्रियां ही मेरी मां हैं।

बाप—हां बेटा, सब तेरी मां हैं ?

बेटा—तो आपको बड़ी तकलीफ होगी।

बाप—क्यों ?

बेटा—मेरी मां होनेसे वह सब आपकी कौन हुईं, बाबूजी ?

बाप—चल, ऐसी बात मत निकाल। पढ़, "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ट्रवत्।"

बेटा—इसके माने बताइये।

बाप—परायी चीजको लोष्ट्र समझना।

बेटा—लोष्ट्र क्या?

बाप—मिट्टीका ढेला।

बेटा—तब तो हलवाईको पेड़ेका दाम न देना चाहिये, क्योंकि मिट्टीके ढेलेका दाम ही क्या है।

बाप—यह बात नहीं है। परायी चीजको मिट्टीकी तरह समझो, जिसमें लेनेकी इच्छा न हो।

बेटा—कुम्हारका पेशा सीखनेसे क्या काम न चलेगा?

बाप—तुझे कुछ न आवेगा, ले पढ़। "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ट्रवत्। आत्मवत् सर्व्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।"

बेटा—आत्मवत् सर्व्वभूतेषु यह क्या बाबूजी?

बाप—अपने ऐसा सबको देखो।

बेटा—तो बस काम बन गया, यदि दूसरोंको अपने ऐसा समझूं तो दूसरोंकी चीजको अपनी ही समझना होगा, और दूसरोंकी स्त्रीको भी अपनी स्त्री समझना होगा।

बाप—चल दूर हो, पाजी बदमाश (इति थप्पड़)।

अभ्यास

(१)

किशोरी नामकी एक प्रौढ़ा गगरी लिये जल भरने आ रही

है। इसी समय अधात शाला वह बालक उसके सामने आ खड़ा हुआ।

बालक—मां।

किशोरी—क्यों बेटा। (अहा ! इसकी बोली कैसी मीठी है। सुनकर छाती ठण्ढी हो गयी।)

बालक—मिठाई खानेको एक पैसा दे मां।

किशोरी—मैं आप गरीबिन हूं, पैसा कहांसे लाऊं बेटा।

बालक—न देगी चुड़ैल ?

किशोरी—आग लगे तेरे मुंहमें ! दाढ़ीजार किसका जाया है ?

बालक—न देगी तो ले (मारता है और गगरी फोड़ता है)

[बालकका बाप आता है]

(२)

बाप—यह क्या ? पाजी !

बेटा—क्यों बाबूजी ! यह तो मेरी मां है न ! जैसे मांके साथ करता हूं, वैसे इसके साथ भी किया। "मातृवत् परदारेषु" क्योंरी तूने बाबूजीको देखकर घूंघट भी नहीं काढ़ा ?

हलवाईने बेटेके बापके पास आकर नालिश की कि तुम्हारे लड़केके मारे दूकान खोलना कठिन है. क्योंकि वह जो कुछ मिठाई पाता है उठा लाता है। दूधवालेने भी दही-दूधके बारेमें आकर यही बात कही।

बापने बेटेको पकड़ पीटना शुरू किया।

बेटा बोला—बाबूजी, क्यों मारते हैं ?

बाप—तू दूसरोंकी चीजें क्यों उठा लाता है ?

बेटा—बाबूजी ! आजकल चोरोंका डर है, इसलिये यह ढेले जमा करता हूं, क्योंकि पराया माल ढेलेके बराबर है।

(३)

सरस्वती-पूजाका दिन है, बापने बेटेसे कहा—जा गङ्गाजीमें गोता लगा आ और सरस्वतीजीकी पूजा कर, नहीं तो खानेको न मिलेगा।

बेटा—खा-पीकर पूजा नहीं होती ?

बाप—नहीं पागल खा-पीकर कहीं पूजा होती है ?

बेटा—इस बार पूजा न कर अगले साल दो बार कर लूंगा। अबके बड़ा जाड़ा है।

बाप—ऐसा नहीं होता है। सरस्वती-पूजाके बिना विद्या नहीं आती।

बेटा—तो क्या एक साल विद्या उधार न मिलेगी ?

बाप—चल मूर्ख। जा, नहा आ। पूजा करनेसे मैं दो रस-गुल्ले दूंगा।

"अच्छा" कहकर बालक नाचता-कूदता नहाने चला गया। मगर जाड़ा बड़ा था। ठण्ढी-ठण्ढी हवा चल रही थी। जल भी बर्फकी तरह ठण्ढा हो रहा था। मल्लाहका पांच सालका एक लड़का वहां खड़ा था। बालकने सोच-समझकर उस लड़केको दो-तीन गोते लगवाये। फिर उसे बांधकर बापके पास ले गया। बोला—बाबूजी नहा आया।

बाप—कहां नहाया ?

बेटा—बाबूजी, "आत्मवत् सर्व्वभूतेषु" के अनुसार मुझमें और उसमें क्या अन्तर है ? उसके नहानेसे मेरा नहाना हो गया। लाओ मेरी मिठाई। (बाप यह सुन बेत ले उसके पीछे दौड़ा। बेटा यह बोलता हुआ भाग चला कि "बाबूजी शास्त्रवाक्य कुछ नहीं जानते हैं।")

थोड़ी देरके बाद बापने सुना कि बेटेने विद्यालयके पण्डित-जीको खूब ठोंका है। घर आनेपर बापने बेटेसे पूछा—"अबके यह क्या कर आया ?"

बेटा—क्या करता बाबूजी ? आप तो छोड़ते नहीं, बेत मारते ही। इसलिये मैंने खुद ही मार खा ली।

बाप—अरे नालायक तूने मार खाली या पंडितजीको मार आया ?

बेटा—पण्डितजी और मुझमें क्या भेद है ? उन्होंने मार खायी, मानों मैंने खायी; क्योंकि आत्मवत् सर्व्वभूतेषु।

पिताने प्रतिज्ञा की कि अब इस लड़केको न पढ़ाऊंगा !

रामायणकी समालोचना

(एक विलायती समालोचककृत)
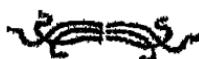
मैं रामायण आद्यन्त पढ़कर बड़ा ही विस्मित हो गया हूं। अनेक स्थानोंकी रचना प्रायः यूरोपके निम्न श्रेणीके कवियोंकी-सी हो गयी है। हिन्दू कवियोंके लिये यह साधारण गौरवकी बात नहीं है। रामायणका रचयिता यदि और कुछ दिन अभ्यास करता तो अच्छा कवि हो जाता, इसमें सन्देह नहीं।

रामायणका स्थूल तात्पर्य्य बन्दरोंकी महिमा-वर्णन है। बन्दर आधुनिक बोएरवाल (Boerwal) नामक हिमाचल प्रदेश-वासी अनार्य्य जातिके शायद पुरखे थे। अनार्य्य बन्दरोंका लङ्का जीतना और राक्षसोंको सपरिवार मारना, इसका वर्णनीय विषय है। उस समय आर्य्य असभ्य और अनार्य्य सभ्य थे।

रामायणमें नीतियुक्त कुछ कथाएं भी हैं। बुद्धिहीनता कितना बड़ा दोष है, यह दिखानेकी कविने चेष्टा की है। एक मूर्ख वृद्ध राजाके चार रानियां थीं। उसे बहुविवाहका विषैला फल सहज ही प्राप्त हुआ। बुद्धिमती कैकेयीने अपने पुत्रकी उन्नतिके लिये असभ्य बूढ़े राजाको बहका सौतके जाये बड़े पुत्रको कुलसे वन भेज दिया। उस पुत्रने भारतवासियोंके स्वभावसिद्ध आलस्यके वशीभूत हो अपने स्वत्वाधिकारकी रक्षा न की। बूढ़े

बापका वचन मान जंगल चला गया। इससे महातेजस्वी तुर्कवंशी औरंगजेबकी तुलना करो तो समझमें आ जायगा कि मुसलमानोंने हिन्दुओंपर इतने दिनोंतक कैसे राज्य किया। राम वन जानेके समय अपनी युवती भार्य्याको साथ ले गया था। इससे जो होना था, वही हुआ।

भारतवर्षकी स्त्रियां स्वभावसे ही असती होती हैं, सीताका व्यवहार ही इसका उत्तम प्रमाण है। सीताने घरसे निकलते ही रामका साथ छोड़ दिया। रावणके संग लङ्का जा सुख भोगने लगी। मूर्ख राम रोता-पीटता इधर-उधर भटकने लगा। इसीसे हिन्दू स्त्रियोंको घरसे बाहर नहीं निकालते हैं।

हिन्दू-स्वभावकी जघन्यताका दूसरा उदाहरण लक्ष्मण है। लक्ष्मणका चरित्र जैसा चित्रित हुआ है, उससे वह कर्मवीर मालूम होता है। यदि वह किसी दूसरी जातिका होता तो बड़ा आदमी हो जाता, पर उसका ध्यान एक दिनके लिये भी उधर नहीं गया। वह केवल घूमा रामके पीछे-पीछे और अपनी उन्नतिके लिये कुछ प्रयत्न न किया। यह केवल भारतवासियोंकी स्वभावसिद्ध निश्चेष्टताका फल है।

भरत भी बड़ा असभ्य और मूर्ख था। हाथ आया हुआ राज्य उसने भाईको लौटा दिया। रामायण निकम्मे लोगोंके इतिहाससे ही पूर्ण है। ग्रन्थकारका यह भी एक उद्देश्य है। राम अपनी पत्नीको खोकर बड़ा दुःखी हुआ। अनार्य्य (बन्दर) जातिने तर्स खाकर रावणको सवंश मारा और सीताको छीन

रामको दिया, पर बर्बर जातिकी नृशंसता कहां जा सकती है? राम सीतासे नाराज हो उसे जला डालनेके लिये तैयार हो गया, किन्तु दैवयोगसे उस दिन वह बच गयो। स्वदेश आनेपर चार दिन सुखसे रही, पर पीछे औरोंके कहनेसे क्रोधमें आ रामने सीताको घरसे निकाल बाहर किया। बर्बरोंका ऐसा क्रोध स्वभावसिद्ध है। सीता भूखों मर कई सालके बाद रामके द्वार-पर आ खड़ी हुई। रामने उसे देखते ही क्रोधमें आ जीते जी मिट्टीमें गाड़ दिया। असभ्य जातियोंमें ऐसा होता ही है। रामायणका बस यही सारांश है।

इसका रचयिता कौन है, यह सहज ही नहीं कहा जा सकता। लोग कहते हैं कि वाल्मीकिने इसे बनाया है। वाल्मीकि नामका कभी कोई ग्रन्थकार था या नहीं, इसका अभी निश्चय नहीं। वल्मीकसे वाल्मीकि शब्दकी उत्पत्ति देखी जाती है। इससे मैं समझता हूं कि कहीं किसी वल्मीकमें यह ग्रन्थ मिला है। इससे क्या सिद्धान्त निकलता है, यह देखना चाहिये।

रामायण नामकी एक हिन्दी-पुस्तक मैंने देखी है। यह तुल-सीदासकी बनायी है। दोनोंको बहुतसी बातें मिलती-जुलती हैं। इससे वाल्मीकिरामायणका तुलसीकृत रामायणसे संगृहीत होना असम्भव नहीं है। वाल्मीकिने तुलसीदासकी नकल की या तुलसीने वाल्मी किकी, यह निश्चय करना सहज नहीं है, यह मैं मानता हूं, पर रामायण नाम ही इसका एक प्रमाण है। रामायण शब्दका संस्कृतमें कोई अर्थ नहीं होता है। हां, हिन्दीमें

होता है। रामायण शायद "रामा यवन" शब्दका अपभ्रंशमात्र है। केवल 'व' कार का लोप हो गया है। "रामा यवन" या रामा मुसलमान नामक किसी व्यक्तिके चरित्रके आधारपर तुलसी-दासने पहले रामायण लिखी होगी। पीछे किसीने संस्कृतमें उसका उलथाकर वल्मीकमें छिपा रखा होगा। इसके बाद यह वल्मीकमें मिला, इससे इसका नाम वाल्मीकि हो गया।

रामायणकी मैंने कुछ प्रशंसा की है, पर अधिक नहीं कर सकता। इसमें कई बड़े-बड़े दोष हैं। आदिसे अन्ततक अश्लीलता भरी है। सीताका विवाह, रावणका सीताहरण आदि अश्लीलताके सिवा और क्या है? रामायणमें करुणारस नाम-मात्रको है। बन्दरोंका समुद्र-बांधना, बस यही उसमें करुणा-रसका विषय है। लक्ष्मणके भोजनमें वीररसकी तनिक गन्ध है। वशिष्ठादि ऋषियोंमें हास्यरसका जरा लेश है। ऋषि बड़े हास्य-प्रिय थे। धर्मपर प्रायः हास्य-परिहास किया करते थे।

रामायणकी भाषा प्राञ्जल और विशद होनेपर भी अत्यन्त अशुद्ध कही जायगी। रामायणके एक काण्डमें योद्धाओंका कुछ भी वर्णन न रहनेपर उसका नाम "अयोध्या काण्ड" है। ग्रन्थकारने 'अयोध्याओं काण्ड' न लिखकर 'अयोध्या काण्ड' लिख दिया है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थोंमें ऐसी अशुद्ध संस्कृत प्रायः देखी जाती है। यूरोपके आधुनिक विद्वान् ही विशुद्ध संस्कृतके अधिकारी हैं।

सिंहावलोकन

समाचार पत्रोंकी रीति है कि नये वर्षमें पैर रखनेपर वह गये वर्षकी घटनावलीका सिंहावलोकन करते हैं। मासिक-पत्रिकाएं इससे बरी हैं, पर क्या उन्हें इसका शौक नहीं है? बहुतसे लोग राजा न होकर भी जैसे राजसी ठाठसे रहते हैं, हिन्दुस्थानी काले होकर भी साहब बननेके लिये जैसे कोट-पैंट डाटते हैं, वैसे ही यह छोटी-मोटी पत्रिका भी दोर्दण्ड प्रचण्ड-प्रतापशाली समाचार-पत्रका अधिकार ग्रहण करनेकी इच्छा करती है। अच्छा तो गत वर्षजी महाराज! आप सावधान हो जायं। हम आपका सिंहावलोकन करते हैं।

गये वर्ष राजकाजका निर्वाह कैसे हुआ, इसकी बहुत खोज करनेपर मालूम हुआ कि सालभरमें पूरे तीन सौ पैंसठ दिन हुए। एक दिनकी भी कमी नहीं हुई, हरएक दिनमें चौबीस घण्टे और हर घण्टेमें साठ मिनट थे। इसमें कुछ भी हेरफेर नहीं हुआ, राजकर्मचारियोंने भी इसमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं किया। इससे उनकी विज्ञता ही प्रकट होती है। बहुतोंकी राय है कि सालमें कुछ दिन घटा दिये जायं, पर हम इसका अनुमोदन नहीं करते, क्योंकि इससे पत्रलिक्खका कुछ लाभ नहीं। हां, लाभ होगा नौकरी-पेशावालोंका, जिन्हें पूरा वेतन मिलेगा। और लाभ होगा सम्पादकोंका, जिन्हें कम लेख लिखने पड़ेंगे।

मासिक पत्रिकाओंको क्या लाभ होगा ? उनसे तो बारह महीनेके बारह अङ्क लोग ले ही लेंगे, इसलिये मेरी राय है कि यह सब कुछ न कर गर्मीका मौसम ही उठा देना चाहिये। मैं अधिकारियोंसे अनुरोध करता हूं कि वह एक ऐसा कानून बना दें, जिससे बारहों महीने जाड़ा ही रहे।

सुननेमें आया है कि इस वर्ष सबकी एक-एक वर्षकी आयु चोरी हो गयी है, यह दुःखका विषय है, पर इसका हमें विश्वास नहीं होता है। यह प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि जिनकी उम्र ७० की थी, उनकी ७१ की हो गयी। अगर आयु चोरी हो गयी तो यह उम्र बढ़ी कैसे ? मालूम होता है, निन्दकोंने यह झूठी गप्प उड़ायी है।

यह वर्ष अच्छा था, इसका प्रमाण यही है कि इस साल बहुतोंके सन्तानें हुई हैं। रिस्टिमेस्टल डिपार्टमेंटके सुदक्ष कर्मचारियोंने विशेष अनुसन्धान करके जाना है कि किसीके पुत्र हुआ है, किसीके पुत्री हुई है और किसीका गर्भ गिरा है। दुःखकी बात है कि अबके कई मनुष्य रोगसे मरे हैं। सुननेमें आया है कि कोई महामण्डल नामकी सभा पार्लिमेंटसे प्रार्थना करनेवाली है कि पुण्यभूमि भारतके मनुष्योंकी मृत्यु जिसमें न हुआ करे! मण्डलका प्रस्ताव है कि यदि किसीको मरना बहुत ही जरूरी हो तो पुलिससे हुक्म लेकर मरे।

इस साल अर्थ-विभागकी लीला बड़ी विचित्र हुई। सुना है कि सरकारको आमदनी भी हुई और खर्च भी। यह उतने आश्चर्यकी बात चाहे न हो, पर यह तो महा आश्चर्यकी बात

है कि सरकारको इस आय-व्ययसे कुछ जमा हुआ हो या कुछ खर्च हुआ हो या जमा-खर्च बराबर हो गया हो। अगले साल टैक्स लगेगा या नहीं, यह अभी नहीं कहा जा सकता, पर आशा है, अगला साल खतम हो जानेपर ठीक बता सकेंगे।

इस साल विचारालयोंको सब बातोंको बड़ाई न कर सकूंगा, क्योंकि जिन्होंने नालिश नहीं की, उनका विचार हुआ था, होनेका प्रबन्ध हुआ, पर जिन्होंने नालिश नहीं की उनका कुछ भी विचार नहीं हुआ। इसका कारण कुछ समझमें न आया, भला जहां साधारण विचारालय है, वहां कोई नालिश करे या न करे विचार होनी ही चाहिये। कोई धूप चाहे या न चाहे सूर्य्य सर्वत्र धूप करते हैं। कोई पानी चाहे या न चाहे बादल सब खेतोंमें बरसते हैं, इसी तरह कोई चाहे या न चाहे विचारकोंको घर-घर घुसकर विचार कर आना चाहिये। यदि कोई कहे कि विचारक इस तरह घरमें घुस-घुसकर विचार करेंगे तो गृहस्थोंकी मार्जनी अकस्मात् विघ्न डाल सकती है। इसका जवाब यह है कि सरकारी कर्म्मचारी मार्जनीसे उतना नहीं डरते हैं। छोटे-छोटे हाकिमोंकी झाड़ुओंसे अच्छी जान-पहचान है और अक्सर दोनोंकी मुठभेड़ हो जाती है। जैसे मोरको सर्प प्रिय है, वैसे इन्हें भी झाड़ू प्रिय है। देखते ही खा लेते हैं। सुननेमें आया है कि किसी छोटे-मोटे हाकिमने गवर्नमेण्टसे प्रस्ताव किया है कि बड़े-बड़े हुक्कामोंको "आर्डर आफ दि स्टार आफ इण्डिया" का खिताब जैसे मिलता है, वैसे छोटे-छोटोंसे

हाकिमोंको 'आर्डेर आफ दि ब्रूम स्टिक" यानी झाड़ूदासका खिताब मिलना चाहिये और चुने हुए गुणवान डिप्टी और सदर-आलाओंके गलेमें यह महारत्न लटका देना चाहिये। कोट-पेंट, घड़ी-छड़ीसे विभूषित सदा कम्पमान् वक्षस्थलपर यह अपूर्व शोभा धारण करेगा। यह झाड़ू अगर सरकारसे खिताबके बतौर मिलेगी तो मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि लोग बड़ी खुशीसे इसे माथे चढ़ावेंगे। फिर इतने उम्मीदवार खड़े हो जायंगे कि मुझे भय है कि कहीं झाड़ुओंका टोटा न हो जाय।

गत वर्ष अच्छी वर्षा हुई थी, पर सर्वत्र समान नहीं हुई। यह निश्चय ही बादलोंका पक्षपात है। जहां वर्षा नहीं हुई वहांवालोंने सरकारके पास प्रार्थनापत्र भेजा है कि सब जगह एक सी वृष्टि हो, इस का कुछ उपाय निकालना चाहिये। मेरी समझसे इस कामके लिये एक समिति बना दी जाय, वही उपाय ढूंढ़ेगी। कुछ लोगोंका कहना है कि सरकार मेघोंको कुछ भत्ता दिया करे तो उन्हें कहीं आनेमें उज्र न होगा, पर मैं समझता हूं कि इससे कुछ लाभ न होगा, क्योंकि बङ्गालके बादल बड़े सौदामिनी-प्रिय हैं। वह सौदामिनियोंको छोड़ रुपयेके वास्ते कभी विदेश जाना मंजूर न करेंगे। मेरी समझसे बादलोंको बिदा कर सिक्कोंका बन्दोबस्त करना चाहिये। हर खेतमें एक चपरासी या सुयोग्य डिप्टी लम्बे बांसमें एक-एक भिश्ती बांध ऊपर उठाये रहे। भिश्ती वहांसे खेतमें जल छोड़कर बन पड़े तो नीचे उतर आवे। क्या यह उपाय अच्छा नहीं है?

हमारे देशकी स्त्रियां देशहितैषिणी नहीं हैं। यदि होतीं तो भिश्तियोंकी क्यों जरूरत पड़ती ? यही खेतोंमें जाकर रो आतीं, बस, आंसुओंसे खेत सिंच जाते और बादल भी बरतरफ कर दिये जाते। हां, लोगोंके शारीरिक और मानसिक मङ्गलार्थ यह कह देता हूं कि आकाशकी वृष्टिके बदले नारी-नयनोंको अश्रु वृष्टिका आयोजन हो तो पुलिसका खासा बन्दोबस्त कर रखना चाहिये। बादलकी बिजलीसे अधिक लोग नहीं मरते हैं, पर रमणी-नयन मेघके कटाक्ष विद्युत्से खेतोंमें किसानोंके बालकोंकी क्या दशा होगी, नहीं कहा जा सकता, इससे पुलिसका रहना ही अच्छा है।

सुननेमें आया है कि शिक्षा-विभागमें बड़ा गड़बड़ाध्याय हो गया है। सुनते हैं कि कई विद्यालयोंके छात्रोंने कान नापनेका एक एक गज तैयार किया है। उनके मनमें सन्देह उठ खड़ा हुआ है। वह कहते हैं कि हम मास्टरोंके कान नापेंगे, नहीं तो उनसे नहीं पढ़ेंगे। कानसे गज छोटा होगा, ऐसी सम्भावना कहीं नहीं है।

साल अच्छा रहा चाहे बुरा, पर तीन गूढ़ बातें हमने जान ली है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है।

पहली—साल बीत गया, इसमें मतभेद नहीं है।

दूसरी—साल बीत गया, अब वह लौटनेका नहीं। लौटनेका कोई उपाय न करे, क्योंकि कुछ फल न होगा।

तीसरी—लौटे या न लौटे, हमारे-तुम्हारे लिये एक-सी बात है, क्योंकि हमारे लिये गये साल भी दाना घास था और आगे साल भी रहेगा। खैर, आपका मङ्गल हो, दाना-घासको याद रखना।

बन्दर बाबू संवाद

एक बार प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंसे प्रकाशित कदली-कुञ्जमें श्रीमान् बन्दरजी हवा खा रहे थे। उनका परम सुन्दर लांगूल कुण्डलीकृत हो कभी पीठपर, कभी कन्धेपर और कभी वृक्षकी डालीपर शोभित हो रहा था। चारों ओर वर्त्तमान, चम्पा आदि बहुत तरहके कच्चे-पक्के केले सुगंध फैला रहे थे। श्रीमान् भी कभी सूंघकर, कभी चूसकर, कभी चाटकर और कभी चबाकर केलोंका रसास्वादनकर मानसिक प्रशंसा कर रहे थे। इतनेमें दैवसंयोगसे कोट, बूट, पैंट, चेन, चश्मा, चुरुट, चाबुकधारी टोप्यावृत एक नवीन बाबू वहां आ पहुंचा। बन्दरचन्द्रने दूरसे इस अपूर्व मूर्त्तिको देखकर मनमें सोचा—"यह कौन है? रङ्ग-रूपसे तो निश्चय ही किष्किन्धापुरवासी प्रतीत होता है। वस्त्र तो नकली है, पर ऐसा चाल-ढाल दूसरे देशमें होना असम्भव है। यह मेरा स्वदेशी भाई है। इसकी आवभगत करनी चाहिये।

यह सोचकर बन्दरजी महाराजने चम्पा केलेकी पकी फलियां तोड़कर सूंघा। उनकी महकसे परितृप्त होकर अतिथिका सत्कार करना विचारा। इतनेमें उस कोट-पैंटधारी मूर्त्तिने उनके सम्मुख आ पूछा—

"Good morning Mr. Monkey! how do you do?

So glad to see you! Ah! I see you are at breakfast already."

(बन्दर साहब सलाम! मिजाज मुबारक? आपसे मिलकर मैं बहुत खुश हुआ। ओह हो! आप तो नाश्ता करने बैठ गये!)

बन्दरने कहा—"किमिदं? किं वदसि?"

बाबू—"What is that? I suppose that is the kishkindha patois? It is a glorious country—is it not? "There is a land of every land the pride and so on" as you know?"

बन्दर—"कस्त्वं? कस्माज्जनपादात् आगतोसि?"

बाबू—(स्वगत) It seems most barbarous gibberish that precious lingo of his, but I suppose I must put up with it. (प्रगट) "My dear Mr. Monkey, I am ashamed to confess that I am not quite familiar with your beautiful vernacular I dare say, it is a very polished language. I presume you can talk a little English."

इतना सुनते ही महावीरजीने आँखें लालकर पूंछसे बाबू साहबके गलेको लपेट लिया।

बाबू साहब हक्के-बक्के हो गये, मुंहसे चुरट गिर पड़ा। वह बोले—

"I say, this seems some what—"

दुम जरा और कस ली।

"Some what unmannerly to say the least—"

जरा और कसी।

"Dear Mr. Monkey! you will hurt me."

फिर कसा।

"Kind good Mr, Monkey."

इतनेमें हनुमानजीने पूंछसे बाबूको ऊपर उठा लिया, बाबूकी टोपी, चश्मा और चाबुक नीचे गिर पड़ी। घड़ी पाकेटसे निकल कर लटकने लगी। बाबूका मुंह सूख गया, वह चिल्लाने लगे— "महावीरजी, अपराध हुआ, क्षमा करो—बचाओ नहीं तो मरा!"

महावीरजीने कृपाकर उसे जमनपर रख दिया और पूंछ खोल ली। बाबूने मौका पा चश्मा-चाबुक उठा लिया। बन्दर बोला—"बाबू साहब, बुरा न मानना, आपकी बोली, अङ्गरेजी वेश बन्दरोंकी तरह और मूर्खता पहाड़कीसी। कुछ समझ न सका कि आप कौन हैं। लाचार आपकी जाति जाननेके लिये आपको इतना कष्ट दिया। अब मालूम हो गया—"

बाबू—"क्या मालूम हो गया?"

बन्दर—"यही कि आपका जन्म किसी बङ्गालिनके गर्भसे हुआ है। आप थक गये हैं, क्या केला भोजन कीजियेगा?"

बाबू साहबका मुंह सुख गया था, इसलिये पका केला खाना उन्होंने मुनासिब जाना। बोले—With the greatest pleasure."

बन्दर-- आपका जिस देशमें जन्म हुआ है, मैं वहां केले और बैंगनकी खोजमें अकसर जाता हूं। वहांकी औरतें "बरा" नामका स्वादिष्ट पदार्थ तैयार करती हैं, वह भी आज्ञाके बिना ही राम-दासका भोग लगाया करती हैं। इसलिये मैं भाषा अच्छी तरह समझता हूं, तुम मातृभाषामें ही मुझसे बातचीत करो।

बाबू—इसमें आश्चर्य ही क्या है? आप केला देना चाहते हैं, मैं बड़ी खुशीसे आपका केला भक्षण करूंगा।

यह सुनकर कपिराजने केलेकी कई फलियां बाबूकी ओर फेंक दीं। उन देव-दुर्लभ कदलीके भक्षणसे बाबू बड़े प्रसन्न हुए। कपिजीने पूछा -"केले कैसे हैं?"

बाबू—बड़े मीठे—Delicious

बन्दर—हे टोपधारी! मातृभाषामें बोलो।

बाबू—भूल हुई—Excuse me

बन्दर—इसका क्या अर्थ?

बाबू—माफ कीजिये! मैं बड़ा—क्या कहूं—अङ्गरेजीमें तो Forgotten भाषामें क्या कहूं?

बन्दर—बच्चा! तुम्हारी बातसे मैं प्रसन्न हुआ हूं। तुम और भी केला खा सकते हो। जितना मन हो उतना खाओ, मेरे लायक कोई काम हो तो वह भी कहो।

बाबू--धन्यवाद, हे कपिराज! यदि आप एक बात मुझे कृपाकर बता दें तो बड़ा उपकार मानूंगा।

बन्दर—कौनसी बात?

बाबू—वही बात जिसके लिये मैं आपके पास आया हूं, आपने रामराज्य देखा है। वैसा राज्य क्या कभी नहीं हुआ? कुछ लोगोंकी राय है कि यह गप्प (Fabel) है।

बन्दर—(आंखें लाल और दांत निकालकर) रामराज्य गप्प है, तब तो मैं भी गप्प हूं-मेरी पूंछ भी गप्प है,देख,तेरी कैसी गप्प है।

इतना कह कपिराजने क्रोधकर अपनी लम्बी पूंछ बेचारे बाबूकी गर्दनमें लपेट दी, बाबूका मुंह सूख गया। वह बोला—"ठहरो महाराज, न तुम गप्प हो और न तुम्हारी पूंछ, यह मैं शपथकर कह सकता हूं। लेहाजा तुम्हारा रामराज्य भी गप्प नहीं है। The proof of the pudding is in the eating thereof—बात यह है कि तुम रामचन्द्रके दास हो और मैं अङ्गरेजोंका हूं। तुम्हारे राम बड़े या मेरे अङ्गरेज बड़े हैं? मेरे अङ्गरेजी राज्यमें एक नई चीज हुई है, वह क्या रामराज्यमें थी?

बन्दर—वह चीज कौनसी है? क्या पका केला?

बाबू—नहीं, Local Self Government.

बन्दर—यह क्या बला है?

बाबू—स्थानीय आत्मशासन। क्या यह उस समय था?

बन्दर—था नहीं तो क्या? स्थानीय आत्मशासन स्थान-विशेषका आत्मशासन है। वह तो सदासे ही है। मेरा आत्म-शासन था मेरी पूंछमें। पूंछमें आत्मशासन न करता तो त्रेता-युगके आधे आदमी समुद्रमें डूब मरते। जब मेरी दुममें खुज-लाहट होती, यानी किसीकी गर्दनमें दुम लपेटनेकी इच्छा होती

तभी मैं पूंछका आत्मशासन करता दोनों पैरोंके बीचमें उसे छिपा लेता। यहांतक कि जिस दिन रामचन्द्रजीने सीताजीको अग्निमें प्रवेश करनेके लिये कहा था -उस दिन मेरा यह स्थानीय आत्मशासन न होता तो यह तुम रामचन्द्रजीकी गर्दनमें पहुंचती, पर स्थानीय आत्मशासनके कारण मैं तुम दबाकर रह गया। और भी सुनो। हम लोग जब लङ्का घेरकर बैठे थे, तब आहारा-भावसे हमारा आत्मशासन पेटमें निहित हो, वहांका स्थानीय हो गया था।

बाबू—यह आपके समझनेकी भूल है। वैसे आत्मशासनकी बात मैं नहीं कहता हूं।

बन्दर—सुनो न, स्थानीय आत्मशासन बड़ा अच्छा है। स्त्रियोंका आत्मशासन जीभमें हो तो उत्तम स्थानीय आत्मशासन हुआ। ब्राह्मणोंका आत्मशासन पेड़े-बरफीपर अच्छा होता है। तुम्हारा आत्मशासन—

बाबू—कहां पीठपर?

बन्दर—नहीं, तुम्हारी पीठ दूसरे शासनका क्षेत्र है। किन्तु तुम्हारे आत्मशासनका उचित स्थान तुम्हारी आंखें हैं।

बाबू—कैसे?

बन्दर—तुम रुलाई आनेपर भी नहीं रोते, यह अच्छा है। दिनरात कार्य-कार्य-भार्य करनेसे हुजूर लोग विक हो जाते हैं।

बाबू—जो हो, मैं इस अर्थमें आत्मशासनकी बात नहीं कहता हूं।

बन्दर—तो किस अर्थमें कहते हो ?

बाबू—शासन किसे कहते हैं, जानते हो ?

बन्दर—अवश्य, तुम्हें थप्पड़ लगाऊं तो तुम शासित हुए। इसीका नाम तो शासन है न ?

बाबू—यह नहीं, राजशासन क्या नहीं जानते ?

बन्दर—जानता हूं, किन्तु तुम खुद राजा हुए बिना आत्म-शासन कैसे करोगे ?

बाबू—(स्वगत) इसीका नाम है बन्दर-बुद्धि। (प्रगट) यदि राजा दया करके अपना काम हमें दे दें तो ?

बन्दर—इसमें राजाका ही लाभ है। अपने सिरका बोझ दूसरेके सिरपर डाल मजेमें रानीके साथ सोए और हम लोग मिहनत करके मरें। इसे ही तुम कहते हो रामराज्य ! हा राम !

बाबू—आपने अभी यह समझा ही नहीं। Freedom Liberty किसे कहते हैं, आप जानते हैं ?

बन्दर—किष्किन्धाके स्कूलमें यह नहीं पढ़ाया जाता है।

बाबू—Freedom कहते हैं स्वाधीनताको। स्वाधीनता, किसे कहते हैं, यह तो जानते हैं ?

बन्दर—मैं वनका पशु हूं, मैं नहीं जानता तो क्या तुम जानते हो ?

बाबू—अच्छा, तो मनुष्य जितना स्वाधीन होगा, उतना ही सुखी होगा।

बन्दर—अर्थात् मनुष्यमें जितना पशुभाव होगा, उतना ही वह सुखी होगा।

बाबू—महाशय! क्रोध मत कीजिये—यह बात ठीक बन्दरोंकी-सी हुई।

बन्दर—मैं तो बन्दर हूं ही, बाबूकी तरह कैसे बोलूं!

बाबू—स्वाधीनता बिना मनुष्यजन्म पशुजन्म है, पराधीन मनुष्य गाय-बैलोंकी तरह बन्धे रहकर मार खाते हैं। सौभाग्यसे हमारे राजपुरुष जन्मसे ही स्वाधीन Free burn हैं।

बन्दर—हमारी तरह?

बाबू—उसी स्वाधीनताका लक्षण आत्मशासन है।

बन्दर—हम भी उसी लक्षणवाले हैं, हममें आत्मशासनके सिवा राज्यशासन नहीं है। हम पृथ्वीपर स्वाधीन जाति हैं। तुम क्या मेरी तरह हो सकते हो?

बाबू—बस रहने दो, मैं समझ गया। बन्दरकी समझमें आत्म-शासन नहीं आ सकता।

बन्दर—बहुत ठीक, चलो दोनों मिलकर केले खायें।

साहब और हाकिम

BEASONISM *

जौन डिकसन फौजदारी अदालतमें पकड़कर लाये गये हैं। साहब रङ्गमें तो आबनूसके कुन्देको मात करते हैं, पर साहबका मुकद्दमा देखनेके लिये देहातकी कचहरीमें बहुतसे रंगीले लोग इकट्ठे हुए हैं। मुकद्दमा एक डिप्टीके इजलासमें है, इससे साहब जरा खिन्न हैं, पर मनमें भरोसा है कि बङ्गाली डिप्टी डरकर छोड़ देगा। डिप्टी बाबूके ढङ्गसे भी यह बात जाहिर होती है। वह बेचारा बड़ा बूढ़ा और सीधासादा भलामानस है। किसी तरह सिमटकर वहां बैठा था। इधर चपरासियोंने भी डरते-डरते साहबको कठघरेमें ला खड़ा किया। साहबने जरा रंग बदल हाकिमकी ओर देख अकड़कर कहा—"टुम हमको यहां किस वास्ते लाया?"

हाकिमने कहा—"मैं क्या जानूं, तुम क्यों लाये गये, तुमने क्या किया है?"

साहब—जो किया, टोमारा साथ बाट नेंई मांगटा।

हाकिम—क्यों?

साहब—टुम काला आदमी है।

---

* Ilbert बिलके सम्बन्धमें वादविवाद होनेके समय लिखा गया था।

हाकिम – फिर ?

साहब—हम साहब है।

हाकिम—यह तो मैं देखता हूं, इससे क्या मतलब ?

साहब—टुमको क्या बोलटा वह नेई है।

हाकिम—क्या नहीं है।

साहब—वही जिसका जोरसे मुकद्दमा करटा है। टुम नहीं जानटा क्या ?

हाकिम—मैं भला आदमी हूं, इससे कुछ नहीं कहता, अब टुम-टुम करोगे तो जुर्माना कर दूंगा।

साहब—टुम हमको जुर्माना नहीं करने सकटा। हम साहब है—टुमको क्या कहटा—वह नहीं है।

हाकिम—क्या नहीं है ?

साहब—ओ Yes जुरडीकेशन।

हाकिम—अहा ! Jurisdiction कहो। हां, तो क्या अहले विलायत हो ?

साहब—हम साहब है।

हा०—रङ्ग इतना काला क्यों है ?

सा०—कोलका काम करटा था।

हा०—बापका नाम क्या है ?

सा०—बापका नामसे कोर्टको क्या काम ?

हा०—मालूम तो है न ?

सा०—हमारा बाप बड़ा आडमी था, नाम याद नहीं।

हा०—याद करो। और तुम्हारा नाम क्या है ?

सा०—मेरा नाम जान साहब—जानडिकसन।

हा०—बापका नाम भी क्या डिकसन था ?

सा०—होने सकटा है। (इतनेमें मुद्दईका मोख्तार बोल उठा —"हजूर, इसके बापका नाम गोवर्द्धन साहब है।")

साहब गर्म होकर बोले—"गोवर्द्धन होनेसे क्या होगा ? तेरे बापका नाम रामकान्त है। वह चावल बेचता था। मेरा बाप बड़ा आदमी था।"

हा०—तुम्हारा बाप क्या करता था ?

सा०—बड़े आदमियोंका सादी कराता था।

हा०—क्या वह नाईका काम करता था ?

मुख्तार—हुजूर, नहीं—बाजा बजाता था।

लोग हँस पड़े। हाकिमने जुरिसडिक्शनका उज्र नामंजूर किया और मुकद्दमा सुनने लगे। फरियादीकी पुकार होनेपर चांदीके कड़े पहने कालीकलूटी एक औरत हाजिर हुई। उससे जो कुछ सवाल हुए और उनका उसने जो जवाब दिया, वह नीचे दर्ज हैं :—

प्रश्न—तुम्हारा नाम क्या है ?

उत्तर—जमुना मल्लाहिन।

प्र०—तुम क्या करती हो ?

उ०—मछली फँसा-फँसाकर बेचती हूं।

आसामी साहब बोला—झूठा बात, बुढ़की मछली बेचता है।

मल्लाहिन—वह भी बेचती हूं। उसीसे तो तुम मरे हो।

प्र०—तुम्हारी नालिश क्या है?

उ०—चोरीकी।

प्र०—किसने चोरी की?

उ०—(साहबकी ओर बताकर) इस बागदीके बेटेने।

सा०—हम साहब हैं, बागदी नहीं।

प्र०—क्या चुराया है?

उ०—यही तो कहा था, सुटकी मछल

प्र०—कैसे चोरी की?

उ०—मैं डल्लेमें सुटकी मछली रखकर बेच रही थी, एक खरीदारसे बात करने लगी, इतनेमें साहबने आकर एक मुट्ठी मछली उठाकर जेबमें रख ली।

प्र०—फिर तुम्हें मालूम कैसे हुआ?

उ०—जेब फटी है, यह साहबको मालूम नहीं था, जेबमें डालते ही मछली जमीनपर आ गिरी।

यह सुन साहब गुस्सा होकर बोले—नहीं बाबूसाहब! इसकी डालिया टूटी थी, उसीसे मछली निकली थी।

मल्लाहिन बोली—इसकी जेबमें भी दो-चार मछलियां मिली थीं

साहबने कहा—"वह तो दाम दूंगा कहकर ली थीं।" गवाहोंसे साबित हुआ कि डिकसन साहबने मछली चुरायी थी। हाकिमने तब जवाब लिया। साहबने जवाबमें सिर्फ यही लिखाया

कि काले आदमीका हमपर जुरिस्डीकेशन नहीं है। हाकिमने यह बात मंजूर न कर एक हफ्तेकी कैदका हुक्म दिया। दो-चार रोजके बाद यह खबर कलकत्तेके एक अंगरेजी अखबारके सम्पादकके कानोंतक पहुंची। फिर क्या था, दूसरे ही दिन नीचे लिखी टिप्पणी उसमें निकली—

THE WISDOM OF A NATIVE MAGISTRATE—

A story of lamentable failure of justice and race antipathy has reached us from the Mofussil. John Dickson, an English gentleman of good birth though at present rather in straightened circumstances had fallen under the displeasure of a clique of designing natives headed by one Jamuna Mallahin a person, as we are assured on good authority, of great wealth, and considerable influence in native society. He was hauled up before a native Magistrate on a charge of some petty larceny which, if the trial had taken place before a European magistrate, would have been at once thrown out as preposterous, when preferred against a European of Mr. Dickson's position and character. But Baboo Jaladhar Gangooly the ebony-coloured Daniel before whose awful

tribunal, Mr. Dickson had the misfortune to be dragged, was incapable of understanding that petty larcenies, however congenial to sharp intellects of his own country, have never been known to be perpetrated by men born and bred on English soil and the poor man was convicted on evidene the trumpery character of which, was probably as well known to the magistrate as to the prosecutors themselves. The poor man pleaded his birth, and his rights as a European British subject, to be tried by a magistrate of his own race, but the plea was negatived for reasons we neither know nor are able to conjecture. Possibly the Baboo was under the impression that Lord Ripon's cruel and nefarious Government had already passed into Law the Bill which is to authorize every man with a dark skin lawfully to murder and hang every man with a white one. May that day be distant yet! Meanwhile we leave our readers to conjecture from a study of the names *Jaladhar* and *Jamuna* whether the tie of kindred which obviosly exists between prosecutter

and magistrate has had no influence in producing this extraordinary decision.

यह टिप्पणी पढ़कर जिला मजिस्ट्रेट साहबने जलधर बाबू-को चपरासी भेजकर बुलवाया।

गरीब ब्राह्मण कांपता हुआ मजिस्ट्रेटके सामने हाजिर हुआ। वह पूरे तौरसे सलाम भी न कर पाया कि हुजूरने डपटकर पूछा—What do you mean, Biboo, by convicting a European British subject (बाबू, युरोपियन ब्रिटिश प्रजा-को क्यों दण्ड दिया ?)

डिप्टी—What European British subject, Sir ?

(किस युरोपियन ब्रिटिश प्रजाको दण्ड दिया हुजूर)

मजिस्ट्रेट—Read here, I suppose you can do that. I am going to report you to the Govern-ment for this piece of folly

यह पढ़ लो। मैं समझता हूं तुम पढ़ सकते हो। तुम्हारी इस मूर्खताकी रिपोर्ट गवर्नमेण्टके यहां करूंगा। यह कहकर साहबने कागज बाबूकी तरफ फेंक दिया। बाबूने उठाकर पढ़ लिया। मजिस्ट्रेटने कहा—Do you now understand ? (अब समझमें आया ?)

डिप्टी—हां साहब! पर यह यूरोपियन ब्रिटिशप्रजा नहीं था।

मजिस्ट्रेट—यह तुमने कैसे जाना ?

डिप्टी—वह बड़ा काला था।

मजिस्ट्रेट—क्या कानूनमें लिखा है कि युरोपियनकी पहचाल सिर्फ गोरा रङ्ग ही है ?

डिप्टी—नहीं हुजूर।

यह डिप्टी पुराना खुर्राट था। वह जानता था कि दलीलमें जीतनेसे आफत है। इसलिये उसने दलील छोड़ दी और जो नौकरोंको कहना उचित है वही कहा—"मैं हुजूरसे बहस करनेकी गुस्ताखी नहीं कर सकता। इस भूलके लिये मैं बहुत अफसोस करता हूं।"

मजिस्ट्रेट साहब भी निरे उल्लूके पट्ठे न थे। वह जरा दिल्लगीपसन्द भी थे। उन्होंने पूछा—किस बातके लिये बहुत अफसोस करते हो ?

डिप्टी—युरोपियन ब्रिटिश प्रजाको सजा देनेके लिये।

मजि०—क्यों ?

डिप्टी—इसलिये कि हिन्दुस्थानियोंके लिये यह बड़ा भारी दोष है कि वह युरोपियन ब्रिटिश प्रजाको सजा दें।

मजि०—क्यों बड़ा भारी दोष है ?

डिप्टी बड़ा चालाक था। छूटते ही कहा—"इसलिये दोष है कि युरोपियन ब्रिटिश प्रजा जुर्म नहीं कर सकती और देशी लोग ईमानदारीसे इन्साफ नहीं कर सकते।"

मजि०—क्या ऐसा तुम मानते हो ?

डिप्टी—नहीं माननेकी कोई वजह नहीं देखता। मैं तो अप... लियाकतभर अपना फर्ज अदा करनेकी कोशिश करता हूं लेकिन मैं देशी भाइयोंकी बात करता हूं।

मजि०—तुम समझते हो कि देशी आदमियोंको युरोपियनोंके मुकद्दमे न करने चाहिये ।

डिप्टी—जरूर ही उन्हें न करना चाहिये । अगर वह ऐसा करें तो यह गौरवशाली अङ्गरेजी राज्य मिट्टीमें मिल जायगा ।

मजि०—बाबू, मैं तुम्हारी समझदारीकी बात सुनकर बड़ा खुश हुआ । चाहता हूं, सब देशी आदमी ऐसे ही हों । कम-से-कम देशी मजिस्ट्रेट तो तुमसे हों ।

डिप्टी—हुजूर, भला ऐसा कब हो सकता है, जब कि हमारे आला अफसर कुछ और ही सोचते हैं ।

मजि०—क्या तुम आला अफसरोंके नजदीक नहीं पहुंचे ? तुम तो बहुत रोजसे काम करते हो न ?

डिप्टी—बदनसीबीसे मेरी बराबर हकतलफी की गयी । मैं तो हुजूरसे इस बारेमें अर्ज करनेवाला था ।

मजि०—तुम तरक्कीके जरूर काबिल हो । मैं कमिश्नरको तुम्हारे लिये लिखूंगा । देखो, क्या होता है । इतना सुन डिप्टी बाबू लम्बा सलामकर चल दिये और जंट साहब आ पहुंचे । डिप्टीको बाहर जाते जंटने देखा था । जंटने मजिस्ट्रेटसे पूछा—"इससे तुम क्या कह रहे थे ।"

मजि०—ओह ! यह बड़ा मजेदार आदमी है ।

जंट—कैसे ?

मजि०—यह बेवकूफ और कमीना दोनों है । यह अपने देशी भाइयोंकी शिकायतकर मुझे खुश करना चाहता था ।

जंट—क्या मनकी बात उससे कह दी ?

मजि०—नहीं, मैंने तो तरक्कीका वादा किया है। इसके लिये कोशिश करूंगा ? कम-से-कम वह घमण्डी नहीं है। घमण्डी देशी आदमी मातहतीमें रखना बिलकुल फालतू है। मैं घमण्डियोंसे उन्हें पसन्द करता हूं जो अपनी लियाकतमें चूर नहीं रहते हैं।

इधर वापस आनेपर डिप्टी बाबूकी एक दूसरे डिप्टीसे भेंट हुई। उसने जलधरसे पूछा—"साहबके पास गये या नहीं ?"

जल०—हां, बड़ी मुश्किलमें पड़ गये।

डिप्टी—क्यों ?

जल०—उस बागदी सुसरेको कैद करनेके कारण साहब कहते थे मैं रिपोर्ट कर दूंगा।

डिप्टी—फिर ?

जल०—फिर क्या तरक्कीका तार जमा आया।

डिप्टी—यह कैसे ? किस जादूसे ?

जल०—और कैसे ? ठकुरसुहाती करके।
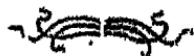
भाषा-साहित्यका आदर

नाटकके पात्र।

१—उच्च शिक्षा प्राप्त बाबू

२—इनकी स्त्री

बाबू—क्या करती हो?

स्त्री—पढ़ती हूं।

बाबू—क्या पढ़ती हो?

स्त्री—जो पढ़ना जानती हूं। मैं तुम्हारी अङ्गरेजी नहीं जानती और न फारसी ही जानती हूं, भाग्यमें जो है वही पढ़ती हूं।

बाबू—यह वाहियात, खुराफात, खाक पत्थर भाषा क्यों पढ़ती हो? इससे तो न पढ़ना ही अच्छा है।

स्त्री—क्यों?

बाबू—यह Immoral, obseene, filthy है।

स्त्री – इसका क्या मतलब हुआ?

बाबू -Immoral किसे कहते हैं, जानती हो अरे वही-वही जो morality के खिलाफ हो।

स्त्री—यह क्या किसी चौपायेका नाम है?

बाबू—नहीं नहीं, अरे इसे भाषामें क्या कहते हैं? अरे वही वही जो moral नहीं है और क्या?

स्त्री—मराल क्या हंस ?

बाबू—Nonsense ! O woman ! thy name is stupidity.

स्त्री—क्या अर्थ हुआ ?

बाबू—भाषामें तो इतनी बातें समझायी नहीं जा सकतीं। मतलब तो यह है कि भाषा पढ़ना अच्छा नहीं।

स्त्री—पर यह पुस्तक इतनी बुरी नहीं है—कहानी अच्छी है।

बाबू—राजा और दो रानियोंकी कहानी होगी, या नल-दमयन्तीकी होगी।

स्त्री—इनके सिवा क्या और कहानी नहीं है ?

बाबू—फिर तुम्हारी भाषामें और क्या हो सकता है ?

स्त्री—इसमें वह नहीं है, इसमें शराब है, कबाब है, विधवा-व्याह है और जोगिनके गीत हैं।

बाबू—Exactly इसीसे तो कहता हूं कि यह सब क्यों पढ़ती हो ?

स्त्री—पढ़नेसे क्या होता है ?

बाबू—पढ़नेसे Demoralize होता है।

स्त्री—यह फिर क्या कहा—कोस राजा होता है ?

बाबू—कैसी मुश्किल है, demoralize यानी चाल-चलन बिगड़ता है।

स्त्री—प्यारे, आप तो बोतलपर बोतल उड़ाते हैं। जिनके साथ बैठकर आप खाते-पीते हैं, उनका चाल-चलन ऐसा है कि,

उनके मुंह देखनेसे भी पाप होता है। आपके भाईबन्ध डिनरके बाद जिस भाषाका प्रयोग करते हैं, उसे सुनकर खानसामे भी कानोंमें उंगलियां डालते हैं। आप जिनके यहां जाकर शराब-कबाबकी लज्जत चखते हैं, उनसे संसारका एक भी कुकर्म नहीं बचा है, चुपके-चुपके सब करते हैं। उनसे आपका चाल-चलन खराब होनेका डर नहीं है, मेरे भाषा-पुस्तक पढ़नेसे आपको बड़ा डर लगता है कि मैं कहीं बिगड़ न जाऊं?

बाबू—हम ठहरे Brass Pot और तुम ठहरीं Earthen Pot.

स्त्री—इतना पट-पट क्यों करते हो? क्या तप्त घीमें पानीकी बूंदे पड़ गयीं? खैर, इसे पकड़कर देखो तो सही।

बाबू (पीछे हटकर) क्या मैं उसे छूकर hand contamintae करूं?

स्त्री—क्या मतलब हुआ?

बाबू—मैं उसे छूकर हाथ मैला नहीं करता।

स्त्री—हाथ मैला नहीं होगा, झाड़-पोछकर देती हूं। (आंचलसे पुस्तक झाड़-पोंछकर पतिके हाथमें देती है, मानसिक मलीनताके भयसे पुस्तक बाबूके हाथसे गिर जाती है।)

स्त्री—फूटे करम! तुम जितनी घृणा इस पुस्तकसे करते हो, उतनी तो तुम्हारे अङ्गरेज भी नहीं करते। सुना है, अङ्गरेज अच्छा कर रहे हैं।

बाबू—पागल तो नहीं हो गयी?

स्त्री—क्यों ?

बाबू—भाषा किताबका तर्जुमा अङ्गरेजीमें होगा ? यह चण्डू-खानेकी गप्प तुमने कहां सुनी ? कहीं यह Seditious किताब तो नहीं है ? ऐसा हो तो Government का तर्जुमा कराना मुमकिन है यह कौन किताब है ?

स्त्री—विषवृक्ष।

बाबू—मतलब क्या हुआ ?

स्त्री - विष किसे कहते हैं, नहीं जानते ? उसीका वृक्ष।

बाबू—बीस या एक कोड़ी।

स्त्री—वह नहीं, एक चीज और है जो तुम्हारे मारे मैं खाऊंगी।

बाबू—ओ हो Poison ! Dear me ! उसीका दरख्त, नाम ठीक है, फेंको फेंको।

स्त्री—अच्छा पेड़की अङ्गरेजी क्या है ?

बाबू—Tree

स्त्री—अब दोनों शब्दोंको इकट्ठा करो तो।

बाबू—Poison Tree ! अहा Poison Tree इस नामकी एक पुस्तकका हाल अखबारोंमें पढ़ा था सही। तो क्या यह भाषाका तर्जुमा था ?

स्त्री—तुम्हें क्या मालूम होता है ?

बाबू—मेरा idea था कि यह अङ्गरेजी किताब है। इसीका भाषा-तर्जुमा हुआ है। जब अङ्गरेजी है ही तब भाषा क्यों पढ़ती हो ?

स्त्री—अङ्गरेजी ढङ्गसे पढ़ना ही अच्छा है—चाहे बोतल हो चाहे किताब, अच्छा तो वही लो। यह पोथी लो, यह अङ्गरेजीका उल्था है। लेखकने स्वयं कहा है—

बाबू—यह पढ़ना तो भी अच्छा है! किस पुस्तकका उल्था है Robinson Crusoe या watt on the Improvement of the mind?

स्त्री—अङ्गरेजी नाम तो मैं नहीं जानती, भाषाका नाम "छायामयी" है।

बाबू—छायामयी? इसके माने क्या हुआ? देखूं, (पुस्तक-हाथमें लेकर) Dante, by jove.

स्त्री—(मुस्कुराकर) यह मेरी समझमें नहीं आता, मैं गंवार यह सब क्या समझूं, तुम क्या समझा दोगे?

बाबू—इसमें ताज्जुबकी कौन सी बात है? Dante lived in the fourteenth century यानी वह fourteenth century में flourish हुआ था।

स्त्री—फूटना सुन्दरीकी पालिश करता था? तब तो बड़ा कवि था!

बाबू—बड़ी मुश्किल है! अरे fourteenth माने चौदह है चौदह।

स्त्री—चौदह सुन्दरियोंकी पालिश करता था? चौदह या सोलह; पर सुन्दरियोंकी पालिश क्यों करता था?

बाबू—यह नहीं मैं कहता हूं। १४वीं सेनचुरीमें वह मौजूद था।

स्त्री—वह चौदह सुन्दरियोंमें न सही चौदह सौमें रहा हो। मैं तो पुस्तकका तात्पर्य जानना चाहता हूं।

बाबू—Author की Life तो जान लो। वह Florence शहरमें पैदा हुआ था। वहां बड़े-बड़े Appointments held करते थे।

स्त्री—पोर्टमेण्टोमें हलदी करते थे तो ठीक ही है, पर आज-कल तो नहीं होता है।

बाबू—अरी वह बड़ी-बड़ी नौकरियां करते थे। पीछे Guelph और Ghibilline के झगड़े—

स्त्री—बस अब कृपा करो, समझाना हो तो समझाओ, नहीं तो जाने दो।

बाबू—वही तो समझा रहा हूं, Author की Life जाने बिना उसका लिखा कैसे समझोगी ?

स्त्री—मुझे इन बातोंसे क्या प्रयोजन ? समझाना हो तो पुस्तकका मतलब समझा दो।

बाबू—लाओ देखें, इसमें क्या लिखा है।

[पुस्तक लेकर पहली पंक्तिका पाठ]

"सन्ध्यागगने निविड़ कालिमा।"

"तुम्हारे पास कोष है क्या ?"

स्त्री—क्यों किस शब्दका अर्थ चाहिये ?

बाबू—गगन किसे कहते हैं ?

स्त्री—गगन नाम आकाशका है !

बाबू—सन्ध्यागगने निविड़ कालिमा? निविड़ किसे कहते हैं?

स्त्री—राम राम! इसी विद्यासे तुम मुझे पढ़ाओगे? निविड़ कहते हैं घनेको, इतना भी नहीं जानते, लाज नहीं आती।

बाबू—लाज क्यों आवे, भाषा वाला गंवार पढ़ते हैं, हम-लोग नहीं पढ़ते। पढ़नेसे हमारी बेइज़्ज़ती है।

स्त्री—क्यों, तुम लोग कौन हो?

बाबू—हमलोगोंकी Polished society है। गंवार भाषा लिखते और गंवार ही पढ़ते हैं। साहब लोगोंके यहां इसकी कदर नहीं है। Polished society में भाषा नहीं चलती है।

स्त्री—मातृभाषापर पालिश षष्ठीकी इतनी कड़ी नजर क्यों है?

बाबू—अरे मा तो न जाने कब मर-खप गयी। उसकी जबा-नसे अब क्या लेना देना है?

स्त्री—मेरी भी तो वही भाषा है, मैं तो नहीं मर-खप गयी।

बाबू—Yes for the sake, my jewel, I shall do it तुम्हारी खातिरसे एक भाषा-किताब पढ़ूंगा। पर mind एक ही पढ़ूंगा।

स्त्री—एक ही क्या कम है?

बाबू—लेकिन घरके भीतर द्वार बन्द करके पढ़ूंगा, जिसमें कोई न देख सके।

स्त्री—अच्छा वैसे ही सही।

(चुनकर एक बुरी अश्लील और कुरुचिपूर्ण परन्तु सरस पुस्तक स्वामीके हाथमें देती है। स्वामी आद्योपान्त पढ़ता है।)

स्त्री—कैसी पुस्तक है?

बाबू—अच्छी है। भाषामें भी ऐसी पुस्तकें हैं, यह मैं नहीं जानता था!

स्त्री—(घृणा सहित) राम राम! बस मालूम हुआ तुम्हारी पालिश पट्टीका हाल। इसी समझपर यह अभिमान। मैं तो समझती थी कि अङ्गरेजी पढ़-लिखकर कुछ अक्ल आती होगी, लेकिन देखती हूं तुम लोग रही-सही अक्लसे भी हाथ धो बैठते हो, घरके धान पुआलमें मिला देते हो। चलो आराम करो।

नववर्षारम्भ

नाटकके पात्र

राम बाबू

श्याम बाबू।

राम बाबूकी स्त्री।

(देहातिन)

(राम और श्यामका प्रवेश)

(रामकी स्त्री आड़में खड़ी है)

श्याम—गुडमौर्निङ्ग राम बाबू हा डू डू ?

राम—गुडमौर्निङ्ग श्याम बाबू हा डू डू ?

(दोनों हाथ मिलाते हैं।)

श्याम—I wish you a happy new year and many many returns of the same,

राम—The same to you,

(श्याम बाबूका प्रस्थान और राम बाबूका घरमें प्रवेश)

राम बाबूकी स्त्री—वह कौन आया था ?

राम—वह श्याम बाबू थे !

स्त्री—उनसे हाथापाई क्यों होती थी ?

राम—क्या कहा, हाथापाई कहां हुई ?

स्त्री—उसने तुम्हारे हाथको झकझोर डाला और तुमने उसके हाथोंको। चोट तो नहीं लगी?

राम—इसीको हाथापाई कहती थी? क्या अक्ल है। इसे shaking hands कहते हैं। यह आदरका चिह्न है।

स्त्री—ऐसा! अच्छा हुआ जो मैं तुम्हारी आदरकी स्त्री नहीं। खैर, चोट तो नहीं लगी?

राम—जरा सा नाखून लग गया है, पर उसका कुछ ख्याल नहीं करता।

स्त्री—हाय हाय, यह तो छिल गया है। डाढ़ीजार सवेरे-सवेरे हाथापाई करने आया था। और ऊपरसे हां डू डू डू करके खेलने आया था। डाढ़ीजारके साथ अब न खेल पाओगे?

राम—क्या कहा? खेलकी बात कब हुई?

स्त्री—जब उसने कहा था कि हां डू डू डू और तुमने भी वही कहा था। अब यह सब करनेकी उमर तुम्हारी नहीं है।

राम—गंवार स्त्रीके फेरमें पड़कर हैरान हो गया। हां डू डू डू नहीं हा डू डू यानी How do ye do! इसका उच्चारण हा डू डू होता है।

स्त्री—इसके माने?

राम—इसके माने "तुम कैसे हो?"

स्त्री—यह कैसे होगा? उसने पूछा तुम कैसे हो? तुमने इसका उत्तर न देकर वही सवाल कर डाला।

राम—यही आजकलकी सभ्यताकी रीति है।

स्त्री—बातको दुहराना ही क्या सभ्योंका रीति है ? तुम अगर मेरे लड़केसे कहो कि क्यों नहीं लिखता पढ़ता है रे गधे ? तो क्या वह भी इस बातको दुहरावेगा ? क्या यही सभ्योंकी चाल है ?

राम—अरी, ऐसा नहीं है। कैसे हो, पूछनेपर उत्तर न देकर उलटकर पूछता है कि कैसे हो, यही सभ्योंकी चाल है।

स्त्री—(हाथ जोड़कर) मैं एक भीख मांगती हूं। तुम्हारी तबीयत दोनों बेला खराब रहती है। मुझे दिनमें पांच बेर हाल पूछनेको तुम्हारे पास आना पड़ता है। जब मैं आऊं तो हा डू डू कह मुझे भगाया मत करो। मेरे सामने सभ्य न हुए न सही।

राम—नहीं नहीं, ऐसा न होगा। पर यह सब तुम्हें जान रखना अच्छा है।

स्त्री—बतानेसे ही जान लूंगी। बता दो, श्याम बाबू क्या गिटपिट करके चले गये ? अगर हा डू डू खेलने न आये थे तो क्यों आये थे ?

राम—आज नये वर्षका पहला दिन है इसीसे नये वर्षका आशीर्वाद देने आया था।

स्त्री—आज नये वर्षका पहला दिन है ! मेरे ससुर सास तो चैत सुदी १ को नया वर्ष मानते थे !

राम—आज पहली जनवरी है। हमलोग आज ही नया वर्ष मानते हैं।

स्त्री—ससुर तो चैत सुदी १ को मानते थे और तुम १ ली जनवरीसे मानते हो, अब लड़के मुहर्रमसे मानेंगे।

राम—ऐसा क्यों होगा? अब अङ्गरेजोंका राज है। उनके नये वर्षसे हमारा भी नया वर्ष है।

स्त्री—यह तो अच्छा ही है। पर नये वर्षमें शराबकी इतनी बोतलें क्यों आयी हैं?

राम—खुशीका दिन है, दोस्तोंके साथ खाना-पीना होगा।

स्त्री—बहुत ठीक। मैं देहातकी रहनेवाली, मैंने समझा था कि वर्षारम्भमें जैसे हम जमघट (घड़ा) दान करती हैं, वैसे ही तुम लोग वर्षारम्भमें ये शराबकी बोतलें दान करोगे। तुम्हें मना करना चाहती थी कि भगवानके लिये मेरे सास-ससुरके नामपर यह सब दान न करना।

राम—तुम बड़ी बेसमझ हो!

स्त्री—इसमें तो शक ही क्या है। इसीसे और कुछ पूछते डर लगता है।

राम—और भी कुछ पूछोगी?

स्त्री—ये इतने गोभी, सलगम, गाजर, अनार, अंगूर, पिस्ता, बदाम वग़ैरह क्यों लाये हो? क्या खानेमें इतने खर्च हो जायँगे!

राम—नहीं, यह सब साहबोंकी डाली सजानेके लिये है।

स्त्री - राम राम, ऐसा काम न करना। लोग बड़ी बदनामी करेंगे।

राम—भला क्या कहेंगे?

स्त्री—कहेंगे कि वर्षारम्भमें ये लोग जलका घट दान करनेके साथ-साथ चौदह पुरखोंका पिण्डदान भी करते हैं।

(इति पिटनेके भयसे घरवालोंका भागना। राम बाबूका वकीलके घर जाना और पूछना कि हिन्दू Divorce कर सकता है कि नहीं।)

दाम्पत्य-दण्डविधान

अबला सरला समझकर आजकल हम स्त्रियोंपर घोर अत्याचार हो रहा है, मर्दोंका मिजाज बहुत बढ़ गया है, अब मर्द स्त्रियोंको मानते नहीं हैं, स्त्रियोंके पुराने सब हक मारे जा रहे हैं, अब औरतोंके हुक्मका कोई पाबन्द नहीं है। इन सब विषयोंको ठीक-ठीक नियमसे चलानेके लिये हम लोगोंने 'स्त्रीस्वत्वरक्षिणी सभा' स्थापित की है। उस सभाका विशेष समाचार पीछे प्रगट किया जायगा। इस समय कहना यह है कि हमलोगोंके स्वत्वोंकी रक्षाके लिये सभासे एक सदुपाय स्थिर हुआ है। इसके लिये हमलोगोंने भारत-सरकारको दरख्वास्त भेजी है और उसीके साथ पतिशासनके लिये एक दाम्पत्य-दण्डविधानका मसविदा भी भेजा है।

जहां सबकी स्वत्वरक्षाके लिये रोज नये कानून गढ़े जा रहे हैं वहां हमलोगोंके सनातन स्वत्वोंकी रक्षाके लिये कोई कानून क्यों नहीं बनाया जाता? आशा है कि यह कानून जल्दी पास हो जायगा, इसी इच्छासे स्वामी-समुदायको सूचित करनेके लिये मैं इसे 'बङ्गदर्शन'में भेज रही हूं। बहुतसे बाबूलोग मातृभाषामें कानूनको भलीभांति नहीं समझ सकते, खासकर कानूनका भाषानुवाद अकसर अच्छा नहीं होता। यह कानून

अंगरेजीमें ही पहले तैयार हुआ था और इसका भाषानुवाद अच्छा नहीं हुआ, जगह-जगह अंगरेजीमें और इसमें अन्तर है, इसीलिये मैं अंगरेजी और भाषा दोनों भेजती हूं। आशा करती हूं कि 'बंगदर्शन'के सम्पादक महोदय हमारे अनुरोधसे एक बार अंगरेजीका विरोध छोड़कर अंगरेजी समेत इस कानूनका प्रचार करेंगे। देखनेसे सबको मालूम हो जायगा कि इस कानूनमें कोई नयापन नहीं है, पहलेका Les Non Scripta केवल लिपिबद्ध हुआ है।

श्रीमती अनन्त सुन्दरी देवी

मन्त्री, स्त्री स्वत्वरक्षिणी सभा।

The Matrimonial Penal Code

CHAPTER I.

Introduction.

WHEREAS it is expedient to provide a special Penal Code for the coercion of refractory husbands and others who dispute the supreme authority of Woman, it is hereby enacted as follows :—

दाम्पत्य-दण्डविधान

पहला अध्याय।

प्रस्तावना

स्त्रियोंके उद्दण्ड स्वामियोंका शासन करनेके लिये एक विशेष प्रकारके कानूनकी आवश्यकता है इसलिये निम्नलिखित कानून बनाया जाता है:—

1. That this Act shall be entitled the "Matrimonial Penal Code" and shall take effect on all natives of India in the married state.

CHAPTER II.

Definitions.

2. A husband is a piece of moving and moveable property at the absolute disposal of a woman.

Illustrations.

(a) A trunk or a work box is not a hasband, as it is not moving, though a move-able piece of property.

(b) Cattle are not hus-bands, for though capable of locomotion they cannot be at the absolnte disposal of any woman, as they often display a will of their own.

दफा १—इस कानूनका नाम दाम्पत्य-दण्डविधान होगा। भारतवर्षमें जितने देशी विवाहित पुरुष हैं, उन सबपर इसका पूरा असर होगा।

दूसरा अध्याय

साधारण व्याख्या।

दफा २—जो जंगम सजीव सम्पत्ति स्त्रियोंके सम्पूर्ण अधिकारमें है, उसका नाम पति है।

उदाहरण।

(क) सन्दूक, पेटी आदिको पति नहीं कहना चाहिये, क्योंकि यद्यपि ये सब जंगम अर्थात् अस्थावर सम्पत्ति हैं। तथापि सजीव नहीं हैं।

(ख) गाय, भैंस, बछड़े पति नहीं हो सकते; क्योंकि यद्यपि ये सजीव पदार्थ हैं तथापि इनमें अपनी इच्छाके अनुसार कार्य करनेकी शक्ति नहीं है। इसलिये ये सब स्त्रियोंके सम्पूर्ण रूपसे अधीन नहीं हैं।

(c) Men in the married state having on will of their own are husbands.

(ग) विवाहित पुरुष ही स्वतन्त्रतापूर्वक कोई काम नहीं कर सकते। अतएव पशुओंको पति न कहकर इन लोगोंको ही पति कहना चाहिये।

3. A wife is a woman having the right of Property in husband.

दफा ३—जो स्त्री अपने पतिको सम्पत्ति बनानेका अधिकार रखती है, वही अपने पतिकी पत्नी अथवा स्त्री है।

Explanation.

The right of property includes the right of flagellation.

व्याख्या।

सम्पत्तिका अधिकारी अपनी सम्पत्तिको मारने-पीटनेका भी अधिकारी है।

4. "The married state" is a state of penance into which men voluntarily enter for sins committed in a previous life.

दफा ४—पुरुषोंके पूर्वजन्मकृत पापोंके प्रायश्चित्त विशेषको "विवाह" कहना चाहिये।

CHAPTER III.

Of punishment.

तीसरा अध्याय

बाबत सजा।

5. The Punishme ttson which offenders are liable under the provisions of this Code are :—

दफा ५—इस कानूनके अनुसार अपराधीको निम्नलिखित सजा मिलनी चाहिये।

1. That this Act shall be entitled the "Matrimonial Penal Code" and shall take effect on all natives of India in the married state.

दफा १—इस कानूनका नाम दाम्पत्य-दण्डविधान होगा। भारतवर्षमें जितने देशी विवाहित पुरुष हैं, उन सबपर इसका पूरा असर होगा।

CHAPTER II.

दूसरा अध्याय

Definitions.

साधारण व्याख्या।

2. A husband is a piece of moving and moveable property at the absolute disposal of a woman.

दफा २—जो जंगम सजीव सम्पत्ति स्त्रियोंके सम्पूर्ण अधिकारमें है, उसका नाम पति है।

Illustrations.

उदाहरण।

(a) A trunk or a work box is not a hasband, as it is not moving, though a moveable piece of property.

(क) सन्दूक, पेटी आदिको पति नहीं कहना चाहिये, क्योंकि यद्यपि ये सब जंगम अर्थात् अस्थावर सम्पत्ति है। तथापि सजीव नहीं हैं।

(b) Cattle are not husbands, for though capable of locomotion they cannot be at the absolute disposal of any woman, as they often display a will of their own.

(ख) गाय, भैंस, बछड़े पति नहीं हो सकते; क्योंकि यद्यपि ये सजीव पदार्थ हैं तथापि इनमें अपनी इच्छाके अनुसार कार्य करनेकी शक्ति नहीं है। इसलिये ये सब स्त्रियोंके सम्पूर्ण रूपसे अधीन नहीं हैं।

(c) Men in the married state having on will of their own are husbands.

(ग) विवाहित पुरुष ही स्वतन्त्रतापूर्वक कोई काम नहीं कर सकते। अतएव पशुओंको पति न कहकर इन लोगोंको ही पति कहना चाहिये।

3. A wife is a woman having the right of Property in husband.

दफा ३—जो स्त्री अपने पतिको सम्पत्ति बनानेका अधिकार रखती है, वही अपने पतिकी पत्नी अथवा स्त्री है।

Explanation.

The right of property includes the right of flagellation.

व्याख्या।

सम्पत्तिका अधिकारी अपनी सम्पत्तिको मारने-पीटनेका भी अधिकारी है।

4. "The married state" is a state of penance into which men voluntarily enter for sins committed in a previous life.

दफा ४—पुरुषोंके पूर्वजन्मकृत पापोंके प्रायश्चित्त विशेषको "विवाह" कहना चाहिये।

CHAPTER III.

Of punishment.

तीसरा अध्याय

बाबत सजा।

5. The Punishme ttson which offenders are liable under the provisions of this Code are :—

दफा ५—इस कानूनके अनुसार अपराधीको निम्नलिखित सजा मिलनी चाहिये।

Firstly—*Imprisonment* which may be either within the four walls of a bed room or within the four walls of a house.

१—शयनागार या किसी अन्य मकानकी चहार दीवारीके बीच कैद।

Imprisonments are of two descriptions, namely:—

कैद दो प्रकारकी होगीः—

(1) Rigorous that is, accompanied by hard works.

(१) कठिन तिरस्कारयुक्त।

(2) Simple.

(२) तिरस्कार रहित।

Secondly—Transportation, that is to another bed-room.

२—काला पानी, अर्थात् दूसरी शय्यापर भेजना, अथवा शयन-गृहके बाहर कर देना।

Thirdly—Matrimonial servitude

३—पत्नीका दासत्व।

Fourthly—Forfeiture of pocket-money.

४ जुर्माना अर्थात् पाकिट खर्चके लिये रुपया न देना।

6. "Capital punishment" under this Code means that *the wife shall run away to* her paternal roof, or to some other friendly house, with the intention of not returning in a hurry

दफा ६—इस कानूनमें फांसीका यह अर्थ समझा जायगा कि स्त्री अपने पिताके घर अथवा किसी सखीके घर चली जायगी और शीघ्र लौटने की इच्छा न करेगी।

7. The following punishments are also provided for minor offences :—

Firstly—Contemptuous silence on the part of the wife.

Secondly—Frowns.

Thirdly—Tears and lamentations.

Fourthly—Scolding and abuse.

CHAPTER IV.

General Exceptions.

8. Nothing is an offence which is done by a wife.

9. Nothing is an offence which is done by husband in obedience to the commands of a wife.

10. No person in married state shall be entitled to plead any other circumstances as grounds of exemp-

दफा ७—छोटे-छोटे अपराधियोंके लिये निम्नलिखित दण्ड होने चाहियेः—

१,—मान।

२,—भृकुटी-भंग।

३,—चुपचाप आंसू बहाना, अथवा उच्च स्वरसे रोदन।

४,—गाली बकना अथवा तिरस्कार करना।

चौथा अध्याय।

साधारण अपवाद।

दफा ८—स्त्रीका किया हुआ कोई काम अपराध नहीं गिना जायगा।

दफा ९—स्त्रीके आज्ञानुसार पतिका किया हुआ काम भी अपराध न गिना जायगा।

दफा १०—कोई विवाहित पुरुष यह उज्र नहीं पेश कर सकेगा कि वह दाम्पत्य-दण्ड-

tion from the provisions of the Matrimonial Penal Code.

विधान कानूनके अनुसार दण्ड नीय नहीं है।

CHAPTER V.

Of Abetment.

11. A person abets the doing of a matrimonial offence, who—

Firstly—Instigates, persuades, induces or encourages a husband to commit that offence.

Secondly—Joins him in the commission of that offence or keeps his company during its commission.

Explanation.

A man not in the married state or even a woman may be an abettor.

Illustrations.

(*a*) A, the husband of B. and C, an unmarried man,

पांचवां अध्याय।

अपराध करनेकी सहायताके विषयमें।

दफा ११—वह व्यक्ति दाम्पत्य अपराधोंकी सहायता करता है जो—

१,—पतिको अपराध करने में कान भरता, प्रवृत्ति दिलाता अथवा उत्साहित करता है।

२,—या उसके सङ्ग उस अपराध करनेके समयतक रहता है।

व्याख्या।

अविवाहित पुरुष अथवा स्त्री दाम्पत्य-अपराधकी सहायता कर सकती है।

उदाहरण।

(क) राम श्यामाका पति है। यदुनाथ अविवाहित पुरुष

drink together. Drinking is a Matrimonial offence. C has abetted A.

है। दोनोंने एक साथ बैठकर मद्यपान किया है। मद्यपान करना दाम्पत्य-अपराध है। अतएव यदुनाथने रामकी सहायता की।

(*b*) A, the mother of B, the husband of C, persuades B to spend money in other ways than those which C approves. As spending money in such ways is a Matrimonial offence, A has abetted B.

(ख) सुशीला रामकी माता है। राम श्यामाका पति है। श्यामा जिस प्रकार रुपया खर्च करनेके लिये कहती है, वैसे न करके रामने सुशीलाके परामर्शसे रुपया खर्च किया। स्त्रीके मतके विरुद्ध खर्च करना दाम्पत्य अपराध है। अतएव सुशीलाने उस अपराधीकी सहायता की।

12. When a man in the married state, abets another man in the married state, in a Matrimonial offence, the abettor is liable to the same punishment as the principal provided that he can be so punished only by a Competent Court.

दफा १२—यदि कोई विवाहित पुरुष किसी विवाहित पुरुषको दाम्पत्य-अपराधमें सहायता करे, तो वह भी असल अपराधीके समान दण्डनीय होगा। उसका दण्ड उपयुक्त न्यायालयके बिना न होगा।

Explanation.

A Competent Court means the wife having right of property in the offending husband.

13. Abettors who are females or male offenders not in the married state are liable to be punished only with scolding, abuse, frowns, tears and lamentations.

CHAPTER VI.

Of offence against the State.

14. "The state" shall, in this Code, mean the married state only.

15. Whoever wages war against his wife or attempts to wage such war, or abets the waging of such war, shall be punished capitally, that is, by separation or by transporation to another bed room and shall forfeit all his pocket money.

व्याख्या।

यहांपर उपयुक्त न्यायालयसे मतलब उस स्त्रीसे है जिसके पतिने अपराध किया।

दफा १३ - स्त्री अथवा अविवाहित पुरुष दाम्पत्य-अपराधकी सहायता करनेसे केवल तिरस्कार, भृकुटीभङ्ग, नीरव अश्रुपात अथवा रोदन द्वारा ही दण्डनीय होंगे।

छठां अध्याय।

राजविद्रोहके विषयमें।

दफा १४—इस कानूनमें 'राज' शब्दका अर्थ विवाहित दशा है।

दफा १५—जो कोई अपनी स्त्रीके साथ विवाद करे, अथवा विवाद करनेका उद्योग करे, अथवा विवाद करनेमें किसीको सहायता करे, उसको प्राणदण्ड दिया जायगा, अर्थात् उसकी स्त्री उसे त्याग देगी, अथवा शयनागारसे पृथक् कर देगी और पाकेट खर्च बन्द कर देगी।

16. Whoever induces friends or gains children to side with him, or otherwise prepares to wage war with the intention of waging war against the wife, shall be punished by transporation to another bed-room and shall also be liable to be punished with scolding and with tears and lamentations.

दफा १६—जो कोई व्यक्ति अपने मित्रोंको सहायक बनाकर अथवा सन्तानको वशीभूत करके अथवा और किसी प्रकारसे स्त्रीके साथ विवाद करनेके अभिप्रायसे विवाद करेगा, उसको देश निकालेकी सजा दी जायगी अर्थात् दूसरे शय्यागृहमें भेजा जायगा और वह अश्रुपात तिरस्कार तथा रोदनके द्वारा दण्डनीय होगा।

17. Whoever shall render allegiance to any woman other than his wife, shall be guilty of incontinence.

दफा १७—जो व्यक्ति अपनी स्त्रीको छोड़ अन्य स्त्रीपर आसक्त होगा, वह "लाम्पट्य" नामक अपराधका अपराधी होगा।

Explanation.

(1) To show the slightest kindness to a young woman, who is not the wife, is to render such young woman allegiance.

१ व्याख्या।

स्त्रीको छोड़ किसी अन्य युवतीपर किसी प्रकारकी दया अथवा अनुकूलता दिखानेसे ही 'लाम्पट्य-दोष सिद्ध समझा जायगा।

Illustration.

A is the husband of B and C is a young woman. A likes C's bady because he is a nice child and gives him buns to eat. A has rendered allegiance to C.

Explanation

(2) Wives shall be entitled to imagine offences under this section, and no husband shall be entitled to be acquitted ont he ground that he has not committed the offence.

The simple accusation shall always be held to be conclusive proof of the offence.

Explanation.

(3) The right of imagining offence under this section shall be held to belong, in general to old wives, and

उदाहरण।

राम श्यामाका पति है। मोहिनी एक दूसरी युवती है। मोहिनीका छोटा बच्चा देखनेमें बड़ा सुन्दर है। इसलिये राम उसको प्यार करता है और कभी-कभी उसे मिठाई भी खिलाता है। अतएव राम मोहिनीपर आसक्त है।

२ व्याख्या।

इस अपराधमें बिना कारण पतिको अपराधी ठहरानेका स्त्रियोंको अधिकार होगा। मैंने अपराध नहीं किया है, यह कहकर कोई पति छुटकारा न पा सकेगा।

अपराध लगाने हीसे अपराध प्रमाणित समझ लिया जायगा।

३ व्याख्या।

बिना कारण पतिको इस अपराधका अपराधी होनेकी विवेचना करनेका अधिकार विशेष रूपसे प्राचीन स्त्रियोंको

to women with old and ugly husbands; and a young wife shall not be entitled to assume the right unless she can prove that she has a particularly cross temper or was brought up a spoilt child or is herself supremely ugly.

ही होगा, अथवा जिन लोगोंके पति कुरूप अथवा बूढ़े हैं, उन्हीं स्त्रियोंको होगा। यदि कोई युवती इस अधिकारको लेना चाहे तो उसे पहले यह प्रमाणित करना होगा कि वह बदमिजाज है अथवा बापके घरकी लाड़ली है या स्वयं अत्यन्त कुरूप है।

18. Whoever is guilty of incontinence shall be liable to all the punishments mentioned in this Code and to other punishments not mentioned in the Code.

दफा १८—जो पुरुष लम्पट होगा, वह इस कानूनमें लिखे हुए सब प्रकारके दण्डों द्वारा दण्डित होगा। उनके सिवा और दण्ड भी, जो इस कानूनमें नहीं लिखे हैं, उसको दिये जायेंगे।

CHAPTER VII.

Of Offence relating to the Army and Navy.

सातवां अध्याय

पल्टन और नौकर-सम्बन्धी अपराध।

19. The Army and Navy shall, in this Code, mean the sons and daughters and the daughters-in-law.

दफा १९—इस कानूनमें पल्टन और नौ-सेनाका अर्थ लड़के, कन्या और पुत्रवधू समझा जायगा।

20. Whoever abets the committing of mutiny by a

दफा २०—गृहिणीके साथ विद्रोह करनेमें जो पति, पुत्र,

son or a daughter-in law shall be liable to punished by scolding and tears and lamentations.

कन्या अथवा पुत्रवधूकी सहायता करेगा, वह तिरस्कार और रोदनके द्वारा दण्डनीय होगा।

CHAPTER VIII.

Of Offences against the domestic Tranquillity.

आठवां अध्याय

घरमें शान्ति-भंग करनेका अपराध।

21. An assembly of two or more husbands is designated an unlawful assembly if the common object of such husband is ;—

दफा २१—दो अथवा इससे अधिक विवाहित पुरुषोंका जमाव यदि निम्नलिखित किसी अभिप्रायके निमित्त हो तो वह बेकानूनी जमाव कहा जायगा।

Firstly—To drink as definded below or to commit any other matrimonial offence;

१,—मद्यपान करना अथवा किसी अन्य प्रकारका दाम्पत्य-अपराध करना।

Secondly—To over-awe, by show of authority, their wives from the exercise of the lawful authority of such wives.

२, अधिकारके बलपर डराकर कानूनके अनुसार प्रभुत्व प्रकाशित करनेसे निवृत्त करनेके लिये स्त्रियोंको धमकी देना।

Thirdly—To resist the execution of a wife's order.

३,—किसी स्त्रीके आज्ञानुसार काम होनेमें विघ्न डालना।

22. Whoever is a member of an unlawful assembly shall be punished by imprisonments with hard words, and shall also be liable to contemptuous silence or to scolding.

दफा २२—जो पुरुष बेकानूनी जमावमें शामिल होगा, वह कठिन तिरस्कारयुक्त कैद, अथवा मान या तिरस्कारके द्वारा दण्डित होगा।

Of drinking wines and spirits.

मद्यपानके विषयमें

23 Any liquid kept in a bottle and taken in a glass vessel is wine and spirits.

दफा २३—जो जलवत् तरल वस्तु बोतलमें रहती है और कांचके ग्लासमें डाली जाती है, उसे;मद्य कहते हैं।

24. Whoever has in his possession wine and spirits as above defined, is said to drink.

दफा २४—उपरोक्त लिखित मद्य जो घरमें रखे [illegible] पायी है!

Explanation.

व्याख्या।

He is said to drink even though he never touches the liquid himself.

यदि वह उस अपने हाथसे छुए भी नहीं तो भी मद्यपायी कहा जायगा।

25. Whoever is guilty of drinking shall be punished with imprisonment of either description within the four-

दफा २५ - जो मद्यपायी है, वह रोज सन्ध्या होते ही शय्यागृहकी चहारदीवारीके अन्दर

walls of bed-room during the evening hours and shall also be liable to scolding.

कैद किया जायगा और तिरस्कार-वाक्य सुना करेगा।

Of rioting.

दङ्गा करनेकी बाबत।

26. Whoever shall speak in an ungentle voice to his wife shall be guilty of domestic rioting.

दफा २६—स्त्रीके साथ कर्कश स्वरसे बात करनेका ही नाम दङ्गा करना है।

27. Whoever is guilty of domestic rioting shall be punished by scolding or by tears and lamentations.

दफा २७—जो कोई अपने घरमें दंगा करेगा, उसको रोने-तिरस्कार और अश्रुपातके दंडसे दण्डनीय होना पड़ेगा।

४७—स्वास्थ्य-साधन

लेखक—अध्यापक श्रीरामदास गौड़ एम० ए०

इस ग्रंथमें रोगकी मीमांसा, रोगीके लक्षण, मिथ्योपचार-विमर्श और प्राकृतोपचार-दिग्दर्शन इत्यादि विषयकी व्याख्या बड़ी ही विद्वत्तासे की गयी है।

यह ग्रन्थ प्रत्येक गृहस्थको अपने घरमें रखना चाहिये। प्राकृतिक चिकित्साके सम्बन्धमें राष्ट्रीय भाषा हिन्दीमें यह ग्रन्थ बिलकुल नया और बहुत ही विचारपूर्ण लिखा गया है। पौने पांच सौ पृष्ठकी कई चित्रोंसे विभूषित पुस्तकका मूल्य ३) सजिल्द ३॥)

४८—वाणिज्य या व्यवसाय-प्रवेशिका

लेखक—श्रीशिवसहाय चतुर्वेदी

प्रस्तुत पुस्तकमें व्यवसाय आरम्भ करनेके प्रारम्भिक ज्ञानकी प्रायः सभी बातें बड़ी सरल भाषामें बतायी गयी हैं। व्यवसाय करनेवाले प्रत्येक मनुष्यको इस पुस्तकका अवश्य अध्ययन करना चाहिये। प्रायः पौने दो सौ पृष्ठोंकी पुस्तकका दाम ॥=)

४९—उर्दू कविता कलाप

उर्दूके शेरोंमें जो लालित्य और मनोहरता है प्रायः सभी पढ़े-लिखोंके दिलोंको खींच लेती है और आनन्दके हिलोरे हृदय-में तरङ्ग मारने लगते हैं। हम अपने उन हिन्दी-पाठकोंके मनो-रञ्जनार्थ जो फारसी लिपिसे अनभिज्ञ हैं, किन्तु उर्दू-कवियोंकी कविताका रसास्वादन करना चाहते हैं यह उर्दूके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शायरोंके पद्योंका चुना हुआ संग्रह भेंट करते हैं। मूल्य ॥=)